Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उर्मिला

कुँवर [illegible]सिंह "[illegible]"

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उर्मिला

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घर बैठे रुपया कमाने की कुंजी

हुनर-संग्रह

हिन्दी में अपने ढंग की यह अकेली और निराली पुस्तक है। इस पुस्तक के जरिए आसानी से घर बैठे सैकड़ों रुपया आप कमा सकते हैं। यह अकेली पुस्तक आपको साबुन, तेल, इत्र, सेंट, स्याही और हर तरह के क्रीम, पाउडर आदि सुविधा के साथ और थोड़े समय में बनाना सिखा सकती है। घर की सब जरूरी चीजें भी इसके सहारे बनाकर घर का पैसा भी बचाया जा सकता है। एक बार इस पुस्तक को लेकर अवश्य पढ़िए। छपाई सफाई बढ़िया।

मूल्य केवल ॥।)

सब प्रकार की पुस्तकों के मिलने का पता—

अग्रवाल-टेडिंग कम्पनी

बनारस सिटी

Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उर्मिला

रहस्यपूर्ण

जासूसी उपन्यास

लेखक—

कुँवर गोवर्द्धनसिंह महनोत

कृष्णगढ़ स्टेट

(एक बंगला पुस्तक के आधार पर)

प्रकाशक

अग्रवाल ट्रेडिंग कंपनी

बनारस सिटी

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रकाशक—
अग्रवाल ट्रेडिंग कंपनी
मल्दही ब्रह्मपुरी
काशी

प्रथम संस्करण
मूल्य १॥)

मुद्रक—
विजयबहादुरसिंह, बी० ए०
महाशक्ति-प्रेस,
बुलानाला, बनारस सिटी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रेमोपहार

श्री ....

....

....

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रकाशकीय-वक्तव्य

अग्रवाल ट्रेडिंग कंपनी का दूसरा पुष्प हम बड़ी प्रसन्नता के साथ हिन्दी प्रेमियों के सन्मुख लेकर उपस्थित हुए हैं। "उर्मिला" है तो एक जासूसी उपन्यास, परन्तु जासूसी चमत्कारों के साथ ही साथ पाठकों को इसमें कई आवश्यक सामाजिक पहलुओं का भी विवेचन मिलेगा। अधिकांश जासूसी उपन्यासों में अश्लीलता का दोष रहता है। परन्तु प्रस्तुत पुस्तक के लेखक ने बड़ी योग्यता से इसे इस दोष से बचाया है। अस्तु; इसे माताएँ और बहने भी निसंकोच रूपसे पढ़ सकती हैं।

इस पुस्तक के लेखक कुँवर गोवर्द्धनसिंहजी महनोत एक होनहार नवयुवक हैं। पुस्तक पढ़ कर पाठक भी जान सकेंगे कि इनका भविष्य कितना उज्ज्वल है। इस नवयुवक लेखक से हमें बहुत कुछ आशा है।

"उर्मिला" को अपनाकर यदि हिन्दी प्रेमियों ने हमारे उत्साह को बढ़ाया तो हम शीघ्रही अनेक उपयोगी तथा मनोरंजक पुस्तकें पाठकों को भेंट कर सकेंगे।

बनारस
होली १९८९

निवेदक
प्रकाशक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उर्मिला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उर्मिला

प्रथम परिच्छेद

एक सुन्दर सुहावनी चौदह वर्ष की लड़की दौड़ती हाँफती हुई रायबहादुर के बैठक के द्वार पर आकर बोली—'वह नहीं है।' इन दोनों शब्दों में बड़े गूढ़ रहस्य भरे हुए थे। उस बैठक में दो भलेमानुस बैठे कुछ सलाह कर रहे थे। उन्हीं लोगों को उद्देश्य कर उसने आतुरता से कहा।

उन दोनों मनुष्यों में एक की ढलती जवानी थी। पर वह हाथ पैर से हृष्टपुष्ट, दोहरा बदन, गोरा रङ्ग, जाति के ब्राह्मण थे। उनकी गम्भीर आकृति को देखने ही से हृदय में उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति हो आती थी।

दूसरे की चढ़ती जवानी, शरीर गोलमठोल, उज्ज्वल वर्ण, नखसिख सुडौल था, जिसके देखने ही से अनुमान होता था कि उसका जन्म किसी उच्च कुल में हुआ है।

जो उम्र में बड़े थे, वह राजापुर के जमींदार और उस घर के मालिक थे; नाम विपिनबिहारी चौधरी था; रायबहादुर की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पद्वी से भूषित थे। जो उम्र में छोटे थे, उनका नाम उमेश मुखोपाध्याय था। वे रायबहादुर के दूर के रिश्तेदार थे।

रायबहादुर की इकलौती कन्या कामिनी का कल गोधूली के लग्न में उमेश मुखोपाध्याय के साथ व्याह होने वाला है।

इस व्याह में किसी प्रकार की धूमधाम न थी और न कहीं न्योता पाहुनी थी। केवल दोनों ओर के कुल पुरोहित बैठ कर पाणिग्रहण करवा देंगे। रायबहादुर के इकलौती कन्या का विवाह क्यों इस प्रकार चुपचाप होगा, यह पाठकों को पीछे से विदित होगा।

तेल हल्दी चढ़ने में अब घड़ी-आध-घड़ी की देर है। ससुर-दामाद बैठे कुल-पुरोहित की बाट जोह रहे हैं कि उनके आते ही शुभ लग्न में तेल चढ़े। उधर अन्दर महल में सुहागिनी सुन्दरियाँ शृङ्गार किये गा-बजा रही हैं। बाहर-भीतर दास-दासियाँ अपने-अपने काम में दौड़ धूप रही हैं। ऐसे अवसर पर दुलहिन की प्यारी सहेली उर्मिला ने आकर कहा—'वह नहीं है।'

कौन नहीं है ? इस प्रश्न का उत्तर प्रश्नकर्त्ताओं के हृदय में स्वतः ही उत्पन्न हो गया। प्रत्युत्तर की कोई आवश्यकता न थी। वे दोनों चौंक के घबड़ाकर बोले—'नहीं है ?'

'नहीं है'—यह वाक्य मानो उन लोगों के हृदय को बेधता हुआ निकला। शोक और दुःख से बालिका उर्मिला के सुन्दर बदन पर झाईं-सी छा गई थी। डबडबाते नेत्र और रुँधे कण्ठ से बड़े

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कष्ट से उसने कहा—'अभी मैं दीदी का घर ढूँढ़े चली आ रही हूँ, पर वह वहाँ नहीं है।'

बिपिन बाबू ने आग्रह से पूछा—'तूने भली प्रकार ढूँढ़ा ?'

बालिका ने कहा—'अब किसे खोजूँ ?'

बिपिन बाबू ने गम्भीर स्वर से कहा—'न जाने क्या तू बच्चों की सी बातें कर रही है ? अरी ! वह अन्दर के बागीचे में चली गई होगी। उसने अपने हाथों वह जो कई एक गुलाब के पेड़ लगाये हैं उन्हीं में जल सींच रही होगी। अच्छा, चल देखूँ।' ऐसा कहते हुए ज्योंही वह झपट कर अन्दर चले कि उर्मिला ने उनका हाथ पकड़ लिया। उसके हाथ का स्पर्श होते ही बिपिन बाबू चौंक कर उसके मुँह की ओर निहारने लगे; क्योंकि ज्योंही उसके हाथ का स्पर्श हुआ, उन्हें विदित हुआ कि उस बालिका का अङ्ग पाला-सा ठण्डा हो रहा है और मुँह पर हवाई-सी छूट रही है। तब घबड़ा कर उन्होंने पूछा—'तू ठीक-ठीक क्यों नहीं कहती क्या हुआ ?' बहुत पूछने और पुचकारने पर ज्यों-त्यों टूटे-फूटे कण्ठस्वर से उसने कहा—'हाय ! मैं क्या कहूँ, अभी तो भली-चंगी मैं उसे बैठी छोड़कर बाहर आई थी और थोड़ी देर में लौट कर ज्योंही देहली के अन्दर पाँव बढ़ाया ही चाहती थी कि हायदैया ! सारी कोठरी रक्त से तरबतर हो रही है, जो साड़ी कामिनी पहिने हुई थी, वह फटी हुई पड़ी है। हाय ! न जाने किस हत्यारे ने प्यारी कामिनी........' इतना सुनते

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ही बिपिन बाबू घबड़ा कर भीतर चले ही थे कि पुनः उर्मिला व्याकुलता के स्वर से बोली—'मामा! यों अन्दर न जाओ पुलिस में इत्तला करो, पड़ोसियों को बुलाओ; न जाने कहीं कोई हत्यारा अन्दर बैठा हो? हाय! वहाँ रक्त की नदी बह रही है, उधर देखते हृदय काँपता है।' ऐसी कहती हुई वह उसी स्थान पर मूर्छित हो गिर पड़ी। बिपिन बाबू ने उसे बैठक में लिटा उमेश बाबू से कहा—'बेटा, तुम यहाँ ठहरो, तनिक हम देखें तो है क्या? इतना कह उन्होंने चिल्लाकर नौकरों को बुलाया। शब्द के सुनते ही मात्र चारों ओर से नौकर-चाकर, सिपाही-दर्वानों की भीड़ इकट्ठा हुई। बाबू के गृह में महाकोलाहल मच गया। बिपिन बाबू उर्मिला की सेवा के लिए एक दासी को उसके निकट रख नौकरों को साथ ले अन्दर चले। उस समय उमेश बाबू ने भी चाहा कि बिपिन बाबू के साथ जायँ परन्तु कुछ सोच कर बिपिन बाबू ने कहा—'उमेश! तुम यहाँ ही बैठक में ठहरो, अन्दर जाने की कोई आवश्गकता नहीं है। क्या कहें, इस समय तो मुझ पर न जाने ईश्वर की कैसी मर्जी है, हम तुम्हें किस मुँह से घर में ले जायँ। यह सुन उमेश तो पीछे लौट आये और बिपिन बाबू झपटते हुये आँगन में पहुँचे और सीढ़ियों पर चढ़ ऊपर गये और छज्जों पर से घूम कर कामिनी की कोठरी के द्वार पर पहुंचे। इस का द्वार पश्चिम दिशा को था और द्वार के सामने ही अन्दर एक खिड़की थी जिसमें से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उद्यान की शोभा दिखाई देती थी। कामिनी के सुसज्जित शयन-गृह का द्वार खुला हुआ था। उस द्वार पर ठहर कर बिपिन बाबू किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो बालक-जैसे खड़े रहे; अन्त में एक ठंडी साँस ले, अरी बेटी! हाय बेटी! कह रोते हुये उस गृह के अन्दर गये।

अस्ताचलगामी सूर्य की सुनहली किरणें उस खुले हुए द्वार से अन्दर प्रविष्ट हुईं थीं, जिसकी चमक से बिपिन बाबू के नेत्रों के आगे एक भयानक दृश्य दीख पड़ा। उन्होंने देखा—उस गृह के अन्दर मानो रक्त की नदी बह रही है; वह रेशमी धोती जो कामिनी पहिने हुई थी फटी हुई रक्त में सराबोर पड़ी है। चारों ओर दीवारों में रक्त के छींटे पड़े हैं। इस भयानक दृश्य को देख बेचारे पिता का हृदय विदीर्ण होने लगा।

द्वितीय परिच्छेद

यों तो बिपिन बाबू स्वाभाविक दृढ़प्रतिज्ञ और बड़े ही स्थिर-चित्त मनुष्य थे। परन्तु इस दारुण दुःख को देखते ही एकाएक उनके नेत्रों के आगे अन्धकार-सा छा गया; परन्तु शीघ्रही उन्होंने अपनी बुद्धि को सँभाला और उस समय क्या करना चाहिये, यही विचारने लगे। उन हत्याकारियों को उनके नृशंस कार्य का यथोचित दण्ड देने के लिए वह दृढ़प्रतिज्ञ हुये।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनुष्य का हृदय भी एक अलौकिक पदार्थ है! इसके कार्यकलाप भी अद्भुत ही होते हैं। मनुष्य का हृदय उसकी बुद्धि से अगोचर है। मनुष्य घटना का दास है। घटना के स्रोत में बहते-बहते मनुष्य के हृदय में जब जिस प्रवृत्ति की तरङ्ग उठती है, तब उसी के अनुसार कार्य करने में प्रवृत्ति हो जाती है। क्षण-भर पहिले जो हृदय शोक एवं दुःख से दब रहा था, कुछ क्षण के उपरान्त वही हृदय प्रतिशोध-प्रवृत्ति के द्वारा उत्तेजित हो उठा।

बिपिन बाबू के हृदय से शोक का आवेग कुछ घटा; तब वह पुलिस के सुदक्ष कर्म्मचारियों के साथ कामिनी के शयनगृह के चारों ओर भली प्रकार निहार-निहार कर देखने लगे। उस घर में जो-जो चीजें धरी थीं, उन्हें एक-एक को उठा-उठा कर देखा; परन्तु जिसे जहाँ से उठाया, उसे देख-भाल कर फिर ज्यों का त्यों वहाँ ही रख दिया। झरोखे के खुले हुए पल्लों को उन्होंने भिड़का दिया और द्वार को बन्दकर ताला लगा बाहर निकल आये।

बैठक में आतेही उमेश बाबू ने घबड़ा कर पूछा—'कहिये क्या है?' इसका कोई उत्तर न मिला। फिर उन्होंने प्रश्न दोहराया। पर कुछ उत्तर नहीं; मानो वह सुनतेही नहीं थे। तब पास जाकर फिर उन्होंने पूछा—'कहिये महाशय भीतर का क्या समाचार है?' इसके उत्तर में झिझककर उन्होंने कहा —'इस समय मैं कुछ नहीं कह सकता। अभी पुलिस में इसकी रिपोर्ट करता हूँ। जिन दुर्भागों ने मेरी कन्या की हत्या की है उनका निस्तार कदापि नहीं है। वे निश्चय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रखें कि अवश्य वे अपने किये का फल पावेंगे। अब तो मेरी यह दृढ़ प्रतिज्ञा है कि जब तक उन दुष्टों को पूरा दण्ड न दिला लूँ तब तक मेरे चित्त में शान्ति न होगी और न तब तक मैं किसी दूसरे काम में हाथ डालूँगा।'

बहुत दिनों तक बिपिन बाबू नवाब साहब की फौज में रह चुके थे, इसलिए विपदकाल में क्योंकर कार्य्य करना चाहिये, वह भली प्रकार जानते थे। कामिनी के विषय में उमेश बाबू ने बार-बार बिपिन बाबू से अनेक प्रकार से पूछा; परन्तु उन्होंने मुँह फेर लिया और कुछ भी उत्तर न दिया। बहुत देर के उपरान्त रुखाई से आपने उमेश बाबू से कहा—'अच्छा इस समय तो अब तुम घर जाओ।'

इस उपद्रव को सुनतेही कुल-पुरोहित भी आ गये थे। और दास-दासियों से पूरा हाल भी सुन चुके थे।

उमेश बाबू ने पुरोहित जी से कहा—'इस भयानक घटना से इस समय बिपिन बाबू ऐसे घबरा गये हैं कि उन्हें कुछ सुध-बुध नहीं है। ईश्वर करे, शीघ्र उनकी बुद्धि ठिकाने हो और वह इस कार्य्य के यथा कर्तव्य को भली प्रकार करें।'

इस भयानक समय में बिपिन बाबू ने बेपरवाही के साथ जो वाक्य कहे थे, जवानी के उभार के कारण वे बातें उमेश के हृदय में चुभ गई थी और इस से उनका हृदय ऐसा कुछ दुखा था कि वह उन्हें भूल न सके। उस समय बिना कुछ कहे सुने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वह वहाँ से चलते हुये। उस समय उनके हृदय में कैसे भावों का उदय हुआ था, और उन बातों की कैसी चोट लगी थी आदि पाठक इस अख्यायिका को जितनाही पढ़ते जाँयगे उतनाही समझते जाँयगे।

पास के थाने की चौकी में उन्होंने खबर दी और बर्दवान के डकैती कमिश्नर साहब की सेवा में भी खबर भेजी। कमिश्नर साहब को उन्होंने लिखा—

माननीय श्रीयुत कमिश्नर साहब !

आप के अधिकार में जितने जासूस हों उन सबों में जो अधिक बुद्धिमान, चालाक और कार्य्यदक्ष हो, मेरे निकट शीघ्र भेज दें। गत रात्रि को न जाने किसने मेरी कन्या की हत्या की है। जो कोई उस हत्या का पता लगा अपराधी को गिरफ़ार करवा देगा, उसको अच्छा परितोषिक मिलेगा।

राजापुर हवेली }
ता:—१२— }

आपका
श्रीबिपिनबिहारी चौधरी

इस चिट्ठी को लेकर एक सवार बर्दवान दौड़ा। दूसरा राजापुर के प्रधान वकील के बुलाने को चिट्ठी लेकर गया। इधर कई एक विश्वासी अमलों को साथ लेकर वह स्वयं हत्यारे को खोजने के लिए निकले। गोंड़ैत, चौकीदार, दरवान प्रभृति चारों ओर ढूँढ़ने निकले। बन, उपबन, बगीचे और आस-पास के गृहस्थों के घरों में ढूँढ़-ढाँढ़ हुई। परन्तु खूनी या मृतदेह का कहीं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भी कुछ पता न लगा। आधीरात के उपरान्त, जो लोग खूनी के तलाश में गये थे, लौट आये और बिपिन बाबू भी स्वयं उदास अपने घर चले आये।

आधीरात बीत चुकी है। कोठी में सन्नाटा छा रहा है। बिपिन बाबू अकेले अपने बैठक में घोर चिंता में डूब रहे थे। ज्यों-ज्यों रात बीतती जाती थी, त्यों-त्यों बिपिन बाबू गहरी चिंता में डूबते जाते थे। दुःख के साथही-साथ ज्यों-ज्यों अन्धकार घना होता जाता था, त्यों-त्यों गूढ़ रहस्य की कठिनता भी बढ़ती जाती थी। बिपिन बाबू का हृदय भी धीरे-धीरे संशयरूपी सघन अन्धकार से घिरा जाता था।

हवेली के आसपास के गांवों के घर-घर में इस भयानक घटना की बहुत कुछ चर्चा होने लगी। यह घटना मानो डाल-डाल और पत्तों-पत्तों में से होती हुई हवा के सन्नाटे में मिल सब ठौर फैल गई। आज दिन रात जहाँ देखिये-सुनिये सिवा इस हत्या के और कोई चर्चा ही न थी।

अकस्मात जब कोई अनहोनी बात कहीं हो जाती है और लोग उसी की चर्चा किया करते हैं; उसी प्रकार कामिनी की हत्या की चर्चा में नीच-ऊँच छोटे-बड़े सबही अपनी-अपनी मनमानी धुन रहे थे और जिनके जो जी में जँचता था वही गा रहे थे।

राजापुर के थाने के दारोगा और वकील साहब भी जमीदार के मकान पर आये। बिपिन बाबू उन्हें कामिनी वाली कोठड़ी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में ले गये। उन लोगों ने सब कुछ देखा सुना; पर कुछ भी स्थिर न कर सके। सिवा इनके उस दिन कोई भी उस घर में न जाने पाया था। संभव था, कोई चला जाय इसलिए दिन-रात उसमें ताला लगा रखा था।

धीरे-धीरे दुःख की रात बीती। पूर्व दिशा में उगते हुए सूर्य की सुनहरी लकीरें झिलमिलाने लगीं। काल का प्रवाह बेखटक स्रोत से प्रवाहित हो रहा था। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन आता ही है। जिसके साथही साथ मनुष्य के जीवन के दिन घटते चले जाते हैं, परन्तु अज्ञान जन नेत्रों के रहते भी अंधे हो रहे हैं। न देख के देखते हैं और न समझ के समझते हैं। एक दिनरात देखते-देखते बीत गई; पर उस घटना का कुछ भी पता न लगा।

दूसरे दिन राजापुर के रहनेवालों ने मिलकर बहुत कुछ उपाय किया; परन्तु कुछ न हुआ। पिछले दिन-सा आज का भी दिन योंही बीता; पर किसी पर कुछ भेद न खुला।

बिपिन बाबू प्रति मुहूर्त वर्दवान से जासूस के आने की बाट जोह रहे थे। शोकातुर पिता अब पुलिस गोइन्दे की दक्षता और चतुराई पर निर्भर कर, उसकी बाट जोहते हुये नाना प्रकार की कल्पना कर रहे थे। मौका पाकर कल्पना ने भी उनके हृदय में दृढ़ आसन जमाया था और पल-पल में अनेक प्रकार की आशाएँ बँधाकर उन्हें नये चित्र दिखा रही थी। उस समय कमिश्नर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साहब के पास ऐसे-ऐसे सुचतुर जासूस थे जो पाँवों के अस्पष्ट चिन्ह देखकर, सिर के एक बाल को पाकर अथवा ऐसेही सामान्य बातों से अपराधियों का सच्चा और पक्का पता लगा लेते थे।

उस दिन दो तीन बेर उमेश बाबू ने बिपिन बाबू से मिलने का उद्योग किया। यहाँ तक कि स्वयं उनके मकान पर आये; पर वह उनसे न मिले।

जब से यह घटना हुई तब से विपिन बाबू के चरित्र में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन हो गया था। उसे यहाँ कहना अच्छा होगा।

बिपिन बाबू की छोटी वहिन एक कुलीन ब्राह्मण को ब्याही थी। बेचारी सदा भाई के ही घर रहती थी। उसको एक कन्या हुई; जिसका नाम उर्मिला था। जब उर्मिला पाँच वर्ष की हुई तब उसकी माँ का देहान्त हो गया था; परन्तु विपिन बाबू ने उसे अपनी कन्या-जैसा लाड़-चाव से पाला था और अब तक वैसा ही उस पर स्नेह करते आये थे; परन्तु जब से यह घटना हुई उसी क्षण से उर्मिला ने कई बार चाहा कि मामा से मिलें; परन्तु उन्होंने तिरस्कार कर अस्वीकार कर दिया।

उर्मिला लड़की तो थी, परन्तु विपिन बाबू का उस पर ऐसा प्रेम था कि घर गृहस्थी की मालिकिन उन्होंने उसी को बना रक्खा था और प्रायः सब ही काम-काज वही किया करती थी। बिपिन बाबू की सेवा-टहल भी भली-भाँति करती थी; परन्तु इस कठोर हत्या के उपरांत यदि कोई विपिन बाबू के सामने उर्मिला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का नाम ले लेता तो साथ ही उनकी भौंहें चढ़ जातीं और चेहरे पर घृणा और दुःख की झलक-सी आ जाती थी।

विपिन बाबू का उर्मिला की ओर से जो ऐसा चित्त फिर गया था, यह सब लोग समझ गये थे। पर उन लोगों ने यह निश्चय कर लिया था कि उर्मिला को देखने से विपिन बाबू को अपनी प्यारी लड़की की सुध आ जाती है जिससे उनके हृदय की दबी हुई अग्नि भभक उठती है; क्योंकि पहिले उर्मिला ही ने जाकर उन्हें यह दुःखद वृत्तांत कहा था, इसीसे वह उससे भेंट नहीं करते हैं।

दिन भी ढल गया। रात आई; परन्तु अब तक बर्दवान से जासूस न आया। उसके आने में विलम्ब देख विपिन बाबू ने लगातार तीन सवारों को कमिश्नर साहब के पास भेजा।

रात दोपहर बीत चुकी है। निशानाथ चन्द्रदेव मानो जमींदार बाबू के दुःख से ऐसे दुःखित हो रहे थे कि उनके दुःख से दुःखी हो बादलों की ओट में आ बैठे हों। आकाश में सघन घन छा रहे हैं, बिजली चमक रही है, प्रचण्ड वेग से वायु बह रहा है। बादल गर्ज रहा है। विपिन बाबू अकेले एक घर में घोर चिन्ता में बैठे थे। उन्हें न भूख थी न नींद।

उस घर की एक खिड़की खुली हुई थी जिस से बार-बार बिजली की चमक आ रही थी। बड़े सनसनाहट से आँधी चलने लगी। भीषण घरघराहट से बादल गर्जने लगा। बड़ी-बड़ी बूँदों से मेह बरसने लगा। विपिन बाबू गद्दी पर से उठे और खिड़की के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निकट जाकर देखने लगे। बाहर बड़ी अँधेरी छा रही थी। कमर से घड़ी निकालकर देखा तो रात के बारह बजकर सोलह मिनिट हुए थे। इसी समय सहसा एक अद्भुत घटना हुई।

तृतीय परिच्छेद

बिपिन बाबू उस झरोखे के आगे बैठे प्रकृति की अठखेलियाँ देख रहे थे। छिन-छिन में कल्पना अपने दृश्यों के पर्दे बदल रही थी। आधीरात का सन्नाटा छाया हुआ था। झमाझम बृष्टि हो रही थी। वायु की सनसनाहट चारों ओर गूँज रही थी। इसी बीच में मनुष्य के कण्ठस्वर की भनक कान में पड़ी। भनक पड़ते ही वह चौंक उठे। सुनाई दिया—'आपने मुझे बुलाया था इससे मैं हाजिर हूँ।'

इस शब्द के सुनते ही बिपिन बाबू ने ज्योंही खिड़की की ओर मुँह फेरा तो देखते हैं कि एक आश्चर्यजनक मनुष्य उनके सामने खड़ा है। उसका काला रङ्ग, बड़ी २ उभड़ी हुई काली-काली आँखें, काले बाल, काली मूँछ व दाढ़ी, हृष्ट-पुष्ट लम्बा कद, सामान्य पोशाक, पाँवों में नगौरा जूता पहिने वह निश्चल खड़ा है। ऐसे समय में इस आकृति के मनुष्य को देख कौन है जो चकित न हो उठे और विशेष कर एक ऐसे भयानक समय में जिसके एक दिन पहले उसी घर में हत्या हो चुकी थी क्यों न जी दहल उठे!

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आगन्तुक को देखते ही बिपिन बाबू ने चट तकिये के नीचे से भरा हुआ तमञ्चा उठा दाहिने हाथ में ले लिया और तमक कर बोले—'तुम कौन हो ? इतनी रात बीते यहाँ क्यों आये हो ?'

आये हुए मनुष्य ने स्पष्ट वाक्यों से उत्तर दिया—'आपने मुझे बुलाया था, इसलिए मैं आया हूँ।'

'तो मकान के अन्दर क्योंकर आये ?'

'दरवाजे के रास्ते।'

'क्यों क्या काम है ? चटपट कहो, नहीं तो मैं मारता हूँ गोली। यह ठट्ठे-तमाशे की जगह नहीं है, और न हँसी का समय है।'

बिपिन बाबू ने इन बातों को बड़े तपाक के साथ कहा। आये हुए मनुष्य ने मुस्कुरा कर साफे में से एक पत्र निकाल बिपिन बाबू के आगे रख दिया। चौकन्ने होकर बड़ी फुर्ती से बिपिन बाबू ने पत्र हाथ में उठाकर पूछा—'यह कैसी चिट्ठी ?'

आये हुये ने कहा—'पढ़िये, मालूम हो जायगा।'

बिपिन बाबू बड़े चतुर थे। वह जानते थे कि जब सामने आकर कोई किसी पर वार करता है तो वार करने के पहिले उसे किसी प्रकार से दुचित्त कर देता है। इसलिए बिपिन बाबू दाहिने हाथ में तमञ्चा थामे ही रहे और बाँयें हाथ से चिट्ठी लेकर पढ़ने लगे। चिट्ठी की दोही एक लकीर के पढ़ने पर उनके चेहरे का भाव पलट गया। मुँह पर प्रसन्नता झलकने लगी और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साथही बड़े मधुर भाषण से आपने उसे बैठने की आज्ञा दी। चिट्ठी को सब पढ़ गये और चिट्ठी में लिखी हुई बातों को उसे सुनाने के बहाने से उच्चस्वर से पढ़ने लगे। उस पत्र में लिखा था—

मान्यवर चौधरी साहब !

आपके लिखने के अनुसार मैं इस मनुष्यरूपी ताजी कुत्ते को आपके पास भेजता हूँ। यह मनुष्य कार्यदक्ष, चतुर, मेहनती और साहसी है। आप इस पर पूरा विश्वास करेंगे। कोई बात इससे छिपाइएगा नहीं। इसके कामों के लिए मैं जिम्मेवार हूँ। हिन्दुस्तान भर में इसकी समता में बहुदर्शी योग्य विचक्षण पुलिस कर्मचारी दूसरा नहीं है। आजतक पुलिस के जितने कार्य इसे सौंपे गये, सबही में यह कृतकार्य होता आया है।

बर्दवान } अनुगृहीत
ता:—सन् १८— } कमिश्नर।

कमिश्नर साहब को बिपिन बाबू के पास चिट्ठी लिखने की सदा आवश्यकता पड़ा करती थी। क्योंकि कभी हाथी चाहिये, कभी मुर्गी चाहिये, कभी गोभी-सलगम चाहिये; योंही कभी कुछ कभी कुछ नित्यही माँगने का काम पड़ता था। क्योंकि उस जिले में वही धनी जमींदार थे। इसलिए सब फर्माइश का भार उन्हीं को उठाना पड़ता था। इसी से बिपिन बाबू कमिश्नर साहब के अक्षर भली प्रकार पहिचानते थे। आपने बड़ी नर्मी के साथ आये हुये से पूछा—'तुम्हारा नाम ?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

'राबर्ट रघुनाथ। मैं हिन्दू हूँ; जाति का ब्राह्मण, बहुत दिनों तक मैं अंग्रेजी पल्टन में रहा हूँ। इसीसे साहब लोग मसखरेपन से मुझे राबर्ट पुकारा करते थे; पर जब से इस महकमे में आया हूँ, तब से लोग मुझे राबर्ट रघुनाथ पुकारते हैं।'

शायद बिपिन बाबू उसे धर्मभ्रष्ट या दोगला समझें, इसलिए पहिले ही से उसने सब बातें स्पष्ट कर दी थीं।

बिपिन बाबू ने पूछा—'राजापुर में कब पहुँचे ?'

'ठीक सन्ध्या के समय।'

'अब तक कहाँ रहे ?'

'काम में लगा था।'

'यहाँ तुम्हारा कौन-सा काम था ?'

'काम का हिसाब समझाने नहीं आया हूँ, पर आप का काम करने आया हूँ।'

'इस घटना में तुम्हारी क्या राय है।'

'मेरी भला इसमें राय क्या ?'

'मेरे पूछने का तात्पर्य यह है कि इस हत्या के बारे में तुमने कुछ सोचा-विचारा या नहीं, क्या अनुमान करते हो ?'

'अभी मैं कुछ नहीं कह सकता, कहिये, अब मैं इसकी जाँच का भार ले सकता हूँ ?'

'हाँ, हाँ इसीलिए मैंने चिट्ठी लिखकर तुम्हें बुलवाया है।'

'तो अब आप पूरा-पूरा हाल ब्योरेवार कह चलिये।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हत्या के विषय में बिपिन बाबू ब्योरेवार कहने लगे। उनके कथन से और उस पर रघुनाथ के गूढ़ प्रश्नों से अनेक अप्रकट रहस्य निकलने लगे।

बिपिन बाबू ने कहा—'उमेश मेरे दूर का रिश्तेदार है। उसके दादा के भाई मेरी सास के मामा के लड़के लगते थे। मरती समय वह अपनी स्थावर और जंगम सम्पत्ति को मेरी कन्या और उमेश बाबू को लिख गये थे। और उस 'विल' में कई एक विलक्षण शर्तें हैं।'

'वे शर्तें क्या हैं?'

'यदि उमेश मेरी कन्या को ब्याहें तो उस सम्पत्ति का आधा-आधा भाग दोनों को मिले, और दोनों में से जो व्याह करने में असम्मत हो तो उसके अंश से तीन भाग जो व्याह करने में राजी रहे, उसको मिले।'

'भला, व्याह के पहले यदि दो में से किसी की मृत्यु हो तो वह सम्पत्ति किसे मिलेगी, विल में ऐसा कुछ लिखा है?'

'जो जीता रहेगा, वही दोनों हिस्सों का स्वामी होगा।'

'अब आपकी लड़की के मर जाने से सब सम्पत्ति उमेश बाबू को मिलेगी; और जो कहीं उमेश बाबू पहिले ही मर जाते तो सम्पूर्ण सम्पत्ति की मालिक आपकी लड़की होती। ऐसा ही न?'

'हाँ।'

'आज उमेश बाबू के साथ आपकी कन्या का विवाह हो जाता?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

'हाँ।'

'ब्याह हो जाने पर दोनों को आधे-आध सम्पत्ति मिलती ?'

'हाँ।'

'भला, इस विवाह में उमेश बाबू का कैसा अभिप्राय था ? पहिले कभी उन्होंने आपकी लड़की को देखा था ? क्या वह उसे चाहते थे ?'

'यह तो मैं पहलेही कह चुका हूँ कि उमेश बाबू मेरा रिश्तेदार है। कामिनी को वह बचपन से देखता आया है। मुझे विश्वास है कि उमेश कामिनी को चाहता था। क्योंकि इस सम्बन्ध में उसकी अनिच्छा तो नहीं मालूम होती थी।'

यह सुन पांच मिनट तक रघुनाथ चुप रहा और न जाने क्या सोचता रहा। इसके उपरान्त फिर उसने पूछा—'आप क्या अनुमान करते हैं कि इस हत्या के मामले में उमेश भी लिप्त है ?'

'सम्पूर्ण सम्पति पाने की लालच से जो वह भी मिला हो तो क्या आश्चर्य है; सिवा इसके और भी एक विशेष कारण है।'

रघुनाथ ने पूछा—'वह कारण क्या है ?'

'इसी घर में मेरीही आश्रिता मेरी एक नातेदार की लड़की रहती है।'

'हैं ? हे परमेश्वर ! अच्छा उसके बारे में जो कुछ आपको कहना हो, सो कह चलिये।'

'वह लड़की बड़ीही सुन्दरी है, ऐसी सुन्दर है कि क्या कहें।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

'आपकी बातों से यह प्रतीत होता है कि वह लड़की भी इस मामले में है ?'

इस प्रश्न के उत्तर में बिपिन बाबू ने कहा—'सन्देह करने का कारण है। तीन सप्ताह बीता है एक विचित्र घटना हुई थी। एक दिन सन्ध्या के कुछ पहले मकान के पिछवाड़े जो एक छोटी-सी पुष्प-वाटिका है, उसमें मैं टहल रहा था। टहलते २ किसी के बोल-चाल का शब्द सुन पड़ा। जिधर से यह शब्द आता था, दबे पाँव धीरे-धीरे मैं उधरही चला। मुझे यह शङ्का हुई कि कदाचित् चोर न घुसे हों और घर में जाने के लिए अपने सुभीते की बाट देख रहे हों। धीरे-धीरे जब मैं कुछ आगे बढ़ा तो क्या देखता हूँ कि मालती के कुंज के नीचे मेरी कन्या एक साधुनी से बातचीत कर रही है। यह देख मुझे बड़ा अचम्भा हुआ।'

रघुनाथ ने पूछा—'क्या यह साधुनियों का अड्डा है।'

बिपिन बाबू ने कहा—'पहिले तो मैं नहीं जानता था, पर अब तो अनुमान होता है कि कदाचित् ऐसा ही हो !'

रघु०—'भला उन दोनों में जो बातचीत होती थी, आपने कुछ सुना समझा ?'

बिपिन—'हाँ, सुना तो मैंने सब; पर साधुनी की बातें कुछ पहेली-सी होती थीं। कुछ भली प्रकार समझ में नहीं आई। केवल, इतना समझ में आया कि वह मेरे कन्या के भाग्य में क्या-क्या लिखा है, कह रही थी। और यह कह रही थी कि उमेश एक और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किसी को चाहता है और उसका चित्त उसी से ब्याह करने का भी है। उस साधुनी ने यह भी कहा कि थोड़ेही दिन में तुम्हारे यहाँ एक दुर्घटना होगी।'

इन बातों को सुन रघुनाथ की आँखें लाल हो आईं। उसने फिर पूछा—'क्या उस साधुनी ने यह भी कहा था कि उमेश किस लड़की पर आसक्त है ?'

'हाँ, कहा था।'

'क्या नाम बताया ? वह कौन है ?'

'मेरी भाञ्जी है, मेरेही यहाँ रहती है और मेरेही टुकड़े तोड़ती है।'

'भला, साधुनी ने यह भी बताया कि इन दोनों के गुप्त-प्रेम की टोह उसे क्योंकर लगी ? अच्छा, उसकी जितनी बातें आपने सुनी हैं, एक-एक करके सब कह जाइए।'

चतुर्थ परिच्छेद

नीचे कही हुई बातों को रघुनाथ चित्त लगाकर सुनने लगा। विपिन बाबू ने कहा—'उस साधुनी ने उमेश को और उर्मिला को एकान्त में घूमते और प्रेम-सम्भाषण करते देखा-सुना था।' और यह भी उसने सुना, उमेश उर्मिला से कह रहे थे कि कामिनी उन लोगों के सुख में काँटा है। जो कहीं यह काँटा दूर हो तो उन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोगों के प्रेम का पथ निष्कण्टक हो जाय; उनका मनोरथ पूर्ण हो और फिर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न रह जाय।'

'हाँ, किस दिन किस समय बातचीत हुई थी?'

'साधुनी ने तो सब बताया था, परन्तु जिस दिन जिस समय उसने कहा, उस दिन उसी समय उमेश मेरे बैठक में बैठकर मुझसे बातें कर रहा था, इसलिए उसके कहने का मुझे विश्वास न हुआ। पर, न जाने इसीसे उस समय उस साधुनी की बातों पर मुझे कुछ खटका न हुआ और इसीलिए मैं सतर्क भी न हुआ। अब मैं सोचता हूँ कि साधुनी ने जो कुछ कहा था, वह सब सच था, केवल दिन और समय वह ठीक न बता सकी थी।'

'साधुनी ने जो कुछ कहा है, सब झूठ था; उसका छल था।' इन बातों को रघुनाथ ने पुलिस के स्वर से धीरे-धीरे किन्तु जोर देकर कहा।

इसके उत्तर में बिपिन बाबू ने कहा—'मुझे तो पूरा विश्वास है कि साधुनी ने जो कुछ कहा, सत्य कहा था।'

'मेरे मत से आपका मत चाहे न मिले, परन्तु मैं आपको पहले से चिताये देता हूँ कि निष्कारण आप उमेश बाबू पर सन्देह कर व्यर्थ उनका चित्त न दुखावें। वृथा निर्दोषी का जी दुखाने से अन्त में आपको उसके लिए पछताना पड़ेगा।'

'उमेश इस हत्या के मामले में सना हुआ है, मेरे इस सन्देह के और भी कारण हैं।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

'उँह ! तब आपने इस हत्या का निश्चय कर ही लिया है। फिर अब मेरी सहायता की क्या आवश्यकता है ?'

'तुम्हारी सहायता की मुझे बहुत कुछ आवश्यकता है।'

'कैसी सहायता ?'

'इस हत्या के मामले में उमेश प्रधान नायक है। इसे प्रमाणित कर देने के लिए तुम्हारे सहायता पूरी की आवश्यकता है।'

'यह तो न मेरे ही किये होगा और न आपही के किये होगा, क्योंकि मेरी समझ में उमेश पूरा निर्दोष है।'

'भला, यह तुम्हें क्योंकर निश्चय हो गया कि उमेश पूरा निर्दोष है ?'

'यह मैं अभी आपसे न कहूँगा कि क्योंकर उमेश निर्दोष है। पर हाँ, इतना तो अवश्य कहूँगा कि इसमें मुझे कुछ भी सन्देह नहीं है कि उमेश निर्दोष है।'

मुस्कुरा कर विपिन बाबू ने रघुनाथ को समझाकर कहा—'मेरा सन्देह ऐसा निर्मूल नहीं, मैं अपने सन्देह का पूरा और दृढ़ प्रमाण रखता हूँ।' उन्होंने यहभी कहा कि उमेश पर उनका अन्ध-विश्वाश था। वह उमेश का पूरा विश्वास मानते थे, जिसका अन्त फल यह हुआ कि उनकी प्यारी कन्या के प्राण गये।

रघुनाथ ने पूछा—'जो इच्छा हो तो कहिये कि वे कौन से प्रमाण हैं जिनसे आप अपने सन्देह को पूर्ण सत्य मान बैठे हैं।'

कुछ क्षण तक सोचकर विपिन बाबू ने कहा—'मेरे साथ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आओ; जिस घर में हत्या हुई है, वह घर ठीक उसी अवस्था में है। चलो, जरा एकबेर उसे भी देख लो।'

बिपिन बाबू जब रघुनाथ को साथ लेकर वह घर दिखाने गये, उस समय भी आँधी पानी जोर से था। जाकर बिपिन बाबू ने पहिले ताला खोला और फिर दोनों उस के अन्दर गये। घर के अन्दर जाते ही रघुनाथ की मूर्त्ति पलट गई; एक साथही उसकी चाल-ढाल, भाव-भङ्गी और की और ही हो गई। बैठक में बैठा हुआ रघुनाथ जिस समय बिपिन बाबू से बातें कर रहा था, उस समय उसकी चालाकी और फुर्ती कुछ जानी नहीं जाती थी। परन्तु ज्योंही उसने उस रक्त भरे घर के अन्दर पैर रक्खा, त्योंहीं वह ऐसा चैतन्य हो गया, जैसे रण-स्थल में सेनानायक शत्रु-दल को परास्त करने के हेतु अनेक प्रकार की क्रिया-कौशल करता है। उसी प्रकार से रघुनाथ ने भी अपना कौशल जाल फैलाया।

अन्दर महल में आती समय बिपिन बाबू हाथ में एक लालटेन लेते आये थे। रघुनाथ ने उस लालटेन को ऐसे अन्दाज से रक्खा कि जिससे उस घर के चारों ओर उँजेला पहुँचे। इसके उपरान्त घुटने के बल घर के चारों ओर यों घूमने लगा जैसे ताजी कुत्ता शिकार की खोज में घूमता हो। नीची गर्दन किये उसी तरह घूमते-घूमते वह एक झरोखे के पास पहुँचा। पहुँचकर उसने अपने कमर में से एक छोटी सी लालटेन निकाली जिसकी आभा ठीक सीध पर पड़ती थी। उसी लालटेन से चारों ओर देखता-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

झालता उस खिड़की पर उसने रोशनी डाली और भली प्रकार से ऊपर नीचे देख-भाल करने लगा। देखते-देखते झरोखे पर रक्त-पद-चिह्न उसे दिखाई पड़ा।

रघुनाथ ने उस पद-चिन्ह को निहार-निहार भली प्रकार देख-भाल कर कमर में से नापने का फीता निकाला और उस पद-चिन्ह को नापकर फिर पूर्ववत् घूमने लगा।

कुछ देर के उपरान्त घूमता-घूमता वह पलङ्ग के पास पहुँचा। पहुँचते ही उठ खड़ा हुआ और देखने लगा। पलङ्ग के ऊपर रक्त से डूबी हुई उसे एक छुरी दीख पड़ी। रघुनाथ ने बिपिन बाबू से पूछा—'पहिले जब आप यहाँ आये थे उस समय भी क्या यह छुरी यों ही इस स्थान में थी ?'

'हाँ, यों ही पड़ी थी। इस घर में जितनी चीज देख रहे हो, सब ज्यों की त्यों धरी हैं, इनमें से कोई भी चल-बिचल नहीं हुई है।'

बिछावन पर जिस भाव से जिस ढङ्ग से छुरी पड़ी थी उसे रघुनाथ निहार-निहार कर देखने लगा। जो चीज सामान्य ढंग से देखने में नहीं आती; सहज ही जिसमें बुद्धि का प्रवेश नहीं होता ऐसे विषयों को देखते ही न जाने क्यों कर वह उसमें से ऐसे मतलब निकाल लेता था कि जो कभी किसी को सूझती भी न थी।

रघुनाथ ने पहिले उस छुरी को उठाकर सीधी करके पकड़ लिया और फिर यह जाँचने लगा कि किस ढंग से इस छुरी में रक्त का दाग लगा। लालटेन के पास ले जाकर भली प्रकार से उसे देख-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भालकर न जाने क्या उसमें से खुरच कर बड़ी सावधानी पूर्वक अपने पेट में रख लिया। रघुनाथ ने पीछे फिर के देखा तो बिपिन बाबू टकटकी बाँधे मुस्कुराते हुए उसकी ओर निहार रहे थे मानो वह इस गूढ़ रहस्य को समझ गये हों।

रघुनाथ ने पूछा—'क्या आप पहचान सकते हैं यह किस की छुरी है।'

बि०—'हाँ, मैं पहचानता हूँ।'

र०—'किसकी है? उमेश बाबू की?'

बि०—'हाँ।'

र०—'आपके मुंह से यह सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि यह छुरी उमेश बाबू की है; क्योंकि इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि उमेश बाबू निर्दोष हैं।'

बि०—'क्या इससे यह प्रमाणित होता है कि उमेश निर्दोष है?'

र०—'हाँ।'

बि०—'कदापि नहीं, वरन यह छुरी साफ कहे देती है कि उमेश इस हत्या में सम्पूर्ण लिप्त है।'

र०—'अच्छा, किसका अनुमान ठीक है, यह आपही पीछे खुल जायगा।'

यह कहकर फिर से वह ढूँढ़-ढाँढ़ करने लगा। करते-करते सहसा पूछ बैठा—'वह जो लड़की आपकी आश्रित है, क्या वह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोरी है ? सिर के केश काले और लम्बे हैं, नीचे से घुँघराले हैं ?'

बि०—'क्या तुमने उसे देखा है ?'

र०—'कभी नहीं।'

बि०—तो भला यह तुम्हें क्योंकर मालूम हुआ कि उसका रंग खूब गोरा है, लम्बे बाल हैं और वह भी कुछ घुँघराले हैं ?'

र०—'वह काली है या गोरी, लम्बी है या नाटी, या जैसी है, वैसी मेरे आँखों के आगे नाच रही है।'

बि०—'क्या उस पर तुम्हारा सन्देह है ?'

र०—'अभी तो सन्देह मुझे किसी पर भी नहीं है। पर हाँ, इतना आपसे कहे देता हूँ कि चाहे तो इस हत्या का पूरा पता लगाऊँगा, या अब से यह काम ही छोड़ दूँगा। रात बहुत गई, कहिये, अब आप सोइएगा या मेरे साथ घूमिएगा ?'

बि०—अब इस समय तुम कहाँ जाओगे ? कितनी दूर तक ?'

र०—'बस, इस पगडंडी-पगडंडी टोह लगाते हुए चले जायँगे।'

बि०—'तो हम भी साथ ही चलते हैं।'

र०—'आइये, मैं प्रतिज्ञा करके कहता हूँ, कि भोर होते-होते आपको एक आश्चर्यजनक खबर सुनाऊँगा।'

यह बातें कहकर रघुनाथ एक खुली हुई खिड़की से धम्म से फुलवाड़ी में कूद पड़ा। आजकल के कायर जमींदार या अमीरों-जैसे बिपिन बाबू न थे। वह भी साथ ही कूदे। कूदे तो सही, पर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जितने फुर्ती से रघुनाथ कूदा वैसे वह बेचारे न कूद सके; क्योंकि रघुनाथ कुस्तीबाज, फुर्तीला हिन्दुस्तानी और वह हजार हो तो बेचारे अमीर बङ्गाली ही थे। इतनी ही कुशल हुई कि हाथ-पाँव नहीं टूटा। फुलवारी में जातेही रघुनाथ पूर्ववत् हाथ-पाँवों से कुत्ते-जैसा चलने लगा। अपनी जेब से उसने एक छोटी-सी लालटेन निकाली और उसी की रोशनी के सहारे घूमने लगा। पन्द्रह मिनट योंही घूम-घामकर 'उह !' ऐसा शब्द कर उठ खड़ा हुआ और फिर साथही पूर्ववत् चलने लगा। योंही अनुमान एक घंटा घूमते हो गया। बिपिन बाबू भी उसके पीछे-पीछे जा रहे थे और उसके श्रम तथा कार्य-तत्परता की मनही मन सराहना करते जाते थे। रघुनाथ जिस सीध में जा रहा था उसीके किनारे पर एक तालाब था, जिसके चारों ओर सघन अगम्य झाड़ी घिर रही थी। उस पुष्करणी के पास पहुँचते ही रघुनाथ सहसा खड़ा हो गया। अब किस ओर जाना चाहिये, मानो यही वह विचारने लगा। बिपिन बाबू ने पूछा—'क्या है ?'

र०—'कुछ नहीं।'

बि०—'तो ठहरे क्यों ?'

रघुनाथ ने इसका उत्तर न देकर बिपिनबाबू से पूछा—'एक भयावनी चीज को देखने का आप साहस करेंगे ?'

बि०—बिबस होकर देखूँगा।'

रघुनाथ ने अपनी लालटेन की रोशनी को बढ़ा दिया और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसे इस ढंग से लगाया कि उसकी रोशनी किसी एक निर्दिष्ट स्थान में जाकर पड़ी। रघुनाथ ने बिपिन बाबू से कहा—'जिस स्थान पर यह रोशनी पड़ रही है, जरा वहाँ दृष्टि लगाकर देखिये तो।'

बिपिन बाबू ने उस स्थान पर दृष्टि जमाकर भली प्रकार निहारा तो क्या देखते हैं कि कोई एक छोटी-सी चीज उस रोशनी में झिलमिला रही है।

रघुनाथ ने पूछा—'कहिये कुछ दिखाई देता है?'

बि०—'हाँ, देख तो रहा हूँ।'

इतना कहकर बिपिन बाबू कुछ आगे बढ़े, और उस निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचे। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि एक कटा हुआ हाथ आधा पृथ्वी में गड़ा हुआ है और आधा बाहर है और उसी कटे हुए हाथ की कनिष्ठा उँगली में एक हीरे की अँगूठी झिलमिला रही है।

पञ्चम परिच्छेद

कटा हाथ! इस भयावह, शोकावह दृश्य ने एक मुहूर्त के लिए बिपिन बाबू को किंकर्तव्यविमूढ़, बुद्धिहीन और ज्ञान-शून्य कर डाला। वह अचल, अवाक, जड़ की नाईं खड़े उस शोकावह एवं भयानक दृश्य को देखते रह गये।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आँधी-पानी के उपरान्त प्रकृति शान्त, सौम्य, निस्तब्ध हो रही थी; ऐसी निस्तब्ध हो रही थी कि कहीं पेड़ के पत्ते भी नहीं हिलते थे। निशावसान जान कोकिल का कुहू शब्द, या रजनीचर, खेचर अथवा झिल्ली-झङ्कार या शृगालों का कर्ण-कठोर स्वर भी नहीं सुन पड़ता था। ऐसी निस्तब्धता को भेदता हुआ बिपिन बाबू के कानों में रघुनाथ का शब्द सुन पड़ा। बिपिन बाबू उस शब्द को सुनते ही चौंक पड़े और घूमकर रघुनाथ की बातें सुनने लगे।

र०—मैंने कहा था कि आज आपको एक भयानक दृश्य दिखाऊँगा, सो तो आपने देखा न? न जाने अभी इसी कटे हाथ के सहारे कोई खुशखबरी सुन पड़े।'

बिपिन बाबू कुछ ऐसे भौंचक्के से हो रहे थे कि उनसे कुछ कहा न गया। पर, हाँ उनकी मुख-भङ्गी से ऐसा स्पष्ट होता था मानो रघुनाथ के वाक्यों का क्या भावार्थ है, उसे भली प्रकार समझने के हेतु वह उत्कण्ठित-से हो रहे थे। यह प्रत्यक्ष जान पड़ा। रघुनाथ भी यह समझ गया। तब उसने धीरे-धीरे कहा—

र०—'मैं आपको झूठा भरोसा नहीं देता, पर हाँ इतना बिना कहे भी नहीं रहा जाता कि अभी आशा है; निराश होने की अभी कोई बात नहीं है।'

बड़े कष्ट से बिपिन बाबू ने कहा—'तुम क्या कह रहे हो, मैं कुछ समझ नहीं सकता।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'अजी ! मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यह जो घटना हुई है उसमें बड़े रहस्य भरे हैं। अभी तक मेरे जी में यह नहीं जमता कि वास्तव में हत्या हुई है।'

बि०—'क्या यह कोई दुष्टों का गुप्त रहस्य है ? हत्या नहीं ?'

र०—'मैं तो ऐसा ही समझता हूँ।'

शिकार करने के पहले हिंसक जन्तु जैसा शब्द करता है अकस्मात् विपिन बाबू को वैसा ही शब्द सुन पड़ा। चौंककर पीछे मुड़कर जो देखा तो एक बहुत बड़ा ताजी कुत्ता ! वह कुत्ता उस कटे हुए हाथ को दूर से सूँघता था और भूकता था। यह देख डरकर विपिन बाबू ने कहा—'अरे यह बला कहाँ से ! यह भयानक कुत्ता कहाँ से आ गया ?'

र०—'यह मेरा जोड़ीदार है; मेरा विश्वासी सेवक है। मेरा प्यारा—वीर।'

बि०—'पर मैंने तो अभी तक इसे तुम्हारे संग नहीं देखा था ?'

र०—'नहीं, पर जिस घड़ी से मैं इस फुलवाड़ी में आया हूँ यह मेरे साथ है और रास्ता दिखाता हुआ मुझे यहाँ तक लाया है; और इसीके इशारे से मैंने आप से कहा था कि आप को एक भयानक वस्तु दिखाऊँगा।' विपिन बाबू की दृष्टि फिर उसी दुखद वस्तु पर पड़ी। वह दुःख सागर में गोते खाने लगे और मन-ही-मन कातर हो यह कहने लगे—'हाय मेरी प्राण-प्यारी कन्या को न जाने कौन निष्ठुर, निर्दयी, दुष्ट हत्यारा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

टूक-टूक कर इस पुष्करणी के तट पर गाड़ गया है ? हाय ! मैं खड़ा उसे देख रहा हूँ, पर मुझसे कुछ भी करते-धरते नहीं बनता ?'

ऐसे ही अनेक प्रकार की चिन्ता करते हुए रघुनाथ को सम्बोधन कर बोले—'मेरी कन्या का मृत देह इसी ठौर में गड़ा हुआ है, इसलिए मैं दौड़कर अपने घर से कुछ नौकरों को बुला लाऊँ और उसे निकलवा कर अपने घर ले चलूँ।'

र०—'इसके लिए आपको नौकरों के बुलाने की आवश्यकता नहीं है।'

यह सुन चिढ़कर विपिन बाबू ने कहा—'भाई न जाने तुम्हारी बातें कैसी उलझन की होती हैं कि पूरी-पूरी समझ ही में नहीं आतीं। जो कुछ कहना हो साफ-साफ कहो जो समझ में आसके।'

र०—'मैं स्पष्ट कहता हूँ सिवा हाथ के यहाँ लाश नहीं है।'

बि०—'एं ! तो मेरी कन्या का शरीर कहाँ है ?'

र०—'देखिये, खोज के निकालूँगा ही।'

बि०—'तो क्या पहिले इस हाथ को तुमने देखा था और यही दिखाने मुझे यहाँ लाये थे ?'

र०—'नहीं, पहिले मैंने नहीं देखा था और न इस बात का पहिले ऐसा गुमान ही था कि इस स्थान पर मुझे हाथ मिलेगा।'

बि०—'तो भला तुम्हें यह क्योंकर मालूम हुआ कि यहाँ धरती के नीचे मृतदेह नहीं है ?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'जो होता तो यह मेरा साथी कुत्ता पहिले ही मुझे कह देता।'

बि०—'क्योंकर ?'

र०—'इशारे से, और जो लाश होती तो अब तक तो भूँक-भूँक कर जमीन-आसमान एक कर डालता।' इतना कह कुत्ते की ओर मुँह फेरकर हुक्म देने के स्वर से रघुनाथ ने कहा—'वीर! लेट जाओ।'

वीर ने रघुनाथ की आज्ञा को न माना, पर ऊँचा मुँह करके भारी गले से 'हुम हुम' शब्द से भयङ्कर शब्द करने लगा, जिसे सुन रघुनाथ के मुख का रंगही बदल गया। उसने बिपिन बाबू से कहा—'महाशय! आप चट से घुटनौआ बैठ जाइये, शत्रुओं ने पीछा किया है और यहाँ हम लोगों को देख लिया है।' रघुनाथ ने अपने हाथ वाले लालटेन पर खोली डाली। लालटेन को ढाँकते ही चारों ओर गहिरी अन्धेरी छा गई। ऐसा घना अँधेरा छाया कि हाथ से हाथ न सूझता था। उसी अन्धेरे में बिपिन बाबू, रघुनाथ और उसका कुत्ता एक जगह बैठ गये।

आँधी-पानी थम गया है। बादल साफ हो रहा है। इधर-उधर आकाश में कुछ तारे भी छिटक आये हैं। उनकी चमक वृक्षों के झुरमुट में से कुछ-कुछ झिलमिला रही है। उसी सहारे बिपिन बाबू रघुनाथ की कार्यवाही को चुप-चाप बैठे देख रहे थे।

रघुनाथ ने अपनी कमर में से एक जञ्जीर निकाली और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसें एक पेड़ में बाँध कुत्ते के पट्टे में लगाया और न जाने क्या उसके कान में धीरे-धीरे कहा और उसके मुँह के सामने हाथ से कई एक संकेत भी किये। कुत्ते ने भी वह सब समझ लिया। बैठकर उसने अपने आगे के दोनों पाँवों को पसार कर उनके बीच में अपना मुँह दबका लिया।

सहसा बिपिन बाबू के हृदय में अनेक प्रकार के सन्देह होने लगे। रघुनाथ की कही हुई गुप्त कुमन्त्रणा की उन्हें सुध हो आई; भय और सन्देह से उनका हृदय धड़कने लगा। वह आश्चर्य-मूर्ति, आधीरात का सन्नाटा, आँधी-पानी का समय, द्वारपालों की दृष्टि बचा रघुनाथ का चुप-चाप उस एकांत बैठक के अन्दर तक चले आना इत्यादि बातों की सुध बिपिन बाबू को सन्देह-सागर में गोते देने लगी। मन-ही-मन वह सोचने लगे कि इस भयानक मूर्ति—रघुनाथ ने कहा था कि यह खाली हत्या ही नहीं है, इसके अन्दर बहुत से गुप्त रहस्य भी भरे हैं। अब यह कौन जाने कि उस गूढ़ चक्र करनेवालों में यह शामिल नहीं है? या यही कौन जाने कि इसी ने कहीं मेरी कन्या को न मारा हो। जो कहीं मेरा सन्देह सत्य हुआ तो क्या आश्चर्य कि यह मेरी कन्या के तो प्राण लेही चुका है, अब मेरे भी प्राण लेगा। जिस समय बिपिन बाबू के चित्त में ऐसी-ऐसी बातें उठ रही थीं, उसी समय रघुनाथ ने अपने कमर से एक चमचमाता हुआ लम्बा छुरा निकाला। यह देख बिपिन बाबू ने भी अपनी पिस्तौल सँभाली।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह सन्देह बिपिन बाबू के हृदय में थोड़े ही क्षण रहा और उसके उपरान्त यह जाता रहा; क्योंकि इसका कारण केवल उनके चित्त की अस्थिरता थी।

रघुनाथ छुरे को निकाल छाती के तले दबाकर औंधा हो उसी स्थान पर पड़ रहा; उसने धीरे-धीरे बिपिन बाबू से कहा—'आप जहाँ हैं, वहाँ ही दम साधकर पड़े रहें, क्योंकि मुझे ऐसा अनुमान होता है कि शायद शत्रु हम लोगों की टोह लेते हुए यहाँ तक आ गये हैं। आप मेरे कुत्ते के पास लम्बे होकर पड़े रहें।'

बिपिन बाबू ने धीरे-धीरे पूछा—'हत्यारा कहाँ है?'

र०—'यह तो नहीं कह सकता, कदाचित् मेरा सन्देह ही निर्मूल हो।'

बि०—'तो मुझे छिपने को क्यों कहते हो?'

र०—'सावधानी में कोई बुराई नहीं है। इससे आप यहाँ चुपचाप पड़े रहें। न जाने कब, किस ओर से शत्रु आ जायँ। मैं जरा आगे बढ़कर देख आऊँ, बात क्या है। बहुत दूर न जाऊँगा।' यह कह तुरत रघुनाथ औंधा पड़ गया और सर्प-जैसा रेंगने लगा। इधर बिपिन बाबू रघुनाथ के कहे अनुसार कुत्ते के पास भूमि पर लेट रहे। राबर्ट रघुनाथ विचित्र ही मनुष्य था। उसकी सब ही बातें अनूठी थीं। जैसे उसके नाम में अंग्रेजी और हिंदुस्तानीपन मिला हुआ था वैसे ही उसके गुण भी थे। अर्थात् अंग्रेजों-सा साहस, उन्हीं-सा कौशल; हिंदुओं की-सी तीक्ष्ण बुद्धि,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिन्दुस्तानियों का-सा परिश्रम, सहनशीलता आदि मिले-जुले गुण राबर्ट रघुनाथ में थे। जो कहीं रघुनाथ किसी अंग्रेज के यहाँ जन्म लिए होता तो पल्टन में कभी ऊँचे दर्जे का पद पा गया होता। परन्तु वह तो भाग्यहीन काला आदमी था, इसलिए नाम कटाया हुआ सिपाही ही रहा। इससे अन्त में उसे पुलिस में जासूसी-कार्य करना पड़ा।'

जब रघुनाथ रेंगता हुआ तालाब के किनारे से चला तो मन-ही-मन वह स्थिर कर चुका था कि हत्या करनेवाले उसके कहीं आसपास आ पहुँचे हैं।

षष्ठ परिच्छेद

राजापुर के जमींदार के यहाँ किस ढङ्ग से काम करना होगा, यह रघुनाथ ने पहलेही से विचार लिया था। विपिन के साथ मुलाकात करने के पहिले ही रघुनाथ उस गाँव में इधर-उधर फकीरी वेष में घूमकर जहाँ तक हो सका था, इस हत्या के बारे में थाह ले चुका था और उसी फकीरी वेष से वह उमेश बाबू के चेहरे को भली प्रकार देख लिया था; परन्तु उसकी आकृति से उसे पूरा विश्वास हो गया था कि उमेश बाबू पूरे निर्दोष और निरपराध हैं। उसके मुख की आकृति से उदारता, पवित्रता और साधुता स्पष्ट झलकती थी! पल्टन और पुलिस में बहुत दिनों तक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नौकरी करते-करते देखकर मनुष्य की प्रकृति और उसके चालचलन को जान लेने की शक्ति हो गई थी। पुलिस के कामों में उसके इस जानकारी की कई बेर भली प्रकार जाँच हो चुकी थी और प्रायः उसी का अनुमान ठीक उतरता आया था। उस समय रघुनाथ के बराबरी में दूसरा चतुर मनुष्य उस जिले में कोई न था। बिपिन बाबू को कमिश्नर साहब ने अपने पत्र में रघुनाथ की प्रशंसा में कुछ अत्युक्ति न लिखी थी।

बड़े परिश्रम से रघुनाथ ने अपने कुत्ते को अनेक प्रकार के ऐसे संकेत सिखा रक्खे थे जिससे वह अद्भुत शीघ्रता से काम किया करता था। राबर्ट ने अनेक मौकों पर अपने स्वामी के प्राण बचाये थे। शत्रुओं के हाथ से प्राण बचाने का प्रायः काम पड़ा ही करता था; परन्तु केवल राबर्ट के ही भरोसे सदा वह अपने कार्य में कृतकार्य होता रहा।

कुत्ते मात्र में ऐसी घ्राण-शक्ति होती है जिससे दूसरे किसी अपरिचित मनुष्य के आतेही वह अपने स्वामी को बता सकता है। यहाँ तक कि चाहे कैसे ही गुप्त स्थान में कोई अपरिचित व्यक्ति छिपा हो तोभी वह बता सकता है। राबर्ट ने कुछ देर पहले 'हुम् हुम्' शब्द किया था। उसके इस शब्द से रघुनाथ समझ गया था कि कोई शत्रु पास आ पहुँचा है। इससे वह रेंगकर आगे बढ़ा था कि देखें शत्रु कहाँ है और क्या कर रहा है।

निःशब्द धीरे-धीरे रघुनाथ जा रहा था, ऐसी सावधानी से जा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहा था कि बाट में पड़े हुए तृण या सूखे पत्तो तक का खटका नहीं होता था। शत्रु दूर है या पास ? शत्रु किस ओर से आता है या कहाँ है; यह रघुनाथ नहीं जान सकता था। शत्रु आ पहुँचा है, राबर्ट ने केवल इतनाही बता दिया था। पर शत्रु कहाँ है, दूर या पास, पीछे या सामने—यह कुछ भी नहीं बताया था। राबर्ट ये बातें भी रघुनाथ को खोजकर बता सकता था, परन्तु किसी विशेष कारण से रघुनाथ वह खोज स्वयं अपने ही किया चाहता था।

रघुनाथ जिस स्थान में बिपिन बाबू को छोड़ आया था, वहाँ से सौ हाथ आगे जाकर उसे एक और नई बात मिली। एक वृक्ष के तले मनुष्य का पद-चिह्न उसे दिखाई पड़ा। मेह बरस जाने के कारण धरती गीली एवं पोली हो रही थी। उसी धरती पर स्पष्ट पाँव पड़ने के दबाव से पाँव का पञ्जा उभड़ आया था। उसे निहारते-निहारते उसकी दृष्टि दूसरे पद-चिह्न पर पड़ी। चट उसके मुख पर आश्चर्य का चिह्न झलक आया। लालटेन के उजेले के सहारे देखकर उसे पक्का अनुमान हो गया कि इसी मार्ग से कोई स्त्री गई है जिसका पद-चिह्न इस गीली जमीन पर उभड़ आया है। बार-बार निहार-निहारकर रघुनाथ उसे देखने लगा। रघुनाथ ने उसे उँगलियों से मापा और समझा कि यह तो ठीकही है कि जल बरस जाने के उपरान्त वह इधर से गई है। अब उसे इस की खोज हुई कि वह किधर गई है। इसलिए फिर वह उसी प्रकार रेंगता हुआ चला।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उस पद-चिह्न से सौ हाथ आगे बढ़कर रघुनाथ उठ खड़ा हुआ। पर वह ऐसा चिन्ह न था कि हर कोई उसे समझ जाय। ऐसे चिह्न को देखते ही उसे अनुमान हो गया कि जिस स्त्री ने उसका पीछा किया था वह इसी ठौर से लौट गई है; और आगे नहीं बढ़ी है। न जाने रघुनाथ ने अपने मन में क्या सोचकर यह विचारा कि चलो एक बार जमींदार के मकान के चारों ओर घूम फिरकर देख आवें।

ऐसा सोच-विचारकर वह वहाँ पहुँचा और जाकर उसने कई एक चक्कर उस मकान के चारों ओर लगाये और ध्यान से यह देखने लगा कि दुमहले में कहीं प्रदीप जल रहा है या नहीं। एक-दो चक्कर में तो उसे प्रदीप दीख न पड़ा, परन्तु तीसरी बार एक बन्द झरोखे से झिलमिलाता हुआ उसे कुछ उजेला दीख पड़ा। उसके दीखते ही रघुनाथ ने चट पावों में से जूता उतार डाला और एक बटुआ जो कन्धे पर लटकता था, उसे भी उतार कर रख दिया। जिस झरोखे में से प्रदीप का उजेला दीखता था, उसके निकट ही में एक ऊँचा वृक्ष था, जिस पर चढ़कर वह उस खिड़की के कारनिस पर जा उतरा। धक्का देकर देखा तो खिड़की के पल्ले भीतर से बन्द थे। रघुनाथ ने अपनी कमर से एक लोहे का आँकुड़ा निकाल लिया और उसके सहारे से उसने बेलाग खिड़की खोल दी। चोर की तरह धीरे-धीरे खिड़की में घुसकर उस मकान के अन्दर चला गया और धीरे-धीरे उस कोठरी में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो चीज जहाँ धरी थी उन्हें भली प्रकार देखने-भालने लगा। सबसे पहिले वह एक अलगनी के निकट गया और उस पर जो वस्त्र लटक रहे थे, उनमें से एक-एक को उठा-उठाकर बड़े ध्यान से देखने-भालने लगा। वह लालटेन के उजेले में यह देखता था कि कहीं किसी साड़ी में कीचड़ लगा है या नहीं। यों ही चारों ओर ऊपर नीचे इधर-उधर देखते-देखते उसे पलंग के नीचे लपेटी एक धोती दीख पड़ी। रघुनाथ ने चट उसे उठा ली और भलीभाँति देख-भालकर फिर जहाँ की तहाँ उसे रख खिड़की से बाहर आ कारनिस पर खड़ा हो जिस प्रकार से खिड़की खोली थी उसी प्रकार से उसे बन्दकर वृक्ष के सहारे से चटपट नीचे उतर आया। बगीचे में उतरकर रघुनाथ मन-ही-मन विचारने लगा—'यह लड़की तो आज रात को घर से बाहर नहीं गई। यह मेरी भूल थी, मैंने धोखा खाया, पर जो वह नहीं गई तो वह कौन थी जो वहाँ गई थी ? और किसने हमलोगों का पीछा किया था ?'

राबर्ट और बिपिन बाबू को जिस स्थान पर वह छोड़ आया था द्रुतगति से रघुनाथ वहाँ पहुँचा। और बिपिन बाबू से पूछा—

र०—'क्या आपने यहाँ किसी को देखा ?'

बि०—'नहीं।'

र०—'किसी प्रकार का कोई खटका सुना था ?'

बि०—'नहीं।'

र०—'मेरे जाने के उपरान्त यह कुत्ता भूँका था ?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वि०—'नहीं।'

रघुनाथ ने अपनी लालटेन पर की खोली हटाकर इधर-उधर देखा। उसी उजेले में रघुनाथ का मुँह भी स्पष्ट दीख पड़ा। उस समय उसके मुख पर कुछ खिजलाहट के चिह्न झलकते थे।

बिपिन बाबू ने पूछा—'कहो कुछ टोह लगी है ?'

र०—'नहीं, अभी तक कुछ नहीं।' यह कहकर रघुनाथ ने कहा—'अच्छा कोई चिन्ता नहीं; आज ही की रात भर वह जो कर लें; फिर कब तक आँख में धूल डालेंगे।'

रघुनाथ यह कहही रहा था कि धड़ाक से पिस्तौल का शब्द हुआ। उस सूनसान घोर अन्धकारमय सन्नाटे के जंगल में अचानक ऐसे शब्द के होतेही दोनों के दोनों चौंक उठे। बड़ा विस्मय हुआ!

सप्तम परिच्छेद

बिपिन बाबू के पास से सन्सन् करती हुई गोली निकल गई। साथही रघुनाथ ने कहा—'लेट जाओ जमीन पर।' रघुनाथ ने राबर्ट के गले से सींकल खोलकर कहा—'ढूंढ़ लाओ' आज्ञा पातेही राबर्ट फुरफुर शब्द करता नीची गर्दन से न जाने क्या सूँघता हुआ चला। देखते-देखते उस घनघोर अँधेरे में वह फिर न दीख पड़ा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धीरे-धीरे रघुनाथ ने बिपिन बाबू से कहा—'खूनी तो यहाँ आ गये हैं और आज फिर हत्या करना चित में ठानकर वे यहाँ आये हुए हैं और इस सूनसान स्थान में आज फिर हत्या की सम्भावना हो रही है। इसलिए यदि आप चाहें तो यहाँ ठहरें अन्यथा अपने मकान पर लौट जायँ।

बिपिन बाबू में जो नव्वाबी पल्टन में कुछ दिनों तक रह चुके थे, साधारण बङ्गालियों की अपेक्षा अधिक साहस था; क्योंकि वह कई एक लड़ाई भी देख चुके थे। उन्होंने बड़ी हिम्मत करके कहा—'नहीं मैं न जाऊँगा।'

रघु०—'तो आप अकेले यहाँ रह सकेंगे न?'

कुछ सोच-विचार कर बङ्गाली बाबू ने कहा—'मैं अकेला तो न रहूँगा, पर जहाँ तुम रहोगे, तुम्हारे साथ रहूँगा।'

रघुनाथ ने कहा—'यह तो न होगा।'

तब सोच-विचारकर बिपिन बाबू ने कहा—'अच्छा जब तक तुम न आओगे, मैं यहाँ ठहरा रहूँगा।'

रघुनाथ ने कहा—'तो आप इसी जगह घास पर लम्बे पड़े रहिए। देखिये, खबरदार सिर न उठाइयेगा और न हिलिये-डुलियेगा। आपके पास कुछ हथियार है?'

बि०—'एक पचनली तमञ्चा है'

र०—'अच्छी बात है, यदि आप यहाँ किसी अनजान को आते देखें और वह आपके प्रश्नों का उत्तर न दे तो आप गोली मारें।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बि०—'ऐसाही करूंगा।'

इतना कह सुनकर जिधर कुत्ता गया था, उसी ओर रघुनाथ भी पाँव बढ़ाये झपटा हुआ चला। राबर्ट, रघुनाथ से बहुत पहले गया था, तबभी रघुनाथ शीघ्रही उसके निकट पहुँच गया। जितनी दूरी से राबर्ट का शब्द स्वर सुन पड़े उतने दूर रह रघुनाथ उसके पीछे हो लिया। ज्योंही कुछ दूर आगे बढ़ा कि दुम्म-दुम्म दो गोली का शब्द सुनाई पड़ा। तुरत रघुनाथ ने अपने कमर से एक चमकता हुआ छुरा निकाला और जिधर से वह शब्द सुन पड़ा था उसी ओर चला। आगे जाकर एक पत्थर की दीवार दिखाई दी। इस दीवार से अनुमान तीस हाथ की दूरी पर एक झाड़ी में राबर्ट पड़ा हुआ था। कुछ सोच रघुनाथ ने घूमकर दीवार को देखने का विचार किया। दीवार की एक परिक्रमा करके जहाँ राबर्ट पड़ा था, ठीक उसके सीध में पचास हाथ की दूरी पर खड़े हो दृष्टि गाड़कर रघुनाथ ने उस अंधेरे में देखा कि तीन मनुष्य खड़े हैं। ये तीनों ठीक रघुनाथ की सामनेही कोई दस हाथ के की दूरी पर खड़े थे।

रघुनाथ के यहाँ खड़े होतेही उनलोगों को भी गुमान हो गया कि शत्रु आ पहुँचा है। ज्योंही इधर-उधर देखने लगे कि तुरत रघुनाथ उनके सामने आकर खड़ा हो गया।

एक साथही इन तीनों ने रघुनाथ को घेर लिया। ये तीनों बलवान्, फुर्तीले और पूरे बदमाश थे। इन तीनों में से एक ने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीछे से रघुनाथ का सिर ताक कर गोली चलाई; परन्तु गोली चलने के निमेष मात्र पूर्व राबर्ट ने गोली चलानेवाले के पाँव की नली को दाँतों से पकड़ कर ऐसा झकझोरा कि उसका निशाना चूक गया। उधर से दूसरे ने राबर्ट पर गोली चलाई; पर राबर्ट उसे बचाकर तुरत पाँच हाथ की दूरी पर जा खड़ा हुआ। इससे उसे गोली न लगी।

रघुनाथ ने अनुमान किया कि ये दुष्ट कदापि सामने खड़े होकर न लड़ेंगे; इधर-उधर से छिप कर घात करेंगे; ऐसा सोच-कर रघुनाथ ने साफे में से एक छः नली पिस्तौल निकाली। दाहिने हाथ में पिस्तौल और बाँएँ में छुरा लेकर रघुनाथ युद्ध करने को तैयार हुआ।

देखते-देखते दुम्म-जैसा पिस्तौल का शब्द हुआ और साथ ही किसी मनुष्य-कण्ठ से आर्त्तनाद का शब्द भी सुन पड़ा। निशाने-बाज रघुनाथ का निशाना खाली न गया। उन तीनों में से एक धम्म से गिरा। उसे गिरा देखकर वे दोनों घबड़ाये और इधर-उधर देखकर एक ओर भाग गये। उस समय यदि रघुनाथ चाहता तो उन लोगोंका पीछा कर सकता था; परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। उसने सोचा कि व्यर्थ ही नर-हत्या क्यों करें; केवल एक ही बहुत है।

सामने मनुष्य की लाश पड़ी है; पर रघुनाथ को कुछ परवाह नहीं थी। जैसे शिकारी चिड़िया मार के हँसता हुआ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसके पास आकर बड़ी प्रसन्नता से खड़ा हो उलट-पुलट कर देखता है, उसी प्रकार रघुनाथ उस मुर्दे के पास घुटने टेककर बैठ गया और उसकी नाक तथा हृदय आदि स्थानों को देख-भाल कर निश्चय कर लिया कि अब इसमें प्राण बाकी नहीं है। तब वह उसके वस्त्रों को टटोलने लगा। उसके खीसे और साफे में से मनुष्य मारने के कई एक शस्त्र निकले। रघुनाथ बहुत देर तक उसके मुँह की ओर देखता रहा। देख-भाल कर उसे निश्चय हुआ कि इसके पूर्व इस मनुष्य से कभी भेंट नहीं हुई थी।

उस मुर्दे को वहाँ ही छोड़ कर रघुनाथ उस स्थान को चला, जहाँ बिपिन बाबू को अकेला छोड़ आया था। उसके पीछे-पीछे उसका कुत्ता राबर्ट भी चला।

रघुनाथ को सामने आते देख बिपिन बाबू ने घबड़ाकर पूछा 'कहो महाराज क्या है ?'

रघुनाथ ने कहा—'जरा मेरे साथ आइये।'

बिना कुछ कहे बिपिन बाबू उसके पीछे हो लिये। जहाँ वह मुर्दा पड़ा था, बिपिन बाबू को रघुनाथ उसी स्थान में ले गया और वहाँ जाकर उसके पाँयताने की ओर उसने अपनी लालटेन दिखाकर कहा—'जरा ध्यान देकर देखें तो सही आप इसे पहिचानते हैं या कभी कहीं देखा है ?'

बिपिन बाबू ने निधड़क होकर उस मुर्दे को सिर से पाँव तक भली प्रकार देखा। देख-भालकर बोले—

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

'मुझे तो ध्यान नहीं आता कि मैंने कभी इसे देखा है।'

रघु०—'अच्छा तो अब चलिये।'

बि०—'यह कौन है और इसे मारा किसने ?'

रघु०—कौन है, यह तो अबतक मैं नहीं जानता, पर मारा तो मैंने ही है।

बि०—'यह क्यों ? माजरा क्या है।'

रघुनाथ ने आदि से अन्त तक जो कुछ हुआ था सब कह सुनाया। सुनकर बिपिन बाबू ने कहा—'भला अब इसे क्या करोगे ?'

र०—'अभी तो यहाँ हा पड़ा रहेगा, फिर जैसा होगा देखा जायगा।'

रघुनाथ की कार्रवाइयों पर विशेष पूछ-ताछ करना या उस विषय में अपनी राय मिलाना उचित न जान बिपिन बाबू चुप हो रघुनाथ के पीछे-पीछे अपने घर की ओर चले।

पाठकों को स्मरण होगा कि ये लोग पहिले जिस तालाब के तट पर गये थे जहाँ एक हाथ गड़ा हुआ था, उसी स्थान पर अब पहुँचे। पहुँचते ही रघुनाथ ने उस गड़े हुए हाथ को ऊपर उठाकर लालटेन के उजेले में उलट-फेरकर उसकी उँगली से हीरे की मुँदरी उतार ली और उसे बिपिन बाबू के हाथ में देकर पूछा, 'आप इस अंगूठी को पहचानते हैं।'

बि०—'हाँ भली प्रकार पहचानते हैं।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'क्या अंगूठी आप के कन्या की है ?'

बि०—'हाँ ।'

र०—'आप उसे भली प्रकार से देख-भाल लें, कहीं धोखा न होता हो ।'

बि०—'नहीं, नहीं ।'

र०—'आप के कन्या की क्या अवस्था होगी ?'

बि०—'पन्द्रहवाँ वर्ष है ।'

र०—यह सुन रघुनाथ के होठों पर कुछ मुस्कुराहट आ गई । उसने कहा—'आप इस हाथ को देखकर धोखा न खायँ । यह आपकी कन्या का हाथ नहीं है ।'

आग्रह से बिपिन बाबू ने कहा—'क्या यह मेरी कन्या का हाथ नहीं है ? यह तुमने क्योंकर जाना ?'

र०—'यह हाथ बारह वर्ष से अधिक उम्र की कन्या का नहीं है ।'

बि०—'जो यह मेरी कन्या का हाथ नहीं है तो सिवा मेरी कन्या के और भी कोई कन्या मारी गई है ? त्राहि ! त्राहि ! यह तो बड़ा अन्धेर हुआ ! नारायण यह क्या होगा ?'

र०—'यह जीती लड़की का हाथ नहीं है ।'

बि०—'यह माजरा क्या है, कुछ समझ में नहीं आता ! इस समय तो मेरी बुद्धि कुछ काम ही नहीं करती !'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अष्टम परिच्छेद

रघुनाथ की बातों को सुनकर बिपिन बाबू का चित्त कुछ ऐसे उलझन में फँसा कि उनसे कुछ कहते सुनते न बना। उन्हें देखने से अनुमान होता था मानो चिन्ता के कुँए में उतरे जा रहे हैं। कुछ क्षण के उपरांत उन्होंने रघुनाथ से पूछा—'तो क्या यह तुम्हें निश्चय है कि मेरी कन्या जीती है ?'

र०—'मेरा चित्त तो यही कहता है कि वह मारी नहीं गई है ?'

बि०—'हे ईश्वर ! हे परमात्मा ! हे दीनबन्धु ! रघुनाथ का कहना ठीक हो।'

र०—'साहब, मेरा तो चित्त यही कहता है कि वह जीती है।'

बि०—'भला, यह तो कहो तुम्हें ऐसी कौन सी टोह लगी है जिससे तुम्हें यह निश्चय हो गया है ?'

र०—'मैं क्या कहता हूँ या क्या विचारता हूँ, उसे तो कभी भी किसी से नहीं कहता। यह मेरी एक प्रकार की प्रतिज्ञा ही है; पर आपका दुख देख आज विवश मुझे कहना पड़ा। सुनिये, यह निश्चय है कि जब कोई किसी के प्राण लेता है तो उसे अपने सामर्थ्य भर छिपानेही का यत्न करता है और जब बिना मारे ही वह प्रकाश करना या धोखा देना चाहते हैं, तभी ऐसी बातें दिखलाते हैं कि मानो सचमुच हत्या हुई है। दूसरा प्रमाण यह है कि बेचारी पन्द्रह वर्ष की एक अबला कन्या हत्यारे के साथ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

झगड़े या लड़े और सो भी एक धनवान बङ्गाली की सुकुमार कन्या; कभी सम्भव नहीं है। परन्तु जिस कोठरी में हत्या हुई है वहाँ रक्त के छींटे ऐसे ढङ्ग से पड़े हैं मानो मरने और मारनेवालों में खूब धींगामुस्ती हुई है। तीसरा प्रमाण बिछौने पर जो छुरी धरी थी वह ऐसे ढङ्ग से जान बूझकर रक्खी थी कि घर में पैठते ही उस छुरी पर दृष्टि पड़े। और चौथा अटूट प्रमाण तो यह है कि आपकी लड़की की अँगूठी एक मुर्दे की उँगली में पहिनाकर उस हाथ को इस प्रकार गाड़ रखा है जो स्पष्ट कह देता है कि आपकी कन्या अवश्य जीती है। इन बातों से यह निश्चय होता है कि बदमाशों ने कुमन्त्रणा कर आपकी लड़की को तो कहीं छिपा दिया है और यह सब ढकोसले इसलिए किये हैं जिससे यह सिद्ध हो जाय कि बिपिन बाबू की लड़की मर गई।'

बि०—'भला तो इससे मतलब क्या? क्या वह वारिसनामा रद्द करने को?'

र०—'हाँ यही मतलब होगा।'

बि०—'तो अब क्या करोगे?'

र०—'किसी तरह उसे खोजकर निकालेंगे।'

बि०—'पर अब उन दुष्टों को भी मालूम हो ही गया है कि हमलोगों ने उनका पीछा किया है। इससे क्या आश्चर्य कि वे निर्दयी दुष्ट अब मेरी कन्या को मार डालें।'

र०—रघुनाथ ने मुस्कुरा कर कहा—'जबतक उस लड़की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को न खोज लेंगे तबतक उनको यह जानने का अवसर न देंगे कि हमलोगों पर उनका भेद खुल गया है। प्रकाश्य में हमलोग लड़की का मृत देह खोजने का प्रदर्शन करेंगे और भीतर से उसे ढूँढ़ेंगे।'

बि०—'भला यह तो कहो कि जबतक वे दुष्ट यह स्पष्ट प्रमाणित न कर देंगे कि लड़की मारी गई, तबतक उनका अभीष्ट कैसे सिद्ध होगा?'

र०—'आप चिन्ता न करें, शीघ्र ही मैं उस लाश को ढूँढ़ निकालूँगा।'

बि०—'हैं यह क्या? अभी न तुमने कहा था कि मेरी लड़की जीती है और अब कहते हो कि लाश खोजकर निकालूँगा?'

र०—(हँसकर) 'साहब! आप घबड़ाइये नहीं, वह लाश जिसका हाथ कटा हुआ है, जब निकलेगी तो आप देखियेगा वह ऐसी सड़ी गली हुई निकलेगी पहचानी न जायगी कि वही है या दूसरी। पर यह भी याद रहे कि कपड़े या जेवर आदि का ऐसा कुछ बन्दोबस्त हुआ होगा जिससे प्रतीत हो कि वह आपकी कन्या ही का मृत-देह है। बदमाशों ने पूरा षड्यंत्र रचा है। पर मैं भी उनका चचा मिला हूँ, चलें, वे कितनी चाल चलते हैं।'

बि०—'भला, यह तुम क्योंकर प्रमाणित करोगे कि वह लाश मेरी कन्या की नहीं है?'

र०—'समय पर देख लीजियेगा।'

४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बि०—'क्योंकर ?'

र०—'आपकी लड़की को जीती खोजकर।'

बि०—'भाई तुम विचित्र मनुष्य हो ? ईश्वर तुम्हारी सहायता करे।'

र०—'आप निश्चय रखें, ईश्वर मेरे परिश्रम को सफल करे जिससे जीती-जागती आपकी लड़की को आपसे मिला दूँ, तब मेरी बात का मूल्य है।'

बि०—'जो तुम जीती हुई मेरी कन्या को ला दोगे तो मैं भी कहे देता हूँ कि तुम्हें निहाल कर दूँगा।'

र०—'राम मालिक है, पर मुझे तो पूरा विश्वास है कि आप की लड़की जीती है और मैं उसे खोज निकालूँगा। मैं आप से कहे देता हूँ कि जब वह सड़ी हुई लाश निकले तो आप रोना-पीटना आरंभ कर देना और उसका दाह भी करवा देना जिससे उन फसादियों को एतबार हो जाय कि आपने धोखा खाया और फिर वे निश्चित हो जायँ। तब देखिये, मैं किस ढँग से खोज निकालता हूँ।'

बि०—'भला, इसकी भी कुछ टोह लगी कि वे दुष्ट कौन हैं जिन्होंने यह उपद्रव मचाया है ?'

र०—'यह तो मैं कह चुका हूँ कि अभी तक कुछ पता नहीं लगा है; पर जल्दी लग जायगा। आप उसकी चिन्ता न करें। चलिए, अब पौ फूटा चाहती है, सबेरा हो गया है; अब घर चलिये। सुनिये, आज से मैं आपके काम में प्रवृत्त हुआ और जब तक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आपका काम न कर लूँगा इसी तरह लगा रहूँगा। इसलिए पहले से आपको बताये देता हूँ कि समय-समय पर मुझे अनेक रूप बदलकर आपके पास आना पड़ेगा और बहुत तरह की बातें करनी पड़ेंगी। पर याद रहे, आप धोखा न खायें; अन्यथा मामिला गड़बड़ा जायगा।'

बि०—'यह मैं खूब जानता हूँ कि पुलिस के जासूस पक्के बहुरूपिए हुआ करते हैं। पर यह तो बताओ कि मैं क्योंकर पहचानूँगा ? उसकी कुछ निशानी भी बता रखो।'

रघुनाथ लालटेन का उजेला अपने चेहरे पर डालकर बोला—

'देखिये मेरी आँखों पर जरा ध्यान दीजिये।' यह कहकर उसने अपनी आँखों के तारों को ऐसा फिराया कि एक तो ऊपर को चढ़ गया और दूसरा टेढ़ा हो गया। उसने कहा—'इसपर ध्यान दीजिए और याद रखिये यही मेरी निशानी है।'

बि०—'वाह ! वाह ! खूब, अब मैं समझ गया; भले ही तुम किसी वेश में आओ; अब मैं धोखा न खाऊँगा।'

र०—'अच्छा तो चलिये आपको आपके मकान पर पहुँचा आऊँ। अब आप यह निश्चय मानिये कि आपकी लड़की जीती है। बस, चलकर कुछ देर आराम से सोवें; क्योंकि रातभर हलाकान हुए हैं।'

बिपिन बाबू सीधे अपने घर चले गये और कुछ दूर पर खड़ा रघुनाथ उन्हें देखता रहा। जब वह घर के अन्दर चले गये, तब रघुनाथ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

झुककर चारों ओर घासां में खोजने लगा। खोजते-खोजते कुछ दूर गया तो क्या देखता है कि सड़क के किनारे घास में एक पैर का चाँदी का कड़ा पड़ा है। चट उसने उठा लिया और मन-ही-मन कहने लगा—'वाह! वाह! नई टोह लगी। बड़ा भारी सबूत है। अब मालूम हुआ कि इस कर्म के करनेवाली बिपिन बाबू की भाञ्जी उर्मिला ही है। इसमें सन्देह नहीं।'

नवम परिच्छेद

जिस दिन यह घटना हुई उसके दूसरे दिन सन्ध्या के समय देवघर गाँव में उमेश बाबू अपने मकान के चौपाल में घोर चिन्ता में बैठे न जाने क्या विचार रहे थे। उमेश के पिता गाँव में विद्यार्थी पढ़ाया करते थे। उसी से जो कुछ मिलता किसी प्रकार परिवार का पोषण और निर्वाह करते थे। उमेश अपने माता-पिता के इकलौते लड़के थे। उनकी माता का सूतिकागृह में देहान्त हो गया था। पिताने बड़े कष्ट से पुत्र को पाला-पोसा और कुछ थोड़ा बहुत लिखना पढ़ना भी सिखाया था। अठारहवें वर्ष उमेश के पिता का देहान्त हुआ।

जमींदार के मकान में जिस दिन से यह दुर्घटना हुई, उस दिन उमेश की यह अवस्था होगई थी कि न उसे खाने-पीने की इच्छा; न सोने बैठने की सुध, न आये-गये की खबर, न किसी से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोलना-चालना और न कहीं जाना-आना था। पागल-सा बैठे-बैठे बड़बड़ाता या घंटों चुपचाप बैठे रहता था। व्याह की सब कुछ तैयारी हो चुकी थी, तेल हलदी चढ़नेही को थी कि अकस्मात् यह उपद्रव हुआ। उस समय जब उमेश ने बिपिन बाबू के साथ जाना चाहा और उन्होंने रोका और लौट आने पर भी उमेश के पूछने पर झिड़कार दिया, तब उस झिड़की के शब्दों ने उमेश का हृदय मानो हिला दिया था। उमेश की आँख से फिर किसी ने एक बूँद आँसू ढरकते नहीं देखा। ढरके भी कहाँ से! वह तो इस औचक दुःख से पत्थर-सा होगया था। कुछ सुधही नहीं रह गई थी।

उमेश की यह अवस्था देखकर कोई कहता था कि अभी लड़का है, इससे उसका कोमल कलेजा दहल गया है। बेचारा लड़का क्या रोवे-पीटे। कोई कहता था, अजी इसने ढोंग साधा है। भीतर से तो यह खुशी है कि भले कामिनी मर गई। अब तो सब धन के हमहीं मालिक होंगे, इत्यादि। जितने मुँह उतनी बातें सुन पड़ती थीं।

बेचारा उमेश अपने हाथ गाल पर धरे घोर चिन्ता में बाहरी ज्ञानशून्य बैठा हुआ था कि अचानक पीछे से आकर किसी ने उसकी पीठ पर हाथ रखा। हाथ के धरतेही उमेश ने चौंककर पीछे देखा तो एक हट्टा-कट्टा काला बिकट मनुष्य खड़ा है जिसे देखतेही उमेश के होश जाते रहे।

धीरे-धीरे मीठे-स्वर से रघुनाथ ने उमेश बाबू से कहा—'घबड़ाइये नहीं मुझे आपसे काम है।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उमे०—'कौन हो, तुम क्या चाहते है।'

र०—'आपसे कुछ काम है।'

उमे०—'तुम कौन हो ?'

र०—'पुलिस का आदमी।'

उमे०—'पुलिस के आदमी ?'

र०—'हाँ।'

उमे०—'क्या चाहते हो ?'

र०—'तुम्हें चाहते हैं।'

उमे०—'मुझे ?'

र०— 'हाँ।'

उमे०—'क्यों मुझसे क्या काम है ?'

र०—'तुम्हें गिरफ़ार करने आये हैं।'

उमे०—'क्यों ?'

र०—'बिपिन बाबू की लड़की की हत्या के कारण।'

उमेश ने पहिले तो मन-ही-मनमें कहा—'हे राम ! क्या मेरे भाग्य में यही सब बदा था ?' फिर कुछ सोचकर उठ खड़ा हुआ और बोला—'क्या मैं खूनी हूँ ? कौन कहता है ?'

र०—'अभी तो मैंही कहता हूँ।'

सहसा दुम् से एक शब्द हुआ। चौपाल में धुँआ घिर गया। रघुनाथ के सिर पर से सन् से एक गोली निकल गई। चट रघुनाथ उमेश से दृढ़तापूर्वक लिपट गया। कुछ देरतक दोनों में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खूब ही लपटा-झपटी हुई। अन्त में उसी लपटा-झपटी में उमेश के हाथ से पिस्तौल गिर गई। ज्योंही उमेश झपट कर पिस्तौल उठाया ही चाहता था कि रघुनाथ ने अड़ङ्गी लगाकर धरती पर पटक दिया और छाती पर चढ़ बैठा और बोला—'देखो बाबू, व्यर्थ तुम अपने मछली-भात का जोर न दिखाओ, सीधे हमारे साथ हो लो।'

यह सुनकर उमेश ने कहा—'अच्छा तो जो हम कहते हैं वही करो।'

र०—'क्या कहते हो ?'

उमे०—'मेरा जो कुछ धन वा सम्पत्ति है, ले लो और इसी तमञ्चे से एक गोली मेरे छाती में मारदो।'

र०—'यह क्यों ?'

उमे०—'हत्या के अपराध में गिरफ़ार होकर समाज में मुँह काला करवाने से मरजाना अच्छा है और जो तुमसे नहीं मारा जाय तो छोड़ो मैं ही स्वयं गोली मारकर मर जाता हूँ।'

र०—'नहीं, नहीं, तुम्हें यह सब कुछ भी न करना होगा।' यह कह मीठे-स्वर से उसने कहा—'तुम घबड़ाओ मत; मुझे विश्वास है कि हत्या करने वालों में तुम नहीं हो। मैं इसका जिम्मा लेता हूँ कि तुम पर कोई अपराध न लगने पावेगा।'

उमे०—'किसने मुझ पर हत्या का अपराध लगाया है ?'

र०—'पहिले उठकर होश में आओ, तब सब कहूँगा।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह कह उसने उमेश को छोड़ उसका हाथ पकड़ उठाकर बैठाया। बेचारा उमेश गरीब ब्राह्मण का लड़का, कोमल शरीर, इस हाथापाई से बड़ाही शिथिल हो गया। कुछ क्षण तक सिवा हाँफने के उसके मुंह से बात तक न निकली। केवल रघुनाथ की ओर वह देखता रहा। कुछ क्षण के उपरान्त एक ठण्ढी साँस लेकर उमेश ने कहा—'हा ! जो सोचता था, वहीं हुआ।'

र०—'क्या सोचा था ?'

उमे०—'यही कि कामिनी की हत्या का मुझपर सन्देह होगा।' उसका नाम मुंह से निकलतेही उमेश के नेत्रों में आँसू डबडबा आया। दो-तीन बार हिचकी आई। मुँह पर उदासी सी छा गई।

र०—'हाँ, लोगों का तुमपर सुबहा हुआ तो है।'

उमे०—'भला, मुझपर लोगों का क्यों सन्देह हुआ, कुछ कह सकते हो ?'

र०—'क्या यह भी कोई छिपी बात है। क्या तुम नहीं जानते ?'

उमे०—'नहीं, मेरी तो बुद्धि काम नहीं करती।'

र०—'मैंने तो जहाँ तक सुना है, यही सुना है कि बिपिन बाबू की लड़की के मरने से आपही को अधिक लाभ है।'

उमे०—'क्या बिपिन बाबू की लड़की को मरने से मुझे लाभ ?'

र०—'हाँ।'

उमे०—'क्योंकर।?'

र०—'तुम्हारे दादा के भाई ने विल में यही लिखा है।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उमे०—'तो उसी सम्पत्ति के लिए यह सारा झगड़ा है और मुझ पर सन्देह का भी यही कारण है ? नारायण ! नारायण ! हा ! अच्छा तो अब बिपिन बाबू की कन्या और मेरी सगाई के विषय में जो मैं कहता हूँ, जरा ध्यान देकर सुनिये ।'

दशम परिच्छेद

अपने जी का हाल दूसरे के कहने की अपेक्षा दूसरे के जी का हाल सुनने में रघुनाथ की अधिक रुचि रहती थी। उमेश जब अपना हाल ब्यौरेवार कहने लगा तो रघुनाथ बहुतही चित्त लगा उसे सुन रहा था और बीच-बीच में कुछ गर्दन हिलाता जाता था जिससे स्पष्ट होता था कि वह बड़े ध्यान से सुन रहा है।

उमेश ने कहा—'भाई ! मैं अपने जी की बात न किसी से कहता हूँ और न कहने की इच्छा ही होती है। पर न जाने क्यों तुम्हारी मिलनसारी देख करस्वतः चित्त चाहता है कि जी खोल कर जितनी बातें चित्त में उबल रही है, कह दूँ। बचपनही से बिपिन बाबू की कन्या को मैं चित्त से प्यार करता था। जिस दिन यह अनहोनी बात हुई है। उसी घड़ी से कलेजा चूर-चूर हो रहा है, जबतक इस तन में प्राण है, तबतक यह आग योंही सुलगती रहेगी।'

रघु०—'भला यह तो कहिये कि आपका प्रेम जैसा उस पर था, क्या उसका भी वैसाही आप पर था ?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उमे०—'हां, जब तक वह जीती थी तब तक तो मुझे ऐसा-ही गुमान था; पर जिस दिन से उसके मरने की चर्चा फैली है उस दिन से कभी-कभी ऐसा जी में आता है कि जैसा मैं उससे प्रेम करता था शायद वैसा उसकी ओर से न था।' उमेश ने इन बातों को बड़ी उदासी और अनमनेपन से कहा।

र०—'भला कामिनी जीती है, कभी तुम्हारे जी में ऐसा आता है ?' इस प्रश्न के सुनते ही उमेश के मुँह पर उदासी छा गई और कण्ठ भर आया। बड़े कष्ट से उसने कहा—'यह तो मैं कह नहीं सकता।'

र०—'मुझे अपना विश्वासी सेवक मान बेधड़क कहिये। मैं कैसा विश्वासी हूँ, इसका परिचय शीघ्र ही मिलेगा।'

रघुनाथ था तो पुलिस का जासूस पर निरा गँवार-रुखा, जैसे स्वभाव का न था; जैसे पुलिस की छाप लगते ही प्रायः लोगों का स्वभाव हो जाता है अथवा ईश्वरेच्छा से ऐसे ही स्व-भाववाले ही पुलिस में भरती किये जाते हैं। रघुनाथ कुछ पढ़ा लिखा भी था और उसमें मिलनसारी, बोल-चाल में मधुरता तथा स्वभाव में शान्ति थी। सबसे बढ़कर उसमें यह एक विचित्र गुण था कि दस-पाँच मिनट तक बात करने के उपरान्त वह दूसरों पर अपना विश्वास जमा लेता था।

उमेश ने कहा—'मुझे तुम्हारा पूरा विश्वास है कि तुम विश्वस-नीय हो। मेरा जी चाहता है कि अपने जी की बातें तुमसे कहूँ।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'भला कहिये तो आप क्या समझते हैं, कामिनी जीती है या नहीं ?'

उमे०—'मेरा तो जी यही कहता है कि कामिनी जीती है। यकायक, उसका गुप्त हो जाना केवल उपद्रवियों के गुप्त कुमन्त्रणा का फल है। इस उपद्रव करने का उनका केवल यही तात्पर्य होगा कि लोगों के चित्त में यह जम जाय कि सचमुच कामिनी मारी गई। जिसमें उसके साथ मेरा व्याह न हो, और उसे मरी जान मैं उसकी ढूँढ़ढाँढ़ न करूँ। इसीलिए ये सब बातें की गई हैं।'

र०—'भला यह तो कहिये कि बिपिन बाबू की लड़की इस गूढ़ कुमन्त्रणा में है या नहीं ?'

इस प्रश्न के उत्तर देने के पूर्व उमेश के मुख पर घृणा और दुःख के चिह्न झलक आये। कुछ उदासी-सी आ गई और मानो बड़े कष्ट से उन्होंने कहा—'हाँ, कुछ तो सन्देह होता है।'

र०—'अच्छा, यह सन्देह कब से आप को हुआ ?'

उमे०—'जब से मैंने कामिनी के सोने के घर में जाकर भली प्रकार हत्या के स्थान को देखा और उन चिन्हों पर विचारा जो वहाँ दिखाई देते थे।'

र०—'तो इसके टोह में आप भी तन मन से लग रहे हैं ?'

उमे०—'मैं बड़े गुप्त भाव से चोर की नाईं छिप-छिपाकर कामिनी के शयनगृह में गया और जहाँ तक मेरी बुद्धि ने सहायता दी, यह निश्चय कर लिया है कि यथार्थ में वहाँ हत्या नहीं हुई थी।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह सुन रघुनाथ के होठों पर कुछ छिपी-सी मुस्कुराहट झलकी।

र०—'आपनें जो अनुमान किया है, कुछ ठीक जँचता है ?'

उर्मे०—'तुम्हारे कहने के ढंग से तो यह झलकता है मानो मेरा अनुमान ठीक नहीं है।'

र०—'मेरा यह अनुमान है कि कामिनी उन षड्यंत्रकारियों से मिली हुई नहीं है।'

उर्मे०—'मिली हुई नहीं है, इसका तुम्हें कौन-सा प्रमाण मिला है ? जरा मुझे समझा दो। मैं जीते-जी तुम्हारा बड़ा एहसानमन्द रहूँगा।'

र०—'यह कोई बड़ी कठिन बात नहीं है; जरा बुद्धि दौड़ा कर देखने से ही आप समझ सकते हैं। सोचिये, यदि कामिनी की भागने की इच्छा होती तो वह यों क्यों भागती ? अन्य पक्के धूर्तों की नाईं धूर्तबाजी न खेलती ? समझने की बात है कि पहले तो अबला, उस पर भी कन्या, एक भले घर की लड़की इससे यह निश्चय जानो कि यह धूर्तता में मिली हुई नहीं है। बदमाशों के कुचक्र में फँसा ली गई है। एक बात मैं और भी कहे देता हूँ कि जिन धूर्तों ने यह उपद्रव मचाया है, उन्होंने पहला हाथ बिपिन बाबू की कन्या पर मारा है और दूसरा शिकार भी किया ही चाहते हैं।'

उर्मे०—'दूसरा कौन ! बिपिन बाबू ?'

र०—'नहीं।'

उर्मे०—'तो ?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'जो पूछे वहीं।'

उमे०—'मैं ?'

यह बात उमेश के जी में जँची नहीं। हँसकर उसने कहा—'मैंने इस मामले की बहुत कुछ छानबीन की है। इससे कामिनी के बारे में मैंने जो कुछ सोचा है मेरी समझ में वही ठीक है। भला, वे दुष्ट मुझे मारकर क्या करेंगे? इससे उनको कितने रुपये हाथ लगेंगे ?'

र०—'यह तो आप जानतेही हैं कि आप के दादा जो अपनी सम्पत्ति के बारे में लिख गये हैं। अर्थात वह आपको और कामिनी को अपना उत्तराधिकारी बना गये हैं। अब बिचारिये कि कामिनी को स्वार्थी दुष्टों ने इस प्रकार मिटाया। अब रह गये आप; अब सर्वस्व के अधिकारी। बस, आप पर भी हाथ माँज लेंगे तब उस सम्पति का स्वामी कौन होगा ?'

उमे०—'मेरा तो कोई पट्टीदार नहीं है। दूर के नाते में केवल एक कामिनी ही थी।'

र०—'यह खूब! इधर-उधर दूर तक सोच-विचार लिया है न ?'

उमे०—'हाँ! मेरे ध्यान में तो अब कोई नहीं है। तो क्या कोई मेरा रिश्तेदार गढ़ा जायगा ?'

र०—'उर्मिला कामिनी की ममेरी बहन है न ?'

उमे०—'हाँ।'

र०—'उसके साथ तुम्हारा कोई सम्बन्ध है ?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उमे०—'मेरा तो कोई नाता नहीं है।'

र०—'अच्छा मैं एक प्रश्न करता हूँ, आप क्रोध न कीजियेगा; उस प्रश्न के अन्दर कुछ गूढ़ मतलब भरे हैं। इसलिए यदि आप साफ़-साफ कहें तो मैं पूछूँ।'

उमे०—'हाँ, हाँ, निधड़क, जो जी में आवे पूछिये, मैं बिना छिपाव के कहूँगा।'

र०—'कभी उर्मिला पर आपका चित्त डुला था और उसे भी यह विदित हुआ था? इसे जरा खूब स्मरण करके कहिए।'

उमे०—'मैं निश्चय करके कहता हूँ कि मेरा प्रेम उर्मिला पर आज तक कभी हुआ ही नहीं। सदा से उर्मिला मुझसे बड़े भाई का-सा बर्ताव रखती रही। उर्मिला लड़की है, इसलिए मैं कभी उससे बहुत कुछ बात-चीत भी नहीं करता था और उसे अपनी छोटी बहन मानता रहा।'

र०—'आपके मरने से तो उर्मिला की किसी प्रकार भलाई नहीं हो सकती?'

उमे०—'मेरी समझ में तो कुछ नहीं।'

कुछ सोच-विचारकर रघुनाथ ने कहा—'आप जरा मेरे साथ तो आइये।'

उमे०—'कहाँ?'

र०—'मैं आपको एक मुर्दा दिखाऊँगा।'

रघुनाथ की बात सुन उमेश सिहर उठा। रूँधे कण्ठ से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसने पूछा—'क्या तुम्हें मृत-देह मिला है ? तो क्या वह सचमुच मारी गई ?'

र०—'चलकर देखें तो कुछ मालूम हो।'

यह सुन बिना कुछ कहे उमेश रघुनाथ के पीछे हो लिया। कुछ दूर आगे चल जमींदार की हवेली के निकटवाले बगीचे में दोनों पहुँचे। आगे-आगे रघुनाथ और कुछ पीछे उमेश बगीचे के एक सघन निर्जन स्थान में पहुँचे। चलते-चलते रघुनाथ ठमका और मुड़कर उमेश से बोला, 'कहिये उसके देखने में आप हिचकेंगे तो नहीं ?'

कुछ सोचकर उमेश ने कहा—'हाँ देखूँगा।'

पास की एक झाड़ी में से रघुनाथ एक लाश घसीट लाया। सामने एक विकट शव को देखते ही पहले तो उमेश का सर्वाङ्ग काँप उठा और नेत्र झप गये। इतने ही में रघुनाथ ने अपनी लालटेन का ढकना हटाकर उस पर प्रकाश डाला। वह लाश कई दिन की होने के कारण फूल गई थी और सड़-सड़ाकर ऐसी भयानक और दुर्गन्धित हो गई थी कि उधर मुँह नहीं किया जाता था।

रघुनाथ ने कहा—'जरा ध्यान से देखिये तो सही।'

उमेश बहुत कुछ जी को सँम्हालता था पर देखने को जी नहीं चाहता था। रघुनाथ ने कहा—'अब देरी न कीजिये। चट-पट देखिये, मौका देरी करने का नहीं है।' तब तो बहुत कुछ साहस कर उमेश ने उसके निकट जाकर ध्यान से देखा और कुछ सोचने लगा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'आपने कुछ पहचाना यह कौन है ?'

उ०—'भाई, मेरे तो कुछ ध्यान में नहीं आता।'

र०—'क्या तुमने कभी भी इसे नहीं देखा था ?'

उ०—'मेरी समझ में तो मैंने इसे कभी नहीं देखा।'

र०—'फिर ध्यान से देखिये।'

उ०—'मैंने तो बहुत कुछ सोचा, पर मेरे ध्यान में कुछ भी नहीं आता।'

उमेश का उत्तर सुनकर रघुनाथ के मुख पर कुछ उदासी-सी छा गई और उसने एक ठंढी साँस ली।

उ०—'आप ने कुछ पहचाना है ?।'

र०—'अभी तक तो नहीं।'

उ०—'इसे मारा किसने ?'

र०—'यह पीछे कहेंगे।'

इतना कहकर तुरंत रघुनाथ भूमि पर लेट गया और फुसफुसा कर उमेश से बोला—'आप भी मेरे साथ लेट जाइये, इधर कोई आ रहा है।'

रघुनाथ और उमेश दोनों मुँहके बल घिसकते हुए पासवाली झाड़ी में घुसे और जहाँ वह मुर्दा पड़ा हुआ था उसी के पास पड़ रहे।

उमेश के सुनने में तो कुछ भी नहीं आया था, पर न जाने क्योंकर रघुनाथ के कान में पाँवों की आहट सुन पड़ी। यही

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोचता हुआ उमेश बार-बार रघुनाथ की ओर देख रहा था। उमेश की उम्र तो अधिक न थी तथापि वह धैर्यमान और ऐसा चतुर था कि चेहरे की आकृति देखकर उसे हृद्गत भाव का अनुमान हो जाता था। जब उसने देखा कि इस अवस्था में भी इसके मुँह पर प्रसन्नता छा रही है, तब उसे निश्चय हुआ कि यह सामान्य मनुष्य नहीं है वरन् कोई असाधारण बुद्धि-सम्पन्न पुरुष है।

रघुनाथ का अनुमान ठीक निकला। कुछ देर के उपरान्त, धीरे-धीरे दबे पाँवों कोई व्यक्ति मुर्दे की ओर आने लगा। ज्यों-ज्यों वह समीप आता था, त्यों-त्यों रघुनाथ के मुँह पर प्रसन्नता की आभा अधिक चमकती जाती थी।

देखते-देखते वह मनुष्य उस लाश के पास आकर खड़ा हो गया और निहार-निहार कर उस लाश को देखता रहा। देख-भाल कर बोला—'हाय! बेचारा मारा गया। गोविन्द मुझे मुझे बहुत मानता था; बड़ा आज्ञाकारी और विश्वासी था; पर दुर्भाग्य! काम के आरम्भही में मारा गया।' इतना कह कुछ क्षण निस्तब्ध रहकर न जाने वह क्या सोचता रहा। क्षण भर के उपरांत फिर बोला—'न जाने क्यों जिन लोगों ने इसे मारा था, जला नहीं दिया? अब मैं क्या करूँ? अकेला इसे अब यहाँ से लेकर कैसे जाऊँ? और यहाँ फूँक भी नहीं सकता।'

इतना कहकर फिर वह चुप हो घुटने टेक उस मृतक के पास

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बैठकर कुछ सोचता रहा। सोचते-सोचते उठ खड़ा हुआ और आगे बढ़ा। दो-चार कदम जाकर फिर लौट आया। चिबुक पकड़ कर धीरे-धीरे कहने लगा--'क्या इस हत्या के मामले में वह लोग भी हैं?' यह कह चटपट पाँव बढ़ाता हुआ वहाँ से चला गया।

आगन्तुक जब दृष्टि के बाहर निकल गया, तब रघुनाथ उठ खड़ा हुआ और उमेश से बोला--'अब आप घर जायँ, मैं फिर किसी समय मिलूँगा, पर सावधान आज जो कुछ देखा-सुना है, इसकी चर्चा किसी से भी न करना। जो कहीं जरा भी कोई बात किसी के भी कान में पड़ी तो फिर पता कुछ भी नहीं लग सकता।'

झाड़ी के अन्दर से निकल बाहर आकर रघुनाथ का हाथ पकड़ उमेश बोला—'मैंने पहिले कहा था कि इस लाश को मैं नहीं पहिचानता। परन्तु अभी यह जो आया था, अनुमान होता है कि मैंने इसे पहिले कहीं देखा है।'

चौंककर रघुनाथ ने कहा—'हाँ?'

उ०—'कब कहाँ देखा है, यह याद नहीं आता। पर यह कह सकता हूँ कि इसका मुँह पहचाना-सा जान पड़ता है।'

र०—'अच्छा, जरा ध्यान देकर सोचो तो सही।'

उ०—'नहीं! सुध नहीं आती!'

र०—'किसी पहचाने हुए मनुष्य के चेहरे-सा तो इसका चेहरा नहीं है?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आग्रह से उमेश ने कहा—'हाँ, हाँ, ठीक है। मैंने इसे कहीं नहीं देखा है, पर इस सूरत का आदमी देखा है!'

र०—'फिर जरा विचारो।'

कुछ देर तक सोचते-सोचते चौंककर उमेश बोला—

उ०—'उः! क्या आश्चर्य?'

र०—'क्या! क्या! कुछ कहो भी!

उ०—'क्या कहूँ? हे ईश्वर!'

र०—'याद आया? क्यों?

उ०—'हाँ, जी याद आया।'

र०—'कौन?'

उ०—'मुझे तो अपने पिता—जैसा मालूम होता है?'

र०—'इसे देखकर पिता याद आ गये?'

उ०—'हाँ, मैं सच कहता हूँ। इसका और मेरे स्वर्गवासी पिता का ज्यों-का-त्यों एकही-सा मुँह है।'

विस्मय व्यंजक स्वर से रघुनाथ ने कहा—'जो मैंने सोचा था, वही हुआ। मेरा अनुमान व्यर्थ न हुआ। अब जाकर पता लगाओ।'

उ०—'किसका पता?'

र०—'कामिनी की हत्या का।'

उ०—'कामिनी का कैसा? जरा समझाकर कहो, मेरी समझ में नहीं आया।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'अभी समझाने का समय नहीं है, पर इतना कहे देता हूँ कि अब मुझे यह निश्चय हो गया कि बिपिन बाबू की लड़की मारी नहीं गई वरन् जीती है। बस, इसी ढंग पर खोज करूँगा। ठीक आप के पिता की तरह इसकी सूरत है? शाबास! अब रहस्य खुला! अच्छा, आप अब घर जायँ, मैं जल्दी एक अद्भुत खबर लेकर आप के पास आता हूँ।'

उमेश से और कुछ न कहकर जिधर वह आगन्तुक गया था, उसी ओर लपका हुआ रघुनाथ चला। जाते-जाते उसे आदमी के चलने की आहट सुन पड़ी। जैसे बिल्ली अपने शिकार का पीछा किया करती है, उसी तरह रघुनाथ ने भी उसका पीछा किया।

आधीरात बीत गई थी, घोर अन्धकार छा रहा था। प्रकृति महा निस्तब्ध हो रही थी। कहीं किसी प्रकार का शब्द नहीं सुन पड़ता था। चारों ओर सन्नाटा छाया था। प्रकृति घोर सुषुप्ति अवस्था में पड़ी हुई थी। ऐसे समय में एक पीपल के वृक्ष के तले एक मनुष्य-आकृति रघुनाथ की तीक्ष्ण-दृष्टि में दीख पड़ी। कुछ क्षण तक जहाँ की तहाँ वह अचल खड़ी रही। फिर न जाने क्या सोच-विचारकर उसने एक लम्बी सीटी दी, मानो किसी को संकेत किया हो।

इस इङ्गित शब्द को सुनते ही तुरत रघुनाथ भूमि पर अपने ढंग से लेट गया। कुछ ठहरकर फिर उसने सीटी दी। देखते-देखते एक लड़की उसी स्थान पर पहुँची और पीपल के पेड़

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के नीचे जो खड़ा था, उसके निकट जाकर न जाने क्या बोली और फिर जिस ओर से आई थी उसी ओर लौट गई। हरे रंग की सिर से पाँवों तक वह एक चादर ओढ़े हुई थी जिसके अन्दर उसका सारा अंग छिपा हुआ था। पीपल तले वाले मनुष्य से इसमें क्या बात-चीत हुई, वह रघुनाथ के कानों तक न पहुँची। एक तो अँधेरी रात, दूसरे सिर से पाँव तक वह ऐसा चादर ओढ़े थी कि रघुनाथ को उसकी सूरत न दिखाई दी। पेड़ के तले से जब वह कुछ दूर निकल गई, तब रघुनाथ भी उसके पीछे हो लिया और उससे कुछ दूरी पर पीछा किये चला गया। अनजाने एक पुरुष के पीछे न जाकर इस बालिका का पीछा करने में अधिक लाभ समझ उसी के पीछे हो लिया। कुछ दूर तक उसके पीछे जाते-जाते रघुनाथ को यह निश्चय हो गया कि यह जमींदार की हवेली की ओर जा रही है। अनेक प्रकार की चिन्ता करता हुआ रघुनाथ भी उसी के पीछे-पीछे चला जाता था; अचानक पीछे से किसी ने आकर रघुनाथ का गला दबाया और दबाये हुए सामने आकर मुँह के पास एक पिस्तौल ले जाकर बोला—'कौन है रे! तू इतनी रात को अकेला यहाँ क्या करता है? कहाँ से आया है? और कहाँ जाता था?' इस प्रश्न का बिना कुछ उत्तर दिये रघुनाथ ने एक ही झटके में उससे गर्दन छुड़ा ली और इस तेजी से वहाँ से भागा कि कुछ दूर निकलकर तुरत भूमि पर लेट गया। यह काम उसने इस तेजी और फुर्ती से किया था कि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आक्रमण करनेवाला रघुनाथ का पीछा करने पर भी कुछ पीछे रह गया और दौड़ा-दौड़ा ज्योंही उस स्थान पर पहुंचा, त्योंही रघुनाथ ने पड़े-पड़े एक ऐसी अडंगी मारी कि धम्म से उसने भूमि पकड़ ली। तुरत रघुनाथ ने कूदकर उस पर सवारी बाँध ली और कनपटी ताक कर ऐसे जोर से एक घूँसा जमाया कि चोट के साथही वह मूर्छित हो गिर पड़ा।

उसे उसी मूर्छित अवस्था में वहाँ ही छोड़कर रघुनाथ ने फिर उस लड़की का पीछा किया। कुछ दूर जाकर वह लड़की जमींदार की हवेली के फाटक की खिड़की खोल अन्दर चली गई। रघुनाथ ने उसका पीछा तो न किथा, पर उस वृत्त के पास आया, जहाँ से गत रात में हवेली के अन्दर गया था। उस समय घोर अँधियारी छा रही थी। हाथ-को-हाथ नहीं सूझता था। कहीं किसी जीव-जन्तु का शब्द भी न सुन पड़ता था। पहले दिन के ढंग पर रघुनाथ उस पीपल के वृत्त पर चढ़ा, जो एक खिड़की के पास ही था और उसी के सहारे से वह चुपचाप पूर्ववत् खिड़की के पास जा खड़ा हुआ और कान लगाकर सुनने लगा कि कदाचित् कोई कुछ बात-चात कर रहा हो। पर कुछ न सुन पड़ा। तब रघुनाथ ने अपनी चतुराई से खिड़की के पल्ले खोल दिये और तुरत अन्दर जा पहुँचा। भीतर जाकर रघुनाथ ने अपनी लालटेन का कु छ थोड़ा-सा उजेला किया तो क्या देखता है कि उर्मिला पलँग पर घोर नींद में पड़ी सो रही है। रघुनाथ ने चारों ओर भली

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रकार से देख-भाल की। पर वह हरी ओढ़नीवाली कहीं न दिखाई दी। फिर रघुनाथ पलँग के पास पहुँचा और नाक के पास हाथ ले जाकर देखा तो तेजी से साँस चल रहा था। वह घोर निद्रा में पड़ी सो रही थी। जब रघुनाथ ने अपनी हथेली से उसके पाँवों के तलवों को भली प्रकार देखा तो गर्म पाया। इससे उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। इतनी दूर रात के समय नंगे पाँवों जो बालिका चली है, उसके तलवे बर्फ-जैसे ठण्डे होने चाहिये थे; परन्तु इसके जैसे गर्म है, उससे यही निश्चय होता है कि यह वह नहीं है। नाक के पास हाथ रखकर देखा तो नियमित साँस चल रहा है और वह घोर निद्रा में सो रही है। तब रघुनाथ को यह निश्चय हो गया कि यह वह नहीं है जिसके पीछे हम आये हैं। ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है, त्यों-त्यों रहस्य और भी गूढ़ होता चला जाता है। देखें भविष्य में क्या होता है।

रघुनाथ ने अपनी लालटेन को खोली के अन्दर किया और धीरे-धीरे उर्मिला के पलँग के पास से उठ खिड़की के पास आया और जिस प्रकार से चढ़ा था, वैसेही उतर बगीचे में आ उस मनुष्य की खोज में चला जिसे घूँसा मारकर पटक आया था। पथ में जाते-जाते रघुनाथ मन-ही-मन विचारने लगा—'वह लड़की जिसके पीछे-पीछे मैं आया था। कौन है?' रघुनाथ उस पेड़ के नीचे पहुँचा जहाँ उस मनुष्य को अचेत छोड़ आया था। पर अब वहाँ कोई भी न था। वह शायद उठकर चल दिया होगा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पेड़ के नीचे खड़ा रघुनाथ न जाने क्या सोच रहा था कि इतने ही में फिर पहिली सीटी बजी। इसका शब्द जमींदार के मकान के अन्दर से आया। रघुनाथ को न आलस्य है, न थकावट है; न खाना है, न सोना। वह इसी उलझन में पड़ा था। बस, शब्द कान में पड़ते ही उसी ओर चला। पहले दिन विपिन बाबू से जिस बैठक में मिला था, उसी के एक खिड़की के सामने जाकर खड़ा हुआ, जहाँ से ठीक खिड़की का सामना पड़ता था। मकान के अन्दर टिमटिमाता हुआ एक प्रदीप बल रहा था। उसी के उजेले से उस मूर्ति को निहार चकित और विस्मित हो गया। उसने देखा कि एक सुकुमार सुन्दर बाला नीलाम्बर पहिरे दोनों चौखटों पर हाथ धरे खड़ी है। कुछ क्षण के उपरांत उसने अपनी कोमल उँगलियों से नीचे का होंठ दबाकर सीटी दी। जिससे अनुमान हुआ कि इसने पहिली सीटी का कदाचित् उत्तर दिया हो। रघुनाथ के चित्त में यह सन्देह हुआ कि आज की रात को अवश्य इस मकान में कुछ दूसरा भयानक उपद्रव होनेवाला है और उसी का उद्योग हो रहा है।

रघुनाथ पेड़ों के एक ऐसे झुरमुट में छिपा खड़ा था कि सहज ही किसी की उस पर दृष्टि नहीं पड़ सकती थी। ऊपर से उस सीटी के बजते ही कुछ क्षण में एक मनुष्य उसी बगीचे के किसी कोने से निकलकर उस खिड़की के सामने आ खड़ा हुआ और न जाने संकेत में क्या बातें की। उसके उपरान्त ऊपर से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एक रस्सा लटका और वह मनुष्य उसके सहारे ऊपर चढ़ खिड़की के पथ से अन्दर चला गया। तब फिर वह पूर्ववत खिड़की में आई और कुछ ठहरकर उसने सीटी दी, जिसके सुनते ही दो मनुष्य खिड़की के नीचे आये और न जाने क्या आपस में बातें कर रस्से के सहारे उनमें से एक ऊपर चढ़ गया और उसके चढ़ने के उपरांत सीटी बजी जिसे सुनकर तीसरा भी चढ़ा। यों ही वह एक-एक को चढ़ाती गई और सीटी बजाती गई। जब पाँच मनुष्य ऊपर पहुँच गये, तब घर के अन्दर दीपक जो बल रहा था, बुझा दिया गया; घोर अँधेरा छा गया। अब कहीं भी कुछ नहीं दीखता था।

धीरे-धीरे रघुनाथ भी उस खिड़की के नीचे पहुँचा और उसी रस्से को पकड़ बेधड़क ऊपर चढ़ गया। खिड़की के अन्दर जाकर देखा तो चारों ओर घना अँधेरा छा रहा है। कहीं भी कुछ नहीं दीखता था। रघुनाथ चुपचाप एक कोने में खड़ा हो रहा और यह आशा किये था कि कदाचित किसी की कुछ बोल-चाल सुनाई पड़े। परन्तु सिवा निस्तब्ध अंधकार के वहाँ कुछ भी न था।

रघुनाथ जहाँ खड़ा था, वहाँ औंधा लेट गया और साँप-जैसा रेंगने लगा। पेट के बल रेंगता हुआ वह उस कोठरी से बाहर निकल दूसरे घर में जा खड़ा हो गया। रघुनाथ ने अपनी बुद्धि से यह अनुमान कर लिया कि संभव है इसी घर में वे चारों आदमी होंगे। रघुनाथ धीरे-धीरे दबे पाँव से साँस रोककर उसमें चारों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ओर घूमने लगा। घूमते हुए उसने यह स्थिर कर लिया कि कोठरी के किस स्थान में वह खड़ा है। रघुनाथ के लिए यह कैसा कठिन समय था! यदि उन लोगों को विदित हो जाता कि सिवा उन लोगों के दूसरा एक व्यक्ति वहाँ आया हुआ है, तो क्या कुछ भी सन्देह है कि वे उसे फिर जीता छोड़ देते! यह रघुनाथ भी जान चुका था कि अब प्राण बचना बहुत ही कठिन है। यह भी रघुनाथ को अनुमान हुआ था कि इस अँधेरी रात में जो इस ढँग से यह चार आदमी यहाँ आये हैं तो अवश्य कोई भयानक कार्य ही करना विचार के आये होंगे। जैसे बिल्ली अपने शिकार के ताक में दम साध कर बैठती थी, रघुनाथ भी उन चारों पर आक्रमण करने का अवसर देख रहा था। देखते-देखते अचानक धम्म से उन चारों के आगे जा कूदा।

कूदने के साथ ही जो सामने खड़ा था, उसे औचक में एक सजोर ऐसा धक्का दिया कि वह धक्के के साथ ही भूमि पर गिर पड़ा। उसके गिरते ही चट रघुनाथ ने उसका मुँह और गला दबाया और तुरत उसके हाथ पाँव बाँध लिये और मुँह में कपड़ा ठूस कर उसे बोलने या हिलने-डुलने से सम्पूर्ण विबस कर छोड़ दिया।

चोर, डाकू, खूनियों को गिरफ्तार करने में कपड़ा, रस्सी, बेड़ी, हथकड़ी आदि जिन-जिन चीजों की आवश्यकता होती है, रघुनाथ सदा उन्हें अपने साथ रक्खा करता था। ज्योंही रघुनाथ उसे बाँध चुका, किसी मनुष्य-कण्ठ के आर्तनाद का शब्द उसके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कान में पड़ा। इस शब्द से रघुनाथ को यह परिज्ञात हुआ कि बदमाश लोग किसी का प्राण ले रहे हैं। जिस ओर से यह शब्द आया, रघुनाथ शीघ्र दबे पाँव उसी ओर चला। वहाँ पहुँचते ही गौर करने लगा और मार खाने वाले के कंठ-निसृत घों-घों का शब्द सुन पड़ा। इससे रघुनाथ को निश्चय हुआ कि ये निठुर बदमाश वहाँ भयानक निर्दयता कर रहे हैं। पर अब रघुनाथ को यह विचारना पड़ा कि इस घर में वे लोग किसकी हत्या करने में प्रवृत्त हुए हैं। कुछ विचारकर रघुनाथ ने चित्त में निश्चय कर लिया कि हो न हो, ये निर्दयी बिपिन बाबू की हत्या करने में प्रवृत्त हुए हैं।

ऐसा अंधकार उस स्थान में छा रहा था कि हाथ की उँगलियाँ भी नहीं सूझती थीं। अब रघुनाथ को यह चिन्ता हुई कि जब कुछ सूझता ही नहीं है, तब क्योंकर शत्रु-मित्र का निर्णय किया जाय। अन्त में उससे न रहा गया और एक साथही ललकार उठा—'खबरदार, आप घबराइये नहीं, हम सब लोग आप की मदद के वास्ते आ गये हैं। अभी बदमाश को मारते हैं।' रघुनाथ का इतना ललकारना था कि तुरत उस स्थान में सन्नाटा छा गया। कुछ ठहर कर फिर रघुनाथ ने पूछा—'बिपिन बाबू! आप किधर हैं?' किन्तु कुछ उत्तर नहीं मिला। तब तो रघुनाथ के चित्त में शंका हुई कि बिपिन बाबू अब जीते नहीं है।

फिर रघुनाथ पेट के बल उस घर में रेंगने लगा। दो पाँवों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और एक हाथ से तो वह घिसकता था और दाहिने हाथ में छः गोलियों का तमञ्चा लिये हुए था। अब बिपिन बाबू के ढूँढ़ने में लगा कि देखें वह कहाँ हैं; जीते हैं या मर गये। घूमते-घूमते रघुनाथ को जान पड़ा कि जिस प्रकार वह घूम रहा है, उसी प्रकार दो अन्य आदमी घूम रहे हैं। कैसी भयायक बात है। घोर अन्धकारमय घर के अन्दर तीन हत्यारे एक मनुष्य का बध कर रहे हैं!

उस अन्धेरे स्थान में जैसे रघुनाथ आततताइयों को ढूँढ़ रहा था, वैसेही वे लोग उसे ढूँढ़ते फिरते थे। संभव है, शत्रु को मारने में अपने ही दलवालों में से किसी को मार बैठें, इसी सन्देह से वे वार नहीं कर रहे थे।

वे चारो आततताई अवश्य बल-विक्रम आदि में परम निपुण थे; क्योंकि यदि ऐसे न होते तो रघुनाथ की ललकार को सुनतेही भाग निकलते।

कुछ क्षण के उपरान्त रघुनाथ ने सुना। एक ने दूसरे से धीरे से पूछा—'कौन है महेन्द्र!'

'हाँ!'

अब रघुनाथ स्पष्ट समझ गया कि दो आदमी एकही स्थान में हैं।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकादश परिच्छेद

धर्म की जय और अधर्म की क्षय—यह होता ही आया है। यह दृढ़ निश्चय चित्त में ठान रघुनाथ दृढ़ता और साहस से अपना कार्य करने लगा। इसके पहिले वह दो आततायियों का कण्ठस्वर सुन भी चुका था और उनमें से एक का नाम भी जान चुका था।

घर के जिस ओर से वह शब्द सुन पड़ा था, रघुनाथ भी उसी ओर चला। कुछ दूर रेंगने के उपरांत रघुनाथ का स्पर्श किसी मनुष्य के अंग से हुआ। तुरत वह अलग हो गया और जरा ठहरकर पुनः उसने हाथ बढ़ाया और टटोला तो जान पड़ा कि कोई मनुष्य लेटा हुआ है। तब धीरे-धीरे बड़ी साव-धानी से उसने उस पर कई बार हाथ फेरा और हाथ-पाँव टटोले; जो बहुत ही कोमल थे और उसके बदन पर जो वस्त्र था, वह भी महीन और चिकना था। इससे यह निश्चय हो गया कि यह अवश्य बिपिन बाबू ही हैं।

घोर अन्धकार के बीच तीन बलवान अस्त्रधारी बदमाशों से भिड़ जाना कोई सहज बात नहीं है। भिड़ जाने के सिवा ऐसे मौके पर अपना प्राण बचा लेना भी सहज नहीं होता। यह भी रघु-नाथ को अनुमान हो ही गया था कि आततायियों को यह निश्चय हो गया है कि सिवा एक मनुष्य के यहाँ और कोई नहीं आया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है। यदि कहीं वे जान लेते कि यहाँ दो-चार मनुष्य आ पहुँचे हैं, तो उसी समय वे अपने प्राण लेकर निकल भागते। रघुनाथ सोचने लगा कि मैं अकेला हूँ और ये तीन हट्टे-कट्टे अस्त्रधारी हैं, तो कहीं ऐसा न हो कि यहाँ यों ही देरी करते-करते शत्रु उसे पकड़ पावें तो फिर प्राण का बचना बहुत ही कठिन हो जायगा। ऐसा सोच उसने तमञ्चा दाग ही दिया। गोली के छूटते ही एक चमक-सी फैल गई जिससे रघुनाथ को यह दीख पड़ा कि एक कोने में दो मनुष्य छिपे हुए हैं। गोली के छूटने के साथ ही रघुनाथ ने ऐसी फुर्ती की कि तुरत ही दूसरे कोने में पहुँचते ही उसने दूसरी गोली छोड़ दी। दूसरी गोली के छूटते ही बदमाशों में से एक धीरे से बोला कि यहाँ दो आदमी आये हैं। इतना सुनते ही रघुनाथ ने लगातार कई गोली दागी। ऐसे समय में द्वार पर कई लोगों के पैर की आहट मालूम हुई। कुछ क्षण के उपरांत रघुनाथ ने एक परम आश्चर्य-जनक व्यापार देखा।

उस अन्धकारमय घर में कुछ उजेला हो आया, जिससे चौंक-कर रघुनाथ ने पीछे फिरकर देखा तो प्रदीप लिए हुई एक परम रूपवती कन्या द्वार पर खड़ी है। यह वही है जिसने सीटी देकर खिड़की से उन चारों आततादयों को बुलाया था। पास जाकर रघुनाथ ने जो देखा तो वह उर्मिला थी।

इसे देखते ही रघुनाथ के चित्त से एक बड़े भारी सन्देह का बोझ टला; परन्तु साथ ही यह आश्चर्य हुआ कि इस छोटी-सी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लड़की में ऐसी अद्भुत चतुराई कहाँ से आई ! उस घोर अन्धकार रात्रि में उस बगीचे में उर्मिला को देख उसका पीछा करना; कुछ क्षण के उपरांत उन हत्यारों से उर्मिला का मिलना और तुरत ही अपने शयनगृह में आ गहरी नींद लेना, फिर झरोखे में से उन दुष्टों को बुलाना, आदि बातें स्मरण करके रघुनाथ को बड़ा ही विस्मय हो रहा था, जिससे कुछ क्षण तक वह स्तब्ध रह गया। इतने ही में उन तीनों आततायियों ने अपने चौथे साथी को बन्धन-मुक्त कर दिया और देखते-देखते सब के सब जिधर से आये थे, तुरत निकलकर भागे और इधर उर्मिला चिल्ला उठी; जिसके शब्द को सुन दास-दासियों की भीड़ जमा हो गई।

रघुनाथ को देख उर्मिला चिल्लाकर बोली—'तुम कौन हो ? और यह सब क्या मामला है ?'

रघु०—'मैं कौन हूँ, यह तो पीछे मालूम होगा, पर जरा प्रदीप लेकर अन्दर आओ, तो मालूम हो कि क्या मामला है।'

प्रदीप लेकर भीतर आते ही उर्मिला ने देखा कि बिपिन बाबू रक्त से लथपथ हुए मूर्छित पड़े हैं। देखते ही उर्मिला चीखें मार-मार—'हाय मामा ! हाय मामा !' कह रोने लगी। उसके हाथ से प्रदीप लेकर रघुनाथ बिपिन बाबू के आगे बैठ गया। उर्मिला ने रघुनाथ से बड़े आग्रह से पूछा कि मामा की यह गति किसने की ? इसके उत्तर में रघुनाथ ने कहा कि जिन लोगों को तुम खिड़की के राह से चढ़ा लाई थीं, उन्हीं का यह कर्म है। सुनते ही

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

टूटे कण्ठ से वह बिलबिलाकर रोने और कहने लगी—'हाय हाय ! क्या सचमुच इन लोगों ने मेरे मामा को मार डाला ? हाय ! अब मैं क्या करूँ !' इत्यादि करुण शब्दों से उसने रोने और विलाप करने का रूपक बाँधा, मानो उसे कुछ इन उपद्रवों की खबर ही नहीं है। वरन् मामा के शोक से उसका हृदय ऐसा सन्तप्त हो रहा है कि उसकी लपट से झुलस रही है। रघुनाथ ने उसकी ओर देख डपटकर कहा—'हाँ, हाँ; सब्र करो तुम्हारा मतलब सिद्ध हो गया है।'

अब तक उर्मिला ने रघुनाथ का मुँह निहारकर नहीं देखा था, पर इन मर्मभरी शब्दों को सुनते ही वह चौंककर तिउरी बदल रघुनाथ की ओर देखकर बोली—'तुम क्या कह रहे हो ?'

रघु०—'क्या तुम अभी तक नहीं समझी कि मैं क्या कह रहा हूँ ?'

उर्मिला—'जरा पास आकर देखो तो मामा जीते हैं या नहीं ? फिर तुम्हें जो कुछ कहना या पूछना हो पूछ लेना। यह समय तुमसे बात करने का नहीं है।'

व्यङ्ग-स्वर से रघुनाथ ने कहा—'मुझे इस घर में देखकर तुम चौंकी तो न होगी ?'

इसका भी उर्मिला कोई उत्तर न देकर उस समय के उचित कार्य में लगी। कभी नाक की सांस और कभी हृदय, कभी हाथ-पाँवों को टटोल कर विकल होने लगी। रघुनाथ के चित्त में उर्मिला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की ओर से बड़ा ही सन्देह हो रहा था; परन्तु इस समय की उसकी ढिठाई, चतुराई और धीरज को देख मन-ही-मन उसकी प्रशंसा भी कर रहा था।

उर्मिला की रघुनाथ से यह पहली भेंट है। उसका अपूर्व रूप देखकर रघुनाथ विस्मित और मोहित हो गया। मनुष्य के रूप-रंग तथा आकृति को देखकर रघुनाथ उसके स्वभाव आदि भीतरी बातों को जान लिया करता था। उर्मिला के रूप-रंग और आकृति में रघुनाथ को कहीं भी कोई लक्षण आतताईपन का न दीख पड़ा। पर, उसके चित्त की दुविधा न मिटी। कुछ क्षण के उपरांत ढाढ़स बाँधकर सहसा उर्मिला बोल उठी—'मामा अभी जीते हैं।' बाद उसने एक सेवक की ओर देखकर कहा—'रामचरन! तू जल्दी से डाक्टर बाबू को बुला ला और किसी चपरासी से कहता जा कि वह उमेश बाबू को शीघ्र बुला लावे।'

रघुनाथ ने गम्भीरता से कहा—'डाक्टर बाबू को तो जल्दी लाओ, पर उमेश बाबू के बुलाने की कोई आवश्यकता नहीं है।'

रघुनाथ की बात सुनते ही मारे क्रोध के उर्मिला का सारा शरीर थहरा उठा। नथुने फड़कने लगे, और तिउरियाँ चढ़ गईं। बड़े क्रोध से उसने कहा—'तुम कौन हो, हमारे हुक्म पर हुकूमत करते हो? रामचरन, तू कुछ मत सुन, जो मैंने कहा है, सो कर।'

राम०—'लो, मैं तो चला और एक सवार उमेश बाबू के पास भा भेजे देता हूँ।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह कहकर जैसे ही रामचरन कुछ दूर आगे बढ़ा कि तुरत रघुनाथ ने लपककर उसका हाथ पकड़ घुड़की देकर बोला—'देख, डाक्टर बाबू को तो तुरत बुला ला और इधर देख जो तुम उमेश को बुलाने के लिए किसी को भेजा तो (तमञ्चा दिखाकर) एक ही गोली में तुम्हारा प्राण ले लूँगा ।'

रघुनाथ की डपट सुनकर और उसकी भयङ्कर मूर्ति देखते ही उसके प्राण उड़ गये। घबराकर उसने कहा—'नहीं साहब, मैं न जाऊँगा।' यह कह वह डाक्टर को बुलाने चला गया।

डाक्टर बाबू के आने के पूर्व ही रघुनाथ प्रदीप लेकर बिपिन बाबू के पास गया और उनकी भली प्रकार से देख-भाल करने लगा। उनके सिर में एक बड़ी गहरी चोट आई थी, जिससे उन्हें मूर्छा आ गई थी। नाड़ी मन्द-गति हो गई थी। सारा शरीर शिथिल था। रघुनाथ ने चटपट बिपिन बाबू के सिर में जहाँ चोट लगी थी, जल के छींटे दिये और गर्दन की किसी एक नस को अँगूठे से मलने लगा। साथ ही बिपिन बाबू ने एक लम्बी साँस ली, और आँखें खोल दीं। तब तो रघुनाथ उठ खड़ा हुआ और उर्मिला से बोला—'देखो सावधान अब से बिपिन बाबू के प्राण की जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है।' यह कह चटपट वह वहाँ से चलता हुआ।

रघुनाथ ने यह विचार लिया था कि बहुत से लोगों ने मिल-कर उपद्रव करने की सलाह ठानी है, और जमींदार के मकान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के पास ही कहीं-न-कहीं उन-लोगों ने अपना अड्डा बाँधा है, और बहुत-से प्राणियों की हत्या करना विचारा है। यह सब बातें केवल उमेश के दादा की सम्पत्ति ले लेने के लिए हो रही हैं। अब रघुनाथ उन लोगों का पता लगाने के लिए वहाँ से चुपचाप अकेला ही चला। डेढ़ दिन में वह इस गूढ़ रहस्य का बहुत कुछ पता लगा लिये था।

इधर जब बिपिन बाबू को होश हुआ तो उस अँधेरे कोठरी के अन्दर किसने उन्हें मारा था; कुछ भी स्थिर न कर सके। पलङ्ग पर शयन-गृह में लेटे-लेटे बिपिन बाबू अपनी कन्या की हत्या के विषय को सोचते-सोचते सो गए थे। उसी निद्रावस्था में न जाने किसने आकर जोर से उनका गला दबाया, जिसकी यातना से बिपिन बाबू की निद्रा भङ्ग हो गई। पर साथ ही कई मनुष्यों ने उनपर आक्रमण किया। उन्होंने अपने बचाने का बहुत कुछ उद्योग किया। पर, सिरपर ऐसी चोट लगी कि इन्हें मूर्छा आ गई और वे गिर पड़े।

द्वादश परिच्छेद

जब बिपिन बाबू को चैतन्यता हुई, तब रघुनाथ वहाँ ही खड़ा था। पर, ज्योंही उर्मिला ने उस ओर दृष्टि उठाकर देखा तो वहाँ उसे रघुनाथ न दीख पड़ा। इससे उसे बड़ाही अचम्भा हुआ कि यह कौन था और सहसा कहाँ अलोप हो गया? घर से बाहर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निकलने के पूर्व रघुनाथ उर्मिला को ललकार कर कह गया था—'बिपिन बाबू की भलाई-बुराई की जवाब-देही तुम्हीं पर है।'

उर्मिला इसका उत्तर देनेही को थी कि इतने में रघुनाथ गायब हो गया। फिर वह उत्तर किसको देती!

होश आनेपर क्षीणस्वर से धीरे-धीरे बिपिन बाबू ने उर्मिला से पूछा—'तू कह सकती है, इस घर में कौन आया था और किसने मुझे ऐसा घायल किया?'

मधुर वचनों से उर्मिला ने उत्तर दिया—'मामा! मैं तो सोई थी, तमञ्चे के शब्द से मैं चौंक उठी और दौड़ कर यहाँ आई तो देखा कि एक बदमाश तमंचा लिए तुम्हारे सामने खड़ा है।'

बि०—'जब तुम घर में आई तब उसने तुमसे कुछ कहा था?'

उ०—'न जाने उसने क्या कहा? मैं कुछ भी नहीं समझ सकी।'

बि०—'तुम्हें याद है, उसने क्या कहा था?'

उ०—'बातें तो नहीं याद है, पर उसके कहने का शायद यह मतलब था कि मैंने तुम्हें मारा है या मैं मारने वाले से मिली हुई हूँ।'

बि०—'वह गया कहाँ?'

उ०—'अभी तो वह इसी दरवाजे के पास खड़ा था, पर न जाने देखते-देखते वह कहाँ लुप्त हो गया। कब, किधर से चला गया, कुछ मालूम ही न हुआ!'

उर्मिला के मुँह से इन बातों को सुनकर कुछ देर तक बिपिन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाबू चुप रहे और मन-ही-मन कुछ सोचते रहे। अनुमानतः पाँच मिनट के उपरान्त सोच-विचार कर बोले—'अच्छा, अब जाओ, सो रहो, जो कुछ होगा सबेरे देखा जायगा।'

डाक्टर के आने के पूर्व ही रघुनाथ ने बिपिन बाबू की मूर्च्छा छुड़ा दी थी। कुछ देर के उपरान्त डाक्टर भी आ पहुँचे और देख-भाल कर उन्होंने इस विषय में बिपिन बाबू से अनेक प्रश्न किये। परन्तु उन्होंने उनका कोई उत्तर न दिया। बिलम्ब करना व्यर्थ समझ डाक्टर साहब नुसखा लिखकर चल गए।

कुछ देर के उपरान्त बिपिन बाबू शयन-गृह से उठकर बैठक में आये, और वहाँ से हुई पिस्तौल लेकर बगीचे की ओर चले।

जमींदार के मकान से कोस भर की दूरी पर एक शराब की दूकान थी। दुकानदार बड़ाही बदमाश था। गाँव के सभी छोटे-बड़े उससे डरते थे; क्योंकि सभी जानते थे कि बेफिक्र, निकम्मे, उचक्के एवं चोर बदमाशों का उसके दूकान पर जमावड़ा रहता है और वह स्वयं भी बड़ाही उदण्ड था। दूकानदार का नाम था गोविन्दसाह। उसको सब लोग साहजी कहा करते थे। कई बार गोविन्द पुलिसवालों के फंदे में फँस चुका था। पर, न जाने क्यों बेलाग छूट जाता था। यह दूकान राजापुर गाँव के मुहाने पर थी। इस दूकान के एक ओर एक हलवाई की दूकान थी। इसे अपने शहरी हलवाइओं की-सी दूकान न समझिये। यह एक खपरैल का मकान था, जिसके सामने की ओर एक मिट्टी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के चबूतरे पर कई एक कठौतों में घुँघनी, जिन पर हरी और लाल मर्चाईयाँ खुसी हुई हैं, तली धरी रहती थीं। एक पर गुड़ के पगे हुए सेव, दूसरे पर वैसेही बुँदिये के लड्डू, तेल की पकौड़ियाँ और बड़े धरे रहते थे; जिन पर बर्रे और मक्खियों का झुण्ड झूमा करता था। दूसरी ओर एक भड़भूजे की दूकान थी।

शराब की दूकान से आध-कोस पर एक रेशम की कोठी थी। उस कारखाने के मजदूर लोग भी इसी दूकान पर आकर शराब पीया करते थे। दिन भर के परिश्रम से जो कुछ उन्हें मिलता था, उसका अधिकांश इसी दूकान पर स्वाहा हो जाता था। इसके सिवा मदिरा पानकर उन्मत्त अवस्था में नित्यही मार-पीट, दङ्गा-फिसाद किया करते थे। उनके हिसाब आइन, कानून या पुलिस संसार में था ही नहीं। इस उपद्रव से भी साहजी को बहुत कुछ लाभ हो जाता था और साहजी पुलिसवालों की मदद भी कर दिया करते थे।

बिपिन बाबू के घर से निकलकर रघुनाथ सीधा इस शराब की दूकान की ओर चला। वह जानता था कि इस सूनसान रात्रि के समय उस दूकान में जाना जान-बूझकर आग में कूदना है। परन्तु वह अपने इरादे का ऐसा दृढ़ था कि काम के आगे प्राण को तुच्छ मानता था। जिस दिन से उसने पुलिस की नौकरी की, उसी दिन से अपने प्राण की ममता छोड़ बैठा था और नित्यही उसे बदमाशों के अड्डों में दिन-रात जाना पड़ता था। इससे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और भी दृढ़ एवं साहसी हो गया था। जिस जिले में वह रहता, वहाँ के बदमाश उसका जल्दी सामना नहीं करते थे। क्योंकि वे जानते थे कि यह भी दूसरा रक्त-बीज ही है। यह मर कर भी नहीं मरता।

शराब की दूकान के पास थोड़ी दूर तक एक झाड़ी थी। यह सीधा उसी में घुसा और वहाँ जाकर उसने अपनी पहली रक्खी हुई एक पोटली निकाली। उसे खोलकर उसमें से अच्छी बङ्गला ढँग की चुनी हुई महीन धोती, दुपट्टा, फुलवर का कुर्ता, जरी का जूता, निकाल कर पहिना और अपने कपड़ों को बाँध कर वहाँही रख कुछ गुप्त अस्त्र-शस्त्र लेकर अपनी सूरत बदल धीरे-धीरे उस शराब की दूकान की ओर चला।

रात दो पहर बीत चुकी थी। चारों ओर अन्धकार और सन्नाटा छा रहा था। कहीं कोई चलता-फिरता नहीं दीखता था। केवल उसी दूकान में टिमटिमाता हुआ एक प्रदीप बल रहा था। रघुनाथ ने द्वार पर जाकर कई बेर किवाड़ खटखटाया। कुछ देर तक तो किसीने कुछ उत्तर न दिया; पर भीतर जो प्रदीप बल रहा था, वह सहसा बुझ गया। रघुनाथ ने द्वार में धक्का जोर से दिया। कुछ क्षण के उपरान्त रघुनाथ को किसी के पाँव की आहट सुन पड़ी। दूकान का प्रदीप फिर बल उठा। द्वार खुल गया। एक भयानक मूर्त्ति रघुनाथ के सन्मुख आ खड़ी हुई। रघुनाथ ने देखा कि एक हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ठ, कृष्णवर्ण पुरुष, लाल-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाल आँखें किये, मैला वस्त्र पहिने, एक हाथ में लालटेन और दूसरे में एक तमञ्चा लिये हुए सामने आ खड़ा हुआ। उसके पीछे एक काला मुसण्ड सण्ड-मुसण्ड हाथ में एक नङ्गा छुरा लिये खड़ा था। बड़े दपट और कर्कश स्वर से उसने पूछा—'क्या चाहिये ?'

रघुनाथ बहुभाषिया था। नीच, गँवार, देहाती एवं शहरी सब लोगों की सच्ची भाषा भली प्रकार से बोल सकता था। रघुनाथ ने भलेमानुषों की बोली में कहा—'रास्ता भूल गया हूँ, रातभर टिकना चाहता हूँ।'

जो लालटेन लिये आगे खड़ा था, बोला—'यह सराय या धर्मशाला नहीं है। यह दुकान है।'

रघु०—'दुकानही सही, रातभर का जो किराया कहोगे, दे दूँगा और जो कुछ आहार आदि करूँगा, उसका भी दाम दूँगा।'

आ०—'तुम्हारे पास रुपए पैसे हैं ?'

रघु०—'हाँ है।'

आ०—'अजी, ऐसे बतोलिये बहुत आया करते हैं, भला देखें तो सही।'

रघुनाथ पहलेही से जानता था कि ऐसा प्रश्न होगा। झट उसने कुरते की जेब में से एक मोहर और कई रुपए निकाल कर दिखाए। रुपए और मोहर की मधुर मनोहर मूर्ति देखते ही दूकानदार के चित्त का डर, भय एवं सन्देह सब साथही जाता रहा और तुरत वह बोल उठा—'अच्छा तो आओ।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रुपए की भी क्याही मोहनी मूर्ति है! धनही से इस पाप-मय जगत् में पापी की पाप-प्रवृत्ति चरितार्थ होती है। अर्थ के लोभ से अन्तःपुरवासिनी कुलकामनी सतीत्व धर्म को तिलांजलि दे देती है। अर्थ के लोभ से दुराचारी बिना अपराध के प्राण लेने में जरा भी नहीं हिचकते। इस पापमय अर्थही के लिए जगत् के लोग दिन-रात हाहाकार करते फिरते हैं। सागर पार हो सहस्रों कोस तक वाणिज्य-व्यवसाय करते फिरते हैं। अर्थ ही की लालसा से अबोध मनुष्य अमूल्य जीवन विसर्जन कर देते हैं। रघुनाथ के प्रदर्शित धन के प्रभाव से, उस घोर रजनी में उस यमपुरी सरीखे दूकान का द्वार खुला।

यह रघुनाथ खूब जानता था कि बिना धन के लोभ के गोविन्द कभी भी दूकान न खोलेगा। इसीसे रघुनाथ सोच-विचार कर पहलेही से उसी ढँग पर चला था। घर के अंदर पैठतेही वह उसी ढँग के वर्त्ताव करने लगा। दुकानदार ने रघुनाथ से कहा—'आइये, इधर आइये!' गोविन्द रघुनाथ को एक सामान्य कोठरी में लेगया। उस कोठरी में एक सामान्य बिछौने पर तीन आदमी बैठे हुए थे। उनके सामने एक बोतल और कई चुक्कड़ और एक गड्डी तास की पड़ी हुई थी। उन तीनों की ओर उँगली दिखाकर गोविन्द ने रघुनाथ से कहा—'ये भलेमानुस हैं, यहाँ के जमींदार हैं।'

उन तीनों की ओर दृष्टि गड़ाकर रघुनाथ को निहारते देख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोविन्द ने कहा—'हमलोगों का ऐसा वेश देखकर आप डरियेगा नहीं। यह बड़ी भयानक जगह है, यहाँ चोर डकैतों का बड़ा डर रहा करता है। इसी से रात के समय हमलोगों को इस वेश में रहना पड़ता है।

तीन आदमी जो वहाँ बैठे थे, उनमें से एक गोरे रंग का, कद का लम्बा और शरीर मे बलवान था। उसका चेहरा, दाढ़ी और मूँछ से छिप रहा था। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी और भूरी थीं। अवस्था अनुमान तीस-बत्तीस की होगी। जिस समय रघुनाथ उस कोठरी में गया था, उस समय वह हाथ में तास की गड्डी लिये फेंट रहा था। उसकी उँगली में एक हीरे की अँगूठी भी थी। यह छद्म-वेशी था।

रघुनाथ के नजरों के आगे कोई बात छिपी न थी। उसके रंग-ढँग और अङ्ग-प्रत्यङ्ग तथा पोशाक से विदित होता था कि यह कोई भले घर का है; परन्तु अपने किसी गूढ़ मतलब को साधने के लिए इन बदमाशों में मिला हुआ है। इन सब विचारों से रघुनाथ के होठों पर जरा मुस्कुराहट आई। पर उसे वहाँ ही दबा रघुनाथ उसके समीप जाकर बैठा गया।

रघुनाथ से उस छद्मवेशी ने कहा—'आप रास्ता भूलकर यहाँ आ गये हैं?'

इसकी बोली सुनतेही रघुनाथ ताड़ गया कि यह इसका सच्चा कण्ठ-स्वर नहीं है; बनावटी है।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रत्युत्तर में रघुनाथ ने कहा—'जी हाँ।'

'आप परदेशी हैं ?'

'हाँ।'

'आपका क्या रोजगार है ?'

'कुछ लेना-बेचना।'

'तो आप यहाँ कुछ खरीदने आए हैं ?'

'जी हाँ।'

'क्या रेशम वगैरः ?'

'जी नहीं, इस समय तो मैं कुछ जानवर खरीदने आया हूँ।'

'माफ कीजियेगा, मैंने आपसे रोजगार की बात पूछी है, बेअदबी हुई। तास तो आप खेलतेही होंगे ?'

'योंही सामान्य-सा कभी जी बहलाने को खेल लेता हूँ।'

'बाजी रखकर ?'

'अजी भलेमानुसों से बाजीही रख ली तो क्या बुराई है।'

'तो आइये, जरा जी लगाव हो जाय।'

'क्या चारों आदमी ?'

'नहीं आइये, हमी आप दो-एक हाथ खेल लें।'

'खेलियेगा क्या ?'

'पचपतिया।'

'साहब ! यह तो हम नहीं जानते।'

'ऐसा सीधा खेल नहीं जानते, यह आप झूठ कह रहे हैं।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह सुनतेही रघुनाथ ने तेवर बदलकर कहा—'जरा मुँह सँभाल कर बातचीत कीजिये।'

'भला ऐसा सीधा-सा खेल आप नहीं जानते, यह भी कोई बात है?' यह कहते हुए उसने अपने कपड़े के अन्दर से एक बिछुआ निकाला। मानो उस तेवर बदलने के जवाब में उसे भय दिखलाना चाहता था।'

गोविन्द की ओर देखकर रघुनाथ ने कहा—'मैं हारा थका हूँ। रात भी बहुत बीत गई। कहाँ मुझे सोने की जगह देते हो, वहाँ ले चलो।'

गोविन्द ने कहा—'आप उनके कहने का बुरा न माने, वह भले आदमी हैं, पर इस समय जरा एक आध चुक्कड़ अधिक हो गया है, इसी से मिजाज ठिकाने नहीं है।'

यह सुनकर उस छद्मवेशी ने कहा—'नहीं साहब! अवज्ञा से मैंने आपको कुछ नहीं कहा है। अच्छा, अब उन बातों को जाने दीजिये, आइये एक दो हाथ हो जाय।'

र०—'तो मैं पचपतिया तो न खेलूँगा।'

छ०—'अच्छा, रंगमारही सही।'

र०—'हाँ, अब खेलूँगा, पर इस शर्त पर की पाँच रुपए से अधिक न खेलूँगा।'

छ०—'यही सही।'

खेल प्रारम्भ हुआ। रघुनाथ ने तीन बाजी खेली। तीनों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में वह जानकर हारा। खेल तो रहा था, पर रघुनाथ की दृष्टि तास पर न थी। किन्तु उस छद्मवेशी के चेहरे की ओर थी। वह भली प्रकार उसके मुँह की ओर निहार रहा था। रघुनाथ ने देखा कि मूँछ दाढ़ी असली नहीं हैं, वरन् नकली हैं। और मुँह पर भी रंग लगा हुआ है। रंग लगाते समय गले पर भली प्रकार नहीं लगा था। इससे चितकबरापन आ गया था। पाँच रुपए हारकर रघुनाथ उठ खड़ा हुआ। रघुनाथ के उठतेही उसने चिल्लाकर कहा—'वाह साहब! यह क्या? जरा बैठिये तो सही। ऐसा क्या करते हैं।'

रघुनाथ ने कहा—'मैं पहलेही कह चुका हूँ कि पाँच रुपए से अधिक न खेलूँगा।'

इस पर जिद्दाजिद्दी करते-करते हाथ में बिछुआ लेकर वह भी उठ खड़ा हुआ और रघुनाथ की ओर हाथ बढ़ाया। तुरत रघुनाथ भी तमंचा निकाल दपटकर बोला—'देखो, खबरदार जो मेरे बदन में हाथ लगाया तो साथही मैं गोली मार दूँगा।'

तब तो वह बदमाश हँसते-हँसते कहने लगा—'अजी साहब! मैं जान गया, आप बड़े बहादुर हैं, खैर जाने दीजिये।'

गोविन्द से रघुनाथ ने कहा—'चलो भाई, चलो बताओ कहाँ सोऊँ?'

गोविन्द ने कहा—'अच्छा आइये।' यह कह वह एक बत्ती बालकर रघुनाथ को अपने साथ अटारी पर ले गया और एक छोटे-से साफ-सुथरे घर में ले जाकर बोला—'यह प्रदीप लीजिये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और आराम से यहाँ रहिये।' यह कह अँधेरे में वह उतर आया और जहाँ वे लोग बैठे थे, गया। छद्मवेशी ने गोविन्द से पूछा—'यह आदमी कौन है ?'

गोविन्द—'कह नहीं सकता।'

बदमाश—'भला कुछ सन्देह होता है ?'

गो०—'नहीं तो।'

बद०—'देखो गोविन्द! हमलोगों ने जिस काम में हाथ डाला है, वह बड़े साहस का काम है।'

गो०—'साफ-साफ कहिये।'

बद०—'बात यह है कि इस घर के जितनी खिड़कियाँ व दरवाजें हैं, सब बन्द करने होंगे और बाहर चारों ओर अनेक लोगों का पहरा रखना होगा, जिसमें किसी ओर से कोई भाग न सके। बस, ऐसा बन्दोबस्त करके घर में आग लगा देना होगा।'

गो०—'यह आप क्या कह रहे हैं ? मेरा घर फूँक देंगे ?'

बद०—'तो क्या हुआ।'

गो०—'वाह ! मेरा सर्वनाश न हो जायगा ?'

बद०—'तुम अपने मकान की लागत ले लेना।'

गो०—'कब ?'

बद०—'जब मेरी जायदाद मुझे मिलेगी।'

गो०—'नहीं साहब ! यह न होगा, जो आप को आग लगाना है तो मेरे घर की लागत अभी मुझे दे दीजिये।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बद०—'अभी तो घर की लालच कर रहे हो, पर पीछे हमारी तुम्हारी एक की भी जान न बचेगी। जानते हो, किसे ऊपर ठहरा आये हो?'

गो०—'किसे ले गए हैं? क्या आपने पहचाना है, वह कौन है?'

बद०—'क्या तू अन्धा है? आँखें नहीं हैं?'

गो०—'जो आँखें होतीं तो यह गति कैसे होती?'

बद०—'मैं बिछुवा लेकर क्यों उसपर टूटा था, तुमने कुछ समझा था?'

गो०—'मैं तो कुछ नहीं समझा। आप तो सबहीं से ऐसा किया करते हैं।'

बद०—'तू निरा मूर्ख है।'

गो०—'हमलोग गरीब आदमी हैं। आप लोगों के आगे तो अन्धे हैं।'

बद०—'देखा होगा, जब मैं उस पर टूटा तो मेरे हाथ में हर्बा देख वह जरा भी न दहला?'

गो०—'संभव है, वह ठंढे मिजाज़ का होगा, इसी से कुछ नहीं बोला।'

बद—'अजब खोपड़ी का है। अरे मूर्ख! आधीरात के समय ऐसे घर में एक अकेले परदेशी पर पाँच बदमाश हमला करें और वह जरा न दहले! यह भी कोई बात है? चाहे कैसाही साहसी क्यों न हो, उसे डरना ही पड़ेगा। पर वह क्यों न डरा।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गो०—'आखिर वह कौन है ?'

बद०—'विपिन के सोने के घर में जब हमलोग घुसे थे और जिसने पिस्तौल चलाई थी, यह वही है।'

गो०—'ऐं ! क्या पुलिस का जासूस ! अरे बप्पा !' यह सुनते ही गोविन्द के होश उड़ गये। मानो सिर पर वज्र आ गिरा। इतने दिनों से बड़े-बड़े अनर्थ और पाप कर्म करके उसने धन कमाया था। जिस धन कमाने में उसने पाप, पुण्य, लोक, परलोक, नाम-कुनाम दूसरे के सुख-दुख का कुछ भी विचार न किया था; अपने सुख या परलोक के लिए जिसने उसमें से एक कौड़ी भी नहीं खर्च किया था, दिन-रात संसार के संपूर्ण सुख को त्यागकर जिस धन को उसने संचय किया था; न तन पर वस्त्र, न पेट में अन्न; दिन-रात यत्न के ऐसा जिस धन को अंडों-सा सेवन करता रहा, जिसके विषय में उसने कभी भी न सोचा कि इस धन को कौन खाए-खर्चेगा; यों ही हाय-हाय करते एक दिन तन से प्राण निकल जायगा और यह जिसका है, उसके पास रह जायगा। साथ में केवल जग की बदनामी ले जायगा और परलोक में उसी के फल से कठिन यमपुरी की यातना भोगनी पड़ेगी। महा अज्ञानी गोविन्द ने यह कभी नहीं सोचा था कि आज उस धन का इस तरह नाश होगा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्रयोदश परिच्छेद

चोर और साधु में बड़ी भिन्नता है। चोर चाहे कितना ही साहसी और बलवान क्यों न हो, पर साधु के सन्मुख वह निर्बल और अकर्मण्य हो जाता है। चोर का चित्त सदा उदास और भयभीत बना रहता है; परन्तु साधु सदा प्रसन्न और प्रशान्त रहता है। बड़ा दुर्बल मनुष्य भी यदि एक बलवान चोर का हाथ पकड़ ले, तो उस समय उसे वही बड़ा बलवान जान पड़ता है और उस समय उस चोर को अनेक मनुष्य देख पड़ते हैं। चोर का मन सदा पुण्य प्रहरी के भय से भीत रहा करता है। उसका चित्त कभी स्थिर नहीं रह सकता। वह कभी एक स्थान में नहीं रह सकता। मानो कोई पकड़ने आता है—सदा उसके चित्त में ऐसी शङ्का बनी रहती है। रहता तो सावधान है, पर अस्थिर। एक बार पाप के स्पर्श से जो शरीर कलुषित हुआ है, उस पाप देह को इस जन्म में शांति कहाँ! तुम बड़े बुद्धिमान, विचक्षण, विद्वान चोर हो। तुम्हारी चोरी में ऐसी सफाई है कि तुम्हें पकड़ना असाध्य है। परन्तु चाहे तुम पकड़े न जाओ, तो भी तुम्हारे हृदय में जो एक धर्म-जासूस बैठा हुआ है, उसके हाथ से तुम नहीं बच सकते। दिन-रात वह तुम्हें ऐसा डराता रहेगा कि खाते, सोते और बैठते चैन नहीं और वह ऐसी दपट बताता रहेगा कि किसी-न-किसी समय तुम्ह अपने हृदय के किवाड़ खोलने ही पड़ेंगे। और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हारे पाप से सने हुए हृदय पर समाज की दृष्टि पड़ ही जायगी। अन्त में तुम पाप के बोझ से दब इस लोक में पाप की कठिन यातनाओं को भोगते-भोगते मरोगे। और उस लोक में नर्क की भयानक यातना भोगनी पड़ेगी। अपने किये का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। बिना भोगे उससे छुटकारा कहाँ ?

गोविन्द इतना सहज आदमी नहीं था कि झट से डर जाय। कुछ क्षण के उपरांत साहस बाँध उसने अपने चित्त को स्थिर किया। सामन्य पुलिस कर्मचारी को देख तो वह हँसकर उड़ा देता था; उसके पापमय हृदय में रंच मात्र भय का संचार नहीं होता था। परन्तु निडर, सुचतुर, मेहनती, बलवान रघुनाथ के मुकाबिले गोविन्द की व्यर्थ की डींग कुछ काम न आई। अनेक प्रकार की आशङ्काओं ने उसके हृदय को आ घेरा। जिसे गोविंद ने विदेशी जानकर अपने घर में टिकाया था, उसे पुलिस का गोइन्दा सुनकर उसके होश उड़ गये। कुछ देर तक सोच-विचार कर बड़े तपाक से गोविन्द ने कहा—'डर काहे का है, जासूस अकेला है और हम पाँच आदमी हैं।'

छद्मवेशी ने कहा—'हाँ, अकेला तो है पर इससे क्या ?'

गो०—'तो मालूम होता है, यह हमी लोगों की खोज में है ?'

छ०—'मालूम तो ऐसा ही होता है।'

गो०—'जो ऐसा है तो जरूर ससुरार का द्वार दिखावेगा ?'

छ०—'वहाँ तक न जाना पड़े, ऐसा उपाय करना चाहिये ?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गो०—'यहाँ से उसे जीता न छोड़ना चाहिये।'

छ०—(हँसकर) 'तो अब तो घर में आग लगानी चाहिये न ?'

गो—'कैसे कहूँ।'

छ०—'तब भला उसके हाथ से कैसे छुटकारा होगा ?'

गो०—'जरा अपना वह छुरा तो दो, जहाँ उसकी आँख लगी कि हमने—'

गोविन्द पूरी अपनी बात कह भी न चुका था कि वह छद्म-वेशी खिलखिला कर हँस पड़ा।

गो०—(कुछ चिढ़कर) 'मेरी बात पर क्यों आप हँस दिये ?'

छ०—'तुम्हारी बुद्धि की दौड़ देखकर। क्या तुमने सोचा है कि वह तुम्हारे घर आराम से सोने आया है ?'

गो०—'यह तो आप ठीक कहते हैं ! तो अब ?'

छ०—'अब क्या ? घबराने से थोड़ेही कुछ होता है, सोच-विचार कर कुछ करना होगा।'

उधर सोने के घर में जा चटपट रघुनाथ ने अपना जूता, कपड़ा सब उतारकर गठड़ी बाँधा; क्योंकि इतना उसने भी विचार लिया था कि इन बदमाशों से अवश्य मार-पीट करनी पड़ेगी। वह कुछ देर ठहर कर वहाँ से चला।

जिस मकान में गोविन्द की दूकान थी, वह घर कई खण्ड का बड़ा लम्बा-चौड़ा था, पर बड़ाही पुराना गिरा-पड़ा-टूटा-फूटा। नवाबी अमलदारी में यह किसी सूबेदार का मकान था। गोविन्द

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने सूबेदार के वंश में जो कोई था, उसे कुछ दे दिलाकर उस मकान को ले लिया था। उस मकान में नाच-घर, दरबार-घर दीवान-खाना, तोशखाना, मालखाना, तथा अनेक तहखाने और गुप्तखाने थे। चारों ओर से इस मकान को जंगल और झाड़ियों ने घेर लिया था, और यह एक ऐसे एकान्त स्थान में था कि आध कोस तक इधर-उधर नाम को भी कोई बस्ती न थी।

शयनगृह से निकल कर रघुनाथ उसके साथवाली कोठरी के द्वार पर जा धीरे-धीरे किवाड़ में धक्का दिया। विदित हुआ कि यह भीतर से बन्द है। तुरत उसने एक अँकुसी डालकर किवाड़ खोला और उसके अन्दर जाकर अपनी लालटेन निकाली।

उस कोठरी के एक कोने में एक पीताम्बरी साड़ी रक्त से भरी पड़ी थी। रघुनाथ ने खोलकर उसे देखा तो उसके ऊपर वाले अँचरे में एक फटा हुआ छेद था। वह छेद छुरी का मालूम होता था। रघुनाथ ने अनुमान किया कि दुष्टों ने इस साड़ीवाली के हृदय में छुरी मारी है। विवाह के समय बंगालिओं में कन्या जैसी पीतांबरी पहनती हैं, यह साड़ी भी उसी मेल की थी। इस साड़ी ने रघुनाथ को खूबही धोखे में डाला। रघुनाथ को साफ भ्रम हो गया कि यह कामिनी की साड़ी है। और उन लोगों ने उसे अवश्य मार डाला है। व्यर्थ ही बिपिनबाबू तथा उमेश को मैं कह आया हूँ कि कामिनी अवश्य जीती है। अब मैं उनसे जाकर क्या कहूँगा? मुझे बड़ा भारी भ्रम हुआ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रघुनाथ को अब यह भ्रम हुआ कि जब उसकी साड़ी यहाँ पर है, तो उसका मृतक देह भी यहीं कहीं होगा। जहाँ वह सारी दिखलाई पड़ी थी, उसी दीवार में एक आइना लगा हुआ था। उस आइने में एक अनोखी बालिका की मूर्ति रघुनाथ को दिखाई दी। वह बालिका-मूर्त्ति एक कोठरी से दूसरी कोठरी में चली गई।

मानों किसी ने रघुनाथ के कान में आकर कह दिया कि यह छाया-मूर्त्ति बिपिन बाबू की भानजी उर्मिला है। हताश रघुनाथ के हृदय में पुनः उत्साह का कुछ संचार हो आया। तुरत वह उस छाया-मूर्त्ति के पीछे हो लिया। कोई पीछे से गुप्त-भाव से रघुनाथ की कार्रवाइयों को देख रहा था; पर रघुनाथ को इसकी कुछ भी खबर न थी।

चलते-चलते एकाएक रघुनाथ ठिठक गया और सोचने लगा कि यह कैसा धोका हुआ है। यथार्थ में यह उर्मिला नहीं है। जमींदार के मकान में अभी उर्मिला को छोड़ आये एक घंटा भी नहीं हुआ, तब इतनी जल्दी क्योंकर इतनी दूर से वह यहाँ आ गई होगी ?

रघुनाथ को पुनः मृत-देह के खोजने का ध्यान हुआ। चारों ओर भली प्रकार से ढूँढ़ा; पर कहीं कुछ पता न मिला। वह उस घर से निकल दीवानखाने वाले दालान में गया। वहाँ दरी, गलीचा, जाजिम, चादर, झाड़, फानूस, तसवीर, आदि अमीरी चोंचले की कोई भी चीज न थी। एक पुराना टूटा फूटा खाली मकान केवल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

था। रघुनाथ ने अपने लालटेन के उजेले में भली प्रकार वहाँ भी देखा-भाला; पर हाथ कुछ न लगा। दीवानखाने से बाहर आते ही नीचे उतरने की सीढ़ी दीख पड़ी। रघुनाथ उन सीढ़ियों से धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। उतरते-उतरते वह ठिठका और उसके मुँह पर कुछ प्रसन्नता की झलक दीख पड़ी। सीढ़ियों पर बूँद-बूँद रक्त के चिन्ह देख पड़े। रघुनाथ उन चिन्हों को लालटेन के उजेले में भली प्रकार देखने लगा। वह देख ही रहा था कि किसी के पाँवों की आहट उसे सुन पड़ी। तुरत उसने लालटेन को खोली के अन्दर किया और सीढ़ी के एक कोने में दबक रहा। पाँवों की आहट धीरे-धीरे पास आने लगी। इतनेही में एक सुन्दर लड़की पास से नीचे उतर गई। कुछ पहले रघुनाथ ने दर्पन में एक की परछाहीं देखी थी। अब उसीको पास से जाते देखा। यह बड़ा भयानक रहस्य है! किसकी सामर्थ्य है कि इस रहस्य को खोले।

जाती समय उस लड़की ने रघुनाथ को नहीं देखा था। नीचे उतर, एक तंग गुप्त राह से उसे गोविन्द के दूकान में जाते रघुनाथ ने देखा। तब फिर उसने अपने लालटेन की खोली उतारी। उसके उजेले से सीढ़ियों पर का अँधकार दूर हुआ। अच्छी तरह से देखता-भालता वह नीचे उतरा। जिधर से वह लड़की दूकान की ओर गई थी, रघुनाथ भी उसी ओर चला। जाते-जाते लालटेन के उजेले में बराबर रघुनाथ रक्त का दाग देखता चला गया। और अन्त में एक कोठरी के द्वार पर पहुँचा। धक्का देकर देखा तो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वार भीतर से बन्द था। तुरत रघुनाथ अपने किसी एक यन्त्र से उस द्वार को खोल उस छोटी सी कोठरी के अन्दर गया और भली प्रकार चारों ओर देख-भाल करने लगा। देखते-देखते उसके पाँवों तले किवाड़ मालूम हुआ। जिसे देखने से विदित हुआ कि इसके नीचे कोई दूसरा तहखाना है। रघुनाथ ने उस किवाड़ को खोल प्रकाश में देखा तो नीचे एक छोटी-सी सीढ़ी थी और उसके नीचे बड़ा अँधेरा था। साहस करके रघुनाथ उसके नीचे उतरा। नीचे उतर कर उसे एक बड़ी अँधेरी कोठरी में जहाँ पाँव पड़ते ही गीला-गीला मालूम होता था और सड़ी हुई ऐसी दुर्गन्ध आती थी कि वहाँ ठहरना कठिन था। घुसते ही वहाँ रघुनाथ ने अपना कार्य आरम्भ किया। लालटेन की खोली उतार कर भली प्रकार वह चारों ओर देख-भाल करने लगा। यहाँ रघुनाथ का श्रम सफल हुआ; आशा पूर्ण हुई।

पहलेही से रघुनाथ ने सोच लिया था कि सोने के घर से उठकर इधर-उधर घूमने की खबर बदमाशों के कानों तक अवश्य पहुँची होगी और उन बदमाशों ने अवश्य पीछा भी कियाही होगा और मेरे प्राण मारने के पूरे उद्योग में लगे होंगे। गोविन्द के घर में घुसकर रघुनाथ ने अनेक रहस्य उद्‍घाटन किये थे; जो बड़ेही भयानक और आश्चर्यजनक थे। अब वह एक बड़ेही गुप्त और रहस्ययुक्त-गृह के द्वार पर पहुँच गया। पर अभी तक वह रहस्य इसकी दृष्टि से बाहर था—छिपा हुआ था। सड़ी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुई महादुर्गन्धि से उसने अनुमान कर लिया था कि इसी जगह कहीं न कहीं मृत-देह गड़ा हुआ है, जिसकी यह सड़ी दुर्गन्धि है।

चतुर्दश परिच्छेद

तहखाने के अन्दर चारों ओर भली प्रकार से रघुनाथ ने खोजा; परन्तु जो कुछ वह खोज रहा था, उसका पता न लगा। कुछ क्षण के लिए तो रघनाथ हताश हो सन्न हो गया। पर सदा से रघुनाथ बड़ाही दृढ़ प्रतिज्ञ था और जिस काम मेंहाथ डालता, उसे बिना पूरा किये छोड़ने वाला न था। इससे कुछ क्षण के उपरान्त पुनः वह उस कोठरी में खोजने लगा। खोजते-खोजते दीवार में एक लोहे का बना हुआ द्वार उसे दीख पड़ा। यह दीवार के साथ ऐसे ढँग से चिपका और रँगा हुआ था कि सिवा रघुनाथ-जैसे जासूस के दूसरों की क्या सामर्थ कि उसे तोड़ सके। बड़ी चतुराई से रघुनाथ ने उसके दरवाजे खोले। द्वार के खुलतेही ऐसी सड़ी दुर्गन्धि की भभक निकली कि रघुनाथ वहाँ से चट पीछे हटा और नाक मुँह बाँध-बूँध बड़ी कठिनाई से पुनः उसके द्वार पर जा लालटेन को ऐसे ढँग से थामा कि उसकी रोशनी से उस कोठरी में पूरा उजेला पहुँचा। उस उजेले में एक आश्चर्य दृश्य उसे दीख पड़ा।

भयानक भीषण दृश्य! उसके अन्दर चारों ओर मुर्दों के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पञ्जर पड़े हुए हैं। बीच में एक टूटे खाट पर एक शव कपड़े से ढका पड़ा है। ऐसी तेज दुर्गन्धि की भभक आती थी कि बार-बार रघुनाथ उसके अन्दर जाने की चेष्टा करता; पर दूर ही से भागता था। अन्त में बड़े कष्ट से ज्यों-त्यों उसके अन्दर गया और इधर-उधर दृष्टि न कर खाट पर के मुर्दे की चादर उतार उसे भली प्रकार देखने लगा। लालटेन पास ले जाकर उसने देखा कि एक परम सुन्दरी बालिका है जिसके चाँद-से बदन पर मेघ-सी लटें बिखरी हुई पड़ी हैं। भली प्रकार उसका मुँह देखने के अभिप्राय से ज्योंही उसने लालटेन ऊँची की है कि तड़ से तमंचे की गोली ऐसी आकर लगी कि लालटेन टुकड़े-टुकड़े बिखर गया।

तहखाने में जिस समय रघुनाथ मृत-देह को खोज रहा था, उसी समय गोविन्द की दूकान में एक भयानक बात-चीत हो रही थी। पाँच भयानक बदमाश जमा होकर रघुनाथ की जान मारने की सलाह कर रहे थे। उसी समय एक आश्चर्य-मय लड़की उस घर में गई। उसके जाते ही कुछ क्षण के लिए सब-के-सब चुप हो रहे। लड़की की स्वाभाविक भोली-भोली मुखाकृति पर उदासी छा रही थी और मुख पर भय के चिन्ह भी विराज रहे थे। दौड़ी हुई वह उस स्थान पर पहुँची और पीछे से जाकर उस छद्मवेशी के कन्धे पर हाथ रख खड़ी हो गई। सहसा दौड़ी हुई घर में आते देखकर उसने पूछा—'कहो हाल क्या है?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लड़की ने कहा—'हाल बहुत खोटा है । ताजी कुत्तों ने हमलोगों का पीछा किया है ।'

घबराकर बड़े आग्रह से गोविन्द ने पूछा—'ताजी कुत्ता कैसा ?'

छद्मवेशी ने कहा—'राबर्ट रघुनाथ ! मालूम हुआ, अब सब बातें खुलीं ।'

बड़ी घबराहट से गोविन्द ने पूछा—'क्या बात खुली ? माजरा क्या है, कहिये भी कुछ ?'

छद्मवेशी ने कहा—'तुम्हारे नाम वाले का मरना और जमींदार की हवेली में हमलोगों के साथियों में से एक का हाथ-पाँव बँधना ।'

गोविन्द ने पूछा—'वह है कौन जिसने ऐसा किया ?'

छद्मवेशी—'रघुनाथ, चोर, डकैत, बदमाशों का चिरशत्रु रघुनाथ ।'

गोविन्द—'रघुनाथ कौन है ?'

छद्मवेशी—'रघुनाथ पुलिस का गोइन्दा है । बड़ा ही चतुर है, जैसा साहसी, वैसा ही बलवान, और हमलोगों का पूरा बैरी है । अब उसे हमलोगों के अड्डे की थाह लग गई है और यहाँ आ घुसा है तो अब हमलोग नहीं बचते । बस, अब तो बचने का एक ही उपाय है । वह यह है कि उसकी जान मारी जाय ।'

गो०—'यह वही है न जो मुसाफिर बनकर टिका है ?'

छद्म०—'हाँ, वही रघुनाथ है ।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गो०—'उसके लिए आप लोग ऐसे घबरा गये ? अजी वह तो आप-से-आप ही जाल में आ फँसा है । मुद्दत के बाद आप ही आ फँसा है चंडूल ! अब जाता कहाँ है ?'

छद्म०—'फँसा तो है, पर म्याऊँ को पकड़े कौन ?'

गोविन्द की तिवरियाँ चढ़ गईं, नथुने फड़कने लगे, माथे में बल पड़ गये । कर्कश स्वर से बोला—'अजी इस घर में न जाने रघुनाथ के ऐसे कितने ही आये हैं, पर कोई माई का लाल सफल नहीं हुआ ।'

छद्म०—'यह तो ठीक है पर रघुनाथ बड़ाही धूर्त है। इसे पकडना सहज नहीं ।'

गो०—'वह अकेला है और हमलोग पाँच आदमी ।'

छ०—'इससे क्या ? वह दस-पाँच को क्या समझता है ?'

गो०—'आप तो इसके नाम से ऐसे डरे हैं कि बस—'

छ०—'मैं डरा तो नहीं हूँ, पर बात यह है कि वह ऐसा-वैसा नहीं है ।'

गो०—'तुमने उसे कहाँ देखा ?'

इसके उत्तर में लड़की ने कहा—'अपने घर में ।'

गो०—'उस समय तुम कहाँ थी ?'

बा०—'मैं बगल वाले घर में थी ।'

गो०—'वह तुम्हारे घर में क्या कर रहा था ।'

बा०—'सबूत खोज रहा था ।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गो०—'अजी बैठो, उसके सात पुरखा उतर आवं तब भी पता नहीं लग सकता !'

बा०—'तुम कह क्या रहे हो, उसने अभी पता लगा लिया।'

गो०—'क्या ?'

बा०—'वह पीताम्बरी साड़ी जिसमें लोहू लगा था, उसके हाथ लग गई ?'

गो०—'यह तो बेढ़ब मामिला हुआ।'

छ०—'अगर वह जीता रहा तो समझो, हमलोग मरे।'

गो०—'इससे आप निश्चिन्त रहें, मैं उसे खपाये देता हूँ।'

छ०—'क्योंकर ?'

इस प्रश्न का बिना उत्तर दिये गोविन्द अपनी दूकान में चला गया और वहाँ से एक दुनली बन्दूक लाकर बोला—'यह बन्दूक लीजिये और वह जहाँ कहीं हो, खोज-खाज के टण्टा मिटाइये।'

छ०—'न, न, यह मेरे किये न होगा। इस समय मैं जो खेल खेल रहा हूँ, जो कहीं उसमें पासा सीधा पड़ गया तो मैं बहुत बड़ा आदमी हो जाऊँगा। इसलिए इस समय मेरी जान बड़ी मूल्यवान है। ऐसे शैतान के सामने जान-बूझकर अपनी जान नहीं दिया चाहता।'

गो०—'बैठिये, आप किसी काम के आदमी नहीं हैं।'

गोविन्द के इस कटुवाणी को सुन वह कुछ नाराज न हो हँसकर बोला—'मैं उसे खूब पहिचानता हूँ; जो अपने जीने की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आशा छोड़ूँ तो उसका पीछा करूँ। और फिर जब मैं पानी-सा रुपया फेंक रहा हूँ; तुम लोगों का घर भर रहा हूँ, तो तुमलोगों के रहते मैं क्यों जाने लगा ?'

इस कहने पर कुछ ध्यान न देकर गोविन्द ने फिर उस लड़की से पूछा—'तुम उसे कहाँ तक जाते देख आई हो ?'

लड़की—'लोहू की छींट जहाँ-जहाँ पड़ी थीं, उन्हें देखता हुआ बराबर नीचेवाले तहखाने में उतरता उसे देख आई हूँ।'

उसी समय उस शराबवाली दूकान के अन्दर अस्त्रधारी पाँच बदमाश कुछ काना-फूसी कर रहे थे और पिशाची लड़की बाल बिखराये विचित्र मुँह बनाये खड़ी थी।

छद्मवेशी की ओर घृणाभरी दृष्टि से देखकर गोविन्द ने कहा—'अब तो बिना उसे मारे हमलोगों का बचना कठिन है'। उन पाँचों की ओर देखकर गोविन्द ने पूछा—'कहो भाइयो ! तुमलोगों का क्या विचार है ?'

सब बोल उठे—'धड़ से सिर अलग करो।'

गो०—'तो अब बिलम्ब केहि काज—बस बहादुर चलो। सब अपने हथियार से ठीक हो न ?'

सब ने कहा—'हाँ।'

छद्मवेशी ने कहा—'चलते तो हो, पर इतना याद रखना, पाँच क्या पचास मनुष्य के लिए वह अकेला बहुत है, क्योंकि वह हिन्दुस्तानी है।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गो०—'तो हमलोग भी निरे बङ्गाली ही नहीं हैं।'

छ०—'जमींदार की हवेली में भी तो सब थे ही, पर क्यों सब हारकर चले आये ?'

गो०—'अँधेरी कोठरी में हमलोग इस धोखे में रहे कि न जाने उधर कितने आदमी हैं। जो यह जानते कि मूजी अकेलाही है, तो उसी जगह उसे समाप्त कर आते और अब तो सामने चार के मुकाबिले पर जरा कठिन पड़ेगा। कहाँ तक लड़ेगा, है तो दो ही हाथ का न ?'

इतना कह गोविन्द ने साथियों से कहा—'अजी तुम लोग चलो तो यह कौन-सी बड़ी बात है। अभी मार लेते हैं। कितनी बड़ी बात है।'

छद्मवेशी ने गोविन्द से पूछा—'यह तुम्हें मालूम है कि इस समय वह कहाँ है ?'

गो०—'जहाँ होगा, वहाँ ही मारूँगा।' इतना कह दीपक बुझा आगे-आगे वह और पीछे उसके साथवाले वहाँ से चले। उस मकान के जितने गुप्त और प्रकट रास्ते थे, उन्हें गोविन्द भली प्रकार जानता था। और अँधेरे-उजेले में उसे उन रास्तों में जाने-आने का अभ्यास हो रहा था। इससे उस अँधेरे में वह अपने साथियों को लिये हुये तहखाने की ओर चला। सीढ़ियों पर पहुँच कर कुछ ठिठका और कुछ क्षण के उपरांत अपने साथियों से बोला—'वह यहाँ नहीं है; नीचेवाले तहखाने में उतर गया है।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह स्वाभाविक बात है कि लोग अपने जी में अनेक प्रकार की कल्पना करते हैं। अनेक बाँधनू बाँधते हैं; परन्तु जब काम आ पड़ता है, तब पूर्व कल्पनाएँ विफल और व्यर्थ हो जाती हैं। विचारी हुई बातें एक भी काम नहीं आतीं। मनुष्य क्या सोचता है, क्या हो जाता है। इसीसे गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है—

"ह्वै है वही जो राम रुचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावे शाखा॥"

पञ्चदश परिच्छेद।

सीढ़ियों पर खड़ा कान लगाये जब गोविन्द आहट ले रहा था, उस समय उसने रघुनाथ के हाथ के लालटेन की रोशनी देखी थी। उसने अपने साथियों से कहा था—'शिकार नीचे है।' गोविन्द और उसके साथियों ने जूते उतार दिये और तुपक, तमञ्चा, छुरा-छुरी आदि हर्बों को सम्भाल दबे पाँव नीचे उतरे। उस समय रघुनाथ टकटकी बाँधे मृतदेह पर दृष्टि गाड़े उसे निहार रहा था और ऊँचा हाथ किये लालटेन पकड़े हुए था। उसी समय रघुनाथ पर निशाना ताककर गोविन्द ने गोली दागी। पर निशाना उचट गया। रघुनाथ को न लग गोली उसके लालटेन में लगी, जिससे वह चूर-चूर हो गई। रघुनाथ को विदित हो गया कि बदमाशों ने उसका पीछा किया है और वहाँ तक आ पहुँचे हैं।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लालटेन में गोली के लगते ही चट से रघुनाथ जमीन पर लेट गया और घुटने के बल चलकर वहाँ से निकलने की चेष्टा करने लगा। जमींदार की हवेली के घोर अँधियारे में आततायियों को जिस प्रकार अपना-बिगाना सूझ नहीं पड़ता था; उसी प्रकार इस अँधियारे में भी कोई किसी को नहीं पहचानता था। धीरे-धीरे गोविन्द ने अपने किसी एक साथी से कहा—'माखन, तुम धीरे से यहाँ से निकल ऊपर की सीढ़ी पर पहरा दो। जो कोई तुम्हारे पास आवे, बेधड़क तुम उसे कटार मारना; आज बड़ा पुराना चण्डूल जाल में फँसा है। अब बच्चा जीते न निकलेंगे।' अपने दूसरे साथियों को भी न जाने उसने क्या कहा कि वे लोग रघुनाथ के ऐसे घुटनौआ इधर-उधर घूमने लगे। रघुनाथ भी समझ गया कि बदमाश उसकी खोज में घूम रहे हैं। वह भी शत्रुओं के मारने और अपने को बचाने में चैतन्य हो गया। वह अनेक प्रकार की बोली बोल सकता था। मनमाने ढँग पर स्त्री-पुरुष, लड़का-लड़की आदि का जब जैसा कण्ठ-स्वर सुनता था, ठीक उसी तरह की बोली बोल लेता था। गोविन्द के स्वर से उसको विदित हो गया था कि उन बदमाशों में से एक का नाम माखन है और बाकी चारों का कण्ठ-स्वर कैसा है। अब उसने एक धूर्तता विचारी। वह यह थी कि गोविन्द के कण्ठ-स्वर की नकल करके उसने कहा—'माखन जरा इधर आओ।' पर रघुनाथ के बुलाने पर कोई भी न टसका। रघुनाथ की चालाकी व्यर्थ हुई। तुरत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रघुनाथ ने दूसरी चालाकी की। अर्थात् दो छुरों को आपस में ऐसे ढँग से बजाने लगा कि जैसे दो मनुष्यों के लड़ने में ठनठनाहट का शब्द होता है और धरती पर फटाफट हाथ-पैर पटकने लगा। अबकी रघुनाथ का उपाय खाली न गया। दो-तीन आदमी घुटने के बल उसकी ओर आये।

इसके पहले रघुनाथ ने इन बातों को खूब जाँच रक्खा था कि किधर कौन जाता है, किधर सीढ़ी है, किधर द्वार है। पहलेही से इन स्थानों को उसने खूब देख-भाल कर विचार लिया था। ज्योंही आतताई उसकी ओर आये कि वह उठ खड़ा हुआ। और चट से दबे पाँव बाहर निकल द्वार पर आ खड़ा हुआ। इसी मौके पर सीढ़ियों के ऊपर से किसी ने दीपक दिखाया। उसी उजेले में यदि रघुनाथ चाहता तो चारों आतताइयों को गोली मार सकता था; परन्तु उसने ऐसा न किया। उसने उस उजेले के सहारे से इतना ही देख लिया कि वह मनुष्य जो सीढ़ियों पर पहरा दे रहा था, कहाँ और क्योंकर खड़ा है। इतना देखते ही चट से रघुनाथ इस फुर्ती से उसके ऊपर धम से जा कूदा और उसके सिर पर इस जोर से तमंचे का कुंदा मारा कि चक्कर खाता लुढ़कता-पुढ़कता वह सीढ़ियों के नीचे जा गिरा।

शत्रु ने मित्र का काम किया। जिस पिस्तौल की गोली से रघुनाथ की लालटेन टूट गई थी, छद्मवेशी बदमाश के कानों में उसी गोली का शब्द पहुँचा था। माजरा क्या है, यह जानने के

८

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लिए वही छद्मवेशी चिराग लेकर देखने आया था और उसी उजेले से रघुनाथ को इतनी मदद मिली कि सीढ़ी के रखवाले को मार-पीटकर चट से ऊपर जा पहुँचा और ज्योंही दौड़कर वह दीवान-खाने की ओर चला कि छद्मवेशी उसे आगे से मिला। इसने तान-कर एक घूसा ऐसा उसके कनपटी पर मारा कि घूमकर वह तो वहाँ ही गिर पड़ा और यह ऊपर जा पहुँचा।

ऐसे स्थान में, ऐसी अवस्था में, भागकर प्राण बचा लेने से लोग अपने को धन्य मानते हैं। पर रघुनाथ उस ढँग का न था; इससे वह भागा नहीं। जहाँ से जरा-सी भी टोह मिली, तुरत उसी ओर झुका। इस सावधानी और चपलता से रघुनाथ निकला कि उस पर हमला करने वालों में से किसी को भी न जान पड़ा कि किधर से और कब वह उनके बीच से निकल भागा। दुमहले पर पहुँच कान लगा रघुनाथ सुनने लगा कि कदाचित् किसी ने उसका पीछा तो नहीं किया। या कोई कहीं खड़ा किसी से कुछ कहता तो नहीं है। कुछ क्षण के उपरान्त उस घने अन्धकार में उसे आहट मिली कि तहखानेवाले ऊपर दुमहले पर आ रहे हैं। फिर रघु-नाथ ने कान खड़े करके सुना। कोई कह रहा था—

'वह अकेला और हम चार आदमी हैं, पर अँधेरे में तो वह अकेला दस जनों के बराबर है इससे आओ चिराग बाल लें।'

यह सुनकर रघुनाथ के मुख पर कुछ मुस्कुराहट आई और उसने नया मनसूबा बाँधा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोविन्द के कहनेपर उसके साथिओं में से एक दूकान वाले घर में गया और वहाँ से लालटेन बालकर ज्योंही आया कि ताक कर रघुनाथ ने ऐसी-गोली मारी कि लालटेन चूर-चूर हो गई। और फिर ज्यों का त्यों अँधेरा हो गया।

गोविन्द तब घबराकर बोला कि—'अच्छा चलो अब अँधेरे ही में उसे पकड़ें।'

गोविन्द की बात सुन रघुनाथ नेक भी न दहला। रघुनाथ तो डरना जानताही न था कि डर किसे कहते हैं। उस औचक विपद में असीम साहस और ढिठाई के प्रतापही से रघुनाथ की जान बची। रघुनाथ का साहस और उसकी चतुराई को देख बद-माश बड़ेही चकित हुए थे। सिवा गोविन्द के और दूसरों को रघुनाथ पर हमला करने का एकाएक साहस नहीं हुआ था; गोविन्द ने रघुनाथ पर वार करने में विलम्ब न किया। उसने अपने साथियों से कहा—'तुमलोग वहाँही ठहरो, मैं अकेला रघुनाथ के पास जाता हूँ और वहाँ से जब मेरा संकेत हो, तब निज हथौं से ठीक हो साथही उसपर टूट पड़ना। तात्पर्य यह कि आज उसे किसी तरह यहाँ से जीते न जाने देना चाहिये।'

इधर तो यह बाँधनू बाँधा जा रहा था और उधर रघुनाथ वहाँ से निकल उस हवेली के दुमहले पर जा पहुँचा था। यह इन लोगों को विदित ही न था। जो उन लोगों को जरा भी मालूम हो जाता कि रघुनाथ ऊपर पहुँच गया है तो साथही ये लोग उसका पीछा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर उसे जीता न छोड़ते। रघुनाथ जो यह भागाभागी कर रहा था, मतलब से खाली न था; क्योंकि मारपीट कर भिड़ जाने की अपेक्षा उसे इस भागाभागी से अधिक लाभ था।

गोविन्द धीरे-धीरे सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा, और दीवान-खाने की ओर चला। रघुनाथ की श्रवण-शक्ति ऐसी थी कि जरा-सा भी खुटका होता था तो तुरत उसके कानों में शब्द आ जाते थे। किसी के पाँव की आहट लगते ही वह जान जाता कि कोई उसके पीछे आ रहा है। रघुनाथ भी दीवानखाने की ओर जा रहा था। जान-बूझकर वह इतनी शीघ्रता से जाने लगा कि पीछेवाले को यह स्पष्ट विदित हो जाय कि अमुक स्थान में कोई जा रहा है।

इधर रघुनाथ ने यह फुर्ती की कि चट आगे जाता-जाता पीछे हट आया और पेट के बल चलकर बगल की एक कोठरी में घुस गया। वहाँ जा धीरे-धीरे एक खिड़की खोल धम्म से बाहर कूद पड़ा।

षोडश परिच्छेद

रघुनाथ भयानक खेल खेल रहा था। अपने प्राण की माया-ममता को त्याग उसी गूढ़ रहस्य, जमींदार के मकान की हत्या-रहस्य का भेद पाने के लिए चेष्टा कर रहा था। रघुनाथ ने मन-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ही-मन ठान लिया था कि हत्या का जो सूत्र, जो प्रमाण उस रात को मिला था, रात भर में उसका अनुसन्धान, उसका निदर्शन यदि संग्रह न कर सका तो वे बदमाश लोग अवश्य ही दूसरे दिन उन सब प्रमाणों को उड़ा देंगे और फिर जमींदार के मकान की हत्या-रहस्य का पता न लगेगा। इसलिए रघुनाथ ने उस घोर विपदमय स्थान को न छोड़ा। फिर एकबार उसने गोविन्द के उस मकान की प्रदक्षिणा की और उसके अन्दर पैठ नीचेवाले तहखाने में बेखटके उतर गया। उस समय वे बदमाश लोग दूसरे मंजिल पर चढ़ आये थे। रघुनाथ तुरत उस सड़ी लाश के पास पहुँचा। पहले भी इसी स्थान में रघुनाथ की लालटेन चूर हो चुकी थी। अब महाघोर अन्धकार में खड़ा वह सोचने लगा कि बिना उजेले के क्या करूँ। ऐसा सोच बैठकर इधर-उधर ढूँढ़ने लगा। दैवयोग से एक अधजली मसाल पड़ी हुई उसके हाथ लगी। चकमक आदि आग बालने की चीजें तो उसके पास थीं ही। तुरत उसने आग निकाला और उस से बत्ती जलायी। उसी मसाल को ले रघुनाथ भली प्रकार से उस सड़ी हुई लाश की देख-भाल करने लगा। रघुनाथ ने कामिनी को कभी देखा तो न था; परन्तु लोगों के मुँह से उसके रूप-रंग का हाल सुना था। उसी से निज हृदय में उसने कामिनी का एक चित्र खींचा था। उस चित्र से इस लाश को मिलाने लगा। ठीक यह कामिनी के रूप-रंग से तो न मिला; तथापि बहुत कुछ मिलता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

था। शव का एक हाथ छाती पर पड़ा हुआ था, दूसरा हाथ कोहनी के पास कटा हुआ था। इतना देखते ही रघुनाथ की भौंहें कुछ कुञ्चित हो आईं, होंठ कुछ फड़फड़ाये। उसने एक आश्चर्य-रहस्य भेद किया।

तालाब के किनारे जो गड़ा हुआ हाथ मिला था, जिसे देख बिपिन बाबू ने कहा था कि यह मेरी लड़की का हाथ नहीं है; रघुनाथ ने मनही मन में बिचारा जो वह हाथ बिपिन बाबू की कन्या का न था तो यह शव भी कामिनी का नहीं है। जिस भ्रमात्मक प्रमाण को पाकर कुछ क्षण पहले उसे कामिनी का शव स्थिर किया था, वह भ्रम अब मिट मया। फिर रघुनाथ के चित्त में यह ढाढ़स हुआ कि कामिनी मरी नहीं है, वरन् जीती है। फिर रघुनाथ के हृदय में आशा का सञ्चार हो आया और उसने विचारा कि एकवार इस लाश-को बिपिन बाबू को लाकर दिखा देना चाहिये।

रघुनाथ ने विचारा था कि वे बदमाश अब इस तहखाने की ओर न आवेंगे। सीढ़ियों पर चढ़कर रघुनाथ एकमहले पर चढ़ा। वहाँ पहुँचकर किसी मनुष्य के बोल-चाल की उसे आहट लगी। रघुनाथ ने सुना, कोई मनुष्य दूसरे से कह रहा है—'वह बड़ा बेढब भागा।' कण्ठ-स्वर से उसने समझा यह गोविन्द अपने साथी से बोल रहा है। फिर गोविन्द ने कहा—,मैंने तो पहले ही कहा था कि वह ठेंगा दिखाकर चल देगा और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हम लोग उल्लू से रह जायँगे।' स्थिर भाव से खड़ा रघुनाथ यह बातचीत सुन रहा था। कुछ क्षण के उपरांत रघुनाथ को आहट लगी कि वे लोग दूकान की ओर जा रहे हैं। रघुनाथ भी चटपट उसी ओर चला। दूकान के बगल ही में सदर द्वार था। द्वार खोलने के अभिप्राय से रघुनाथ धीरे-धीरे द्वार खोलने की चेष्टा कर ही रहा था कि एक भयानक चिल्लाहट का शब्द सुन पड़ा। 'यः पलायति स जीवति' इस नीति को छोड़ रघुनाथ फिर लौटा और उसी ओर चला, जिधर से वह चिल्लाहट का शब्द आया था। रघुनाथ के जी में आया कि कदाचित् यह कामिनी की चिल्लाहट है। बस, इसी धारणा ने पुनः रघुनाथ को उस विपदमय घर की ओर फेरा। जिस कोठरी से वह करुणध्वनि आती थी। रघुनाथ वहाँ ही पहुँचा और उस अँधेरी कोठरी में घुटने के बल घूमने लगा। बार-बार हाथ पसारकर इधर-उधर टटोलने लगा। पर जहाँ उसका हाथ पड़ता था, वहाँ की धरती उसे गीली मालूम होती थी।

सहसा दूकान-घर के किवाड़ खोलकर चारों बदमाश उधर आये। उनके आते ही रघुनाथ का सामना हो गया। अपने फन्दे में रघुनाथ आपही फँसा। बदमाशों ने रघुनाथ को घेर लिया। तब रघुनाथ को कुछ न सूझा। तड़ा-तड़ वह तमञ्चा दागने लगा। तब तो बदमाश इधर-उधर कतरा गये और सहसा एक चिल्लाने लगा—'अरे बप्पा रे बप्पा! मरे रे मरे। हाय गोली लगी। दौड़ो!'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनते ही वे बदमाश दौड़कर फिर वहाँ आ घुसे और उसी अवसर पर रघुनाथ बाहर निकल आया। बाहर आते ही भरपूर वेग से दौड़ उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ वेश बदलकर पोटली रख गया था। वहाँ आकर कपड़े बदल साधारण किसान की सूरत बनाकर जमींदार के हवेली की ओर दौड़ा। दौड़ते-दौड़ते ठमककर यह देखता जाता था कि कोई पीछे तो नहीं आता है। पर मालूम हुआ कि कोई भी उस घर से बाहर नहीं निकला है।

रात तीन पहर बीत चुकी थी। अँधेरी सनसनाती रात में जमींदार के मकान में जा बिपिन बाबू को सोते से जगाकर वहाँ ले जाना उस समय रघुनाथ ने उचित न समझ सड़क के किनारे एक आम के सघन बगीचे में किसी वृक्ष के तले जा बैठा और कुछ क्षण के उपरान्त एक कपड़ा बिछा कर वहाँही लेट रहा। भोर के समय की धीमी-धीमी शीलत वायु के स्पर्श से उसे सकल-श्रमहारिणी निद्रा आ गई और वह निर्द्वन्द वहाँ सोता रहा। उधर विपिन बाबू भी हारे-थके तीन बजते-बजते जाकर अपने बैठक में एक चिलिम तमाकू पीकर पड़तेही सो गये। पौ फूटतेही सड़क पर चलनेवालों के पद की आहट लगतेही रघुनाथ आँखें मलता अँगड़ाई लेकर तुरत उठकर बैठा तो क्या देखता है कि बगीचे में से डग बढ़ाये, अपने को छिपाये वही उर्मिला जमींदार के मकान की ओर चली जा रही है। जाते-जाते औचक रघुनाथ के सामने आ पड़ी; आतेही चार नजर हुई। चार नजर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होते ही आश्चर्य से ठिठककर उर्मिला रघुनाथ के मुँह की ओर देखने लगी; पर उसके मुँह पर किसी प्रकार का भय या विस्मय नहीं झलकता था। उर्मिला से रघुनाथ ने कहा—'अब लौटी हो ?'

इस प्रश्न के उत्तर में झिझककर उर्मिला ने आँखें तरेर बड़े क्रोध से तेवर बदल कर कहा—'क्या तुम पागल तो नहीं हो ? जो बेसिर पैर की बातें कर रहे हो ?'

'क्यों मैंने तो सीधे तरह से पूछा है। कोई पागलपन तो नहीं किया। मैंने तो सहज स्वभाव से पूछा कि अब घर लौट रही हो ?'

'कहाँ गई थी, और कहाँ से आई ?'

पुनः उर्मिला के मुँह की ओर देखकर रघुनाथ ने कहा—'कहाँ से फिरी आ रही हो, यह क्या तुम नहीं जानती कि मुझसे पूछ रही हो ? अभी ढाई तीन घंटे हुए तुम्हीं से न भेंट हुई थी।'

'हाँ, कलरात को जरूर तुम्हें देखा था, जब तुम मेरे मामा की जान मारने के लिए घर में घुसे थे।'

रघुनाथ हँसी न रोक सका। ठठाकर बोला—'शाबास, तारीफ है ? पर यह जाने रहना कि रघुनाथ अब तुम्हारे पीछे लगा है। तुम हत्यारों की साथी हो। कल रात को तुम बिपिन बाबू की प्राण लेही चुकी थी। यह सब मुझे खूब मालूम है। मुझे ये बातें सिद्ध कर देना कोई बड़ी बात नहीं है। अब जो तुम अपना भला चाहती हो, तो सब बातें मुझसे साफ-साफ कह दो; नहीं तो बड़ा कष्ट उठावोगी।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इन बातों को ध्यान से सुनकर उर्मिला ने कहा—'तुम्हें देख जो मुझे डर या भय होता तो अभी मैं ऐसा चिल्लाती कि यहाँ लोग भर जाते; परन्तु मुझे तुमसे डर तो न लगा। पर तुम्हारी सूरत शक्ल देखकर, तुम्हारी बातचीत सुनकर एवं तुम्हारी चाल-ढाल से तुम हमें पागल जान पड़ते हो जिस लिए मुझे तुमपर करुणा आती है। भला बताओ तो कल रात को मामा के मकान के सिवा तुमने मुझे और कहाँ देखा ?'

र०—'गोविन्द के अड्डे पर।'

उ०—'कहाँ'

र०—'वही गोविन्द साह के अड्डे पर।'

उ०—'यह धुन तुम्हें क्यों समाई ?'

र०—'धुन कैसी ? मैंने अपने आँखों तुम्हें वहाँ देखा है।'

उ०—'कैसी बहकी-सी बातें कर रहे हो ? न जाने कौन मुआ गोविन्द और कहाँ उसका अड्डा ! मैं क्या जानू !'

बड़े आश्चर्य में आकर रघुनाथ चकित हो उसके मुँह की ओर देख सोचने लगा कि क्या मैंने जो सोचा था कि हत्या और हत्यारों का पता लगने में अब कोई बड़ी बात नहीं है; इस बारे में जो कुछ मैंने सोचा था, वह सब व्यर्थ कल्पना हो गई ? अब मैं आँखों को सच्चा कहूँ या इस लड़की की बातों को मानू ; इत्यादि। अनेक कल्पना करने के उपरान्त फिर रघुनाथ ने उर्मिला से कहा—'क्या सचमुच तुम गोविन्द के अड्डे में नहीं गई थीं ?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उ०—'कभी नहीं। जाना कैसा, मुझे मालूम तक नहीं है कि कौन गोविन्द और कहाँ उसका अड्डा।'

र०—'कल तुमने अपने मामा के यहाँ जिन लोगों को बुलाया था, वे कौन थे?'

फिर उर्मिला की भौंहे चढ़ गईं। ललाट में सिकुरन आ गया। नेत्र स्थिर हो गए। कोरों पर कुछ लालिमा छा गई। पर कुछ ठहर न जाने क्या सोच-विचार मुस्कुराकर बोली—'तुम्हारे इन प्रश्नों के उत्तर देने की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है, पर तुम्हारे भ्रम को मिटाने के लिए मैं इतना अवश्य कहूँगी कि मैं कुछ भी नहीं जानती। लोगों को बुलाना तो दूर रहा, मैंने कभी किसी का मुँह भी नहीं देखा है।'

फिर रघुनाथ विस्मित और उदास हो धीरे-धीरे कहने लगा—'आश्चर्य है! बड़ा आश्चर्य है?'

उ०—'क्यों आश्चर्य काहे का?'

र०—'आश्चर्य यह कि मैं अपने आँखों के देखे को मानू या तुम्हारे कहने को?'

उ०—'सब भ्रम है। सब झूठ है।'

र०—'भला, कामिनी के खून के विषय में जो लोग तुमपर पूरा सन्देह कर रहे हैं, इसमें तुम क्या कहती हो?'

मारे क्रोध के सारा शरीर उर्मिला का काँप उठा। क्रोध से नेत्रों में जल भर आया और एक ऐसा चक्कर आया कि सिर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थामकर वह धरती पर बैठ गई और जरा ठहरकर बोली—'क्या लड़की जान मुझ से मसखरी कर रहे हो ? पर, तुम्हारे मुँह पर मसखरेपन का कोई चिन्ह तो नहीं देख पड़ता। इससे मालूम होता है कि तुम्हारे जी में जरूर कोई-न-कोई सन्देह पैदा है। इससे तुम खोलकर कहो, मेरे बारे में तुमने क्या सोचा है ?'

र०—'मेरे कहे का तुम्हें विश्वास होगा ?'

उ०—'हाँ, होगा।'

र०—'मैं कौन हूँ, जानती हो ?'

उ०—'नहीं।'

र०—'मैं पुलिस का जासूस हूँ। कई दिनों से मैं बिपिन बाबू की लड़की की खोज में लग रहा हूँ।'

जब तक रघुनाथ उर्मिला से ये बातें कहता रहा, तब तक उसकी दृष्टि उर्मिला के मुँह की ओर बनी रही। पर इन बातों को सुनकर जरा भी उर्मिला के मुख पर किसी तरह का हेर-फेर न हुआ। उधर उर्मिला भी टकटकी बाँधे रघुनाथ की ओर निहार रही थी। जब रघुनाथ ने अपना कहना समाप्त किया, तब बड़े आग्रह से वह बोली—'भला आपको कुछ टोह लगी ?'

र०—'मेरी बातों को तुम जरा ध्यान से सुनो। मैं सच कहता हूँ, कामिनी के खूनवाले मुकद्दमे में अवश्य तुम मिली हुई हो। इसका मुझे पक्का प्रमाण मिल चुका है।'

रघुनाथ की इन बातों को सुन उर्मिला के मुँह का कुछ भी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाव न पलटा। किसी प्रकार की उदासी या चिन्ता का चिन्ह न दीख पड़ा। स्वभाविक कण्ठस्वर से वह बोली—'भला कहो तो तुम्हें क्या प्रमाण मिला है ?'

कामिनी के हत्या के सम्बन्ध में रघुनाथ को जो टोह लगी थी, उसने सब ब्योरेवार कह सुनाया। वहाँ आँधी-पानी के समय आधीरात को जाना और बिपिन बाबू से मिल जो-जो आश्चर्य बातें देखी सुनी थी—दूसरी रात को उर्मिला सरीखी एक लड़की को मैदान में देखना, खिड़की से बदमाशों को बुलाना, उन लोगों का हवेली में जा बिपिन बाबू को मारकर मूर्च्छित करना, वहाँ से रघुनाथ का गोविन्द के दूकान में जाना और वहाँ जो-जो देखा-किया; उन सब बातों को ब्योरेवार रघुनाथ ने कह सुनाया। इन सब बातों को सुन उर्मिला ने धीरे से कहा—'इस हत्या में बड़ी-बड़ी बातें हुई हैं, पर कुछ थाह नहीं लगता। भला, पैर के कड़े की जो तुमने कही, वह कहाँ है, जरा देखूँ तो ?'

रघुनाथ ने अपनी पोटली खोलकर कड़ा निकाल दिया। उसे देख तुरत उर्मिला बोली—'यह तो मेरा है' पर साथही अपने पैर की ओर निहार कर बोली—'नहीं नहीं, मेरा तो मेरे पैर में है।'

कुछ क्षण तक रघुनाथ मन-ही-मन न जाने क्या सोच विचार-कर बोला—'तुम्हारी सूरत की तुम्हारे नाते में कोई और स्त्री है ?'

उ०—'नहीं। मुझे तो याद नहीं आती।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'भला, तुम्हारी कोई बहन थी।'

नेत्रों में आँसू भरकर उर्मिला ने उत्तर दिया—'इस संसार में मैं अकेली ही हूँ।'

गंभीर स्वर से रघुनाथ बोला—'ज्यों-ज्यों दिन बीतता जाता है, त्यों-त्यों उलझन बढ़ती जाती है। पर बिना इसका निबटारा किये मैं भी नहीं छोड़ने का।'

आग्रह से उर्मिला ने कहा—'मैं तुम्हें सहायता दूँगी।'

र०—'हाँ, जो चाहो तो सहायता दे सकती हो।'

उ०—'क्या सहायता करनी होगी, सुनूँ तो सही।'

र०—'रात को श्मशान में जाने कहूँगा, तो जाओगी।'

उ०—'हाँ, जाऊँगी।'

र०—'तो आओ, पर याद रहे, जहाँ मैं ले चला हूँ, वह भूतों की पुरी है।'

उ०—'चाहे जो हो।'

र०—'यहाँ से कुछ दूर है।'

उ०—'हो।'

र०—'एक बड़ाही भयानक दृश्य देखना होगा।'

उ०—'क्या करूँगी, जो कुछ होगा देखूँहीगी।'

र०—'अब यह कहो तुम किस समय चल सकोगी? मैं उसी समय तुम्हें लिवा ले चलूँ।'

उ०—'मेरी छुट्टी का क्या पूछना है, जब कहो तब चलूँ।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'कल रात से मैंने मुँह में पानी भी नहीं दिया है। बड़ी भूख लगी है। बिना खाये तो अब एक डग भी नहीं चल सकता। जमींदार की हवेली से कुछ ला दो तो खाकर एक लोटा जल पीऊँ।'

सप्तदश परिच्छेद

एक घण्टा हुआ उर्मिला रघुनाथ के साथ गोविन्द के घर की ओर गई थी। यह पहिले ही कह आये हैं कि गोविंद की दूकान गाँव से कोस भर पर है। और आध कोस के घेरे में कहीं एक भी मनुष्य की बस्ती नहीं है। चारों ओर घनी झाड़ी और जंगल बियावान है। रघुनाथ उर्मिला को साथ लिए हुए उस जंगल के बीच से चला गया। अड्डे के पास पहुँचते ही रघुनाथ उर्मिला को एक निराले स्थान में ले गया और बोला—'क्यों कुछ देर यहाँ अकेले रह सकोगी न ? डरोगी तो नहीं ?'

उ०—'न डरूँगी।'

र०—'तो इसी झाड़ी में दुबकी बैठी रहो। इस सामनेवाली हवेली के उस खिड़की के सामनेवाले जो आम के पेड़ को देखती हो, उसके नीचे देखती रहना और उसके नीचे जो दीख पड़े, इशारे से मुझे कह देना।'

उ०—'अच्छा।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उर्मिला की ढिठाई को देख रघुनाथ बड़ा सन्तुष्ट हुआ और और अब इस बात पर दुःख करने लगा कि भ्रम से उसने उस पर कितने सन्देह किये थे।। रघुनाथ सोचने लगा कि न जाने इसमें कितने रहस्य भरे पड़े हैं। नित्य नई-नई बातें निकलती आती हैं और अभी न जाने कितनी निकलेंगी। पर उर्मिला पर जो सन्देह हुआ था वह सरासर भ्रम था। अब तो रघुनाथ की नजरों में उर्मिला कुछ और ही जँचने लगी। अब वह निष्कलंक, निर्दोष, प्रेममयी एवं सुधामयी भासित होने लगी।

उर्मिला को रघुनाथ उस झाड़ी में छोड़कर आप दबे पाँवों गोविंद के मकान की ओर चला। कुछ दूर जा उसने अपने हबों को सँभाला। दोनों तमंचों में गोली भरकर कमर में लगाई। छुरा, कटार आदि को सँभाल दृढ़ होकर आगे चला। कुछ आगे चलकर बैठ गया। और द्वार पर कान लगाकर सुनने लगा। बहुत देर तक रघुनाथ कान लगाये रहा, पर कुछ भी न सुन पड़ा। तब उसे निश्चय हो गया कि सब लोग भाग गये, अब इसमें कोई नहीं है। रघुनाथ ने खिड़की के किवाड़ खटखटाये। खटखटाने से विदित हुआ की किवाड़ भीतर से बंद है। तब उसने बड़े कौशल से उसके अन्दर एक लोहे की अँकुसी डालकर किवाड़ खोला और उसके अंदर गया। कई एक कोठरियों में घूमता-फिरता कान लगाये आहट लेता रहा; पर कहीं से कुछ आहट न मिली। तब उसे निश्चय हो गया कि बदमाश इस अड्डे को छोड़

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चल दिये। अब रघुनाथ गोविंद की दूकान की ओर चला। जाते-जाते राह में टपका हुआ रक्त कई स्थानों पर देख पड़ा।

उसने अनुमान किया कि कल जिन लोगों को मैंने गाली मारी है, उन्हीं के शरीर का टपका हुआ यह रक्त है। ऐसा सोचता हुआ दूकान के द्वार पर पहुँचते ज्योंही उसने किवाड़ में धक्का दिया, तो उसे खुला पाया। रघुनाथ दूकान के अन्दर गया। पर वहाँ कोई न दिखाई दिया। तब तो उसे यह निश्चय हो गया कि आततायी यहाँ से भाग गए। गोविन्द के घर में जाते समय रघुनाथ उर्मिला से कह गया था कि अमुक स्थान पर दृष्टि रखना और जब मैं इशारा करूँ तो उसका उत्तर देना। इस कहने के अनुसार रघुनाथ ने वहाँ जाकर दुपट्टा हिलाया और इसकी बाट देखने लगा कि उधर से उत्तर मिले। पर बहुत देर तक उत्तर न मिला तो उसने फिर दुपट्टा हिलाया। पर तब भी कोई उत्तर न मिला। तब उसे सन्देह हुआ कि उस झाड़ी में शायद बदमाश छिपे न हों और कदाचित् उर्मिला भी उनके फन्दे में पड़ गई हो। ऐसा सोचता हुआ चट-पट रघुनाथ वहाँ से चलता हुआ।

उस झाड़ी में जाकर देखा तो वहाँ उर्मिला न मिली। तब तो मारे भय के उसका सारा शरीर काँपने लगा। और वह सोचने लगा कि यह क्या विचित्र रहस्य है। उलझन-पर-उलझन पड़ती जाती है। पर कुछ समझ में नहीं आता कि यह क्या जाल है!

जहाँ पर वह उर्मिला को बैठा आया था, वहाँ चारों ओर

९

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ढूँढ़ने लगा। पर उर्मिला का कहीं पता न लगा। तब रघुनाथ झाड़ी से बाहर निकलकर कुछ आगे बढ़ा तो क्या देखता है कि सामने एक पेड़ की डाली पर उर्मिला की ओढ़नी झूल रही है। उसे देख उसने सोचा कि कदाचित् वह इसी ओर गई हो। यह विचार कुछ दूर आगे बढ़ा, और वहाँ के छोटे-छोटे वृक्षों को देखा तो टूटे और कचरे हुये थे। जिससे यह स्पष्ट प्रमाणित होता था कि कुछ लोगों में यहाँ हाथा-पाई हुई है। ज़ब उस स्थान को उसने ध्यान से देखा तो टपकी हुई रक्त-की बूँदें भी देख पड़ीं।

क्षणमात्र बिलम्ब न करके वह रक्त के चिह्नों को देखता हुआ आगे बढ़ा। कुछ दूर आगे बढ़कर उसे तालाब की एक मेड़ दिखाई पड़ी जो अनुमान से तीस-बत्तीस हाथ ऊँची होगी। यह उस पर चढ़ा और वहाँ पहुचकर सामने की झाड़ी में से जो कुछ देखा, वह बड़ा आश्चर्यजनक था। जहाँ वह खड़ा था, ठीक उसके सामनेवाले मेड़ पर उर्मिला खड़ी अपनी धोती का लँगोटा बाँध रही थी। यह सब देख रघुनाथ उस ओर दौड़ा; पर ज्योंही उसके पास पहुँचा कि वह धम से तालाब में कूद पड़ी। जैसे जल-क्रीड़ा करने को लड़कियाँ जल में कूदा करती हैं, उसी प्रकार हँसती-हँसती उर्मिला प्राणविसर्जन के लिए जल में कूद पड़ी।

इस भयानक लोमहर्षक दृश्य को देख, रघुनाथ छाती पीटकर रोया। पर घबराया नहीं और व्यर्थ के सोच-विचार में समय को न खो तीर-सा दौड़ा और जाते ही उसने अपने हर्बों समेत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वस्त्र को उतार तट पर खड़ा हो जल की ओर निहारने लगा। उस समय उर्मिला कभी डूबती, कभी उतराती हुई डुबकियाँ खा रही थी। यह देख रघुनाथ तुरत जल में कूदा और तैर कर चार हाथ मार उसके पास जा उसने उसका हाथ पकड़ लिया। हाथ पकड़ने पर उर्मिला कुछ न बोली और न हाथ छुड़ाने की ही उसने चेष्टा की। उसकी कमर थामे तैरता हुआ रघुनाथ किनारे पहुँचा। और उसको जल से निकाल खड़ा कर दिया। जब वह कुछ सुस्ता चुकी, तब रघुनाथ ने उससे पूछा कि तुमने ऐसा कर्म क्यों किया ?

उर्मिला ने कहा—'मरने के लिये।'

रघुनाथ ने पूछा—'क्यों ? मरने क्यों लगी थीं ?'

इसके उत्तर में कुछ ठहर कर उर्मिला ने कहा—'यह मैं नहीं कह सकती।'

रघुनाथ ने कहा—'देखो खबरदार मुझसे झूठ न बोलना, तुमने क्या अपराध किया है ? क्या तुम कामिनी के खून में शरीक हो या उस बारे में कुछ जानती हो ?'

उ०—'नहीं-नहीं मैं उसमें कुछ भी नहीं जानती और न इसमें मेरा कोई सम्बन्ध ही है।'

र०—'तब मरने क्यों गई थीं ?'

उ०—'मैं जन्म की दुखिया हूँ; मैं अपनी बहन को प्राण से अधिक प्यार करती थी, दीदी का मुँह देख अपने सब दुख को भूली हुई थी; पर हाय ! अब बिना दीदी के मुझे जग सूना और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपना जीना दुखदाई जान पड़ता है। इसीसे अब जीने की इच्छा नहीं है।'

र०—'और जो तुम्हारी दीदी को जीती ला दूँ ?'

उ०—'क्या क्या, क्या कहा ?'

र०—'जो तुम यह डूबने का झमेला न मचातीं तो अब तक तुम्हारी बहन का कुछ-न-कुछ पता तो लग ही जाता।'

उ०—'क्या दीदी जीती है ?'

र०—'हाँ मुझे तो यही विश्वास है कि वह जीती है।'

परम कमनीय रूप-लावण्यमयी सुंदरी उर्मिला जिस समय रघुनाथ के मुँह की ओर निहार ये बातें सुन रही थी उस समय उसकी स्वाभाविक सुंदरता में और भी अधिकता हो गई थी। सुंदर-सुंदर लम्बे भ्रमरजाल-से काले बिखरे वालों और वस्त्र से टपकते हुये जलबिंदु, ऐसी शोभा बढ़ा रहे थे मानो वरुणलोक की कोई परमा सुंदरी रमणी इस जल से निकलकर खड़ी हुई है। रघुनाथ के पास जाकर सिर झुका सङ्कोच से उर्मिला ने कहा—'मुझे डूबते से बचाकर आपने अच्छा किया।'

र०—'हाँ इससे तो मेरा भी चित्त प्रसन्न हुआ।'

उ०—'तुमने मेरा लोक-परलोक दोनों सुधारा। जब तक मैं जीती रहूँगी तुम्हारा एहसान मानूँगी।'

र०—'अच्छा अब चलो तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा आवें।'

उ०—'क्यों ? मुझे जिस काम के लिये लाये थे, वह !'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'अभी भला कैसे कर सकती हो! यह गीले बाल, गीली धोती। अब तो घर चलो कपड़ा बदलो। पर देखो ऐसा लड़कपन कभी न करना।'

उ०—'नहीं, मैं घर तो न जाऊँगी, धोती गीली-सूखी जो हो; जिस काम के लिए आई हूँ, बिना उसे किये अब नहीं लौटने की।'

सहसा रघुनाथ ने कहा—'अच्छा बिना घर गये भी काम चल सकता है।'

उसी समय रघुनाथ को स्मरण आया कि गोविंद के घर की एक छोटी कोठरी में एक टँगने के ऊपर कई एक जनानी धोतियाँ रखी हैं, सहसा अड्डे वाले भागे हैं, सम्भव है कि साड़ियाँ छोड़ गये हों। रघुनाथ ने कहा—'शायद मैं तुम्हें उसी घर से पहिनने को ला दूँगा।'

बहुत-सा चक्कर देते हुए रघुनाथ को गोविंद के घर पर जाना हुआ। सचकित और सावधानी से उर्मिला को रघुनाथ वहाँ तक ले गया। पास पहुँच कर रघुनाथ ने उर्मिला से पूछा—'भला कुछ देर यहाँ अकेली ठहर सकोगी न? पर देखना फिर कोई उपद्रव न कर बैठना।'

उ०—'नहीं, तुम जाओ अब ऐसा न करूँगी।'

उर्मिला को वहाँ छोड़ रघुनाथ एक बार उस हवेली के चारों ओर परिक्रमा करके उसी जगह आया जहाँ उर्मिला को छोड़ गया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

था। चित्र-पुतली-सी उर्मिला को वहाँ खड़ी पाया। रघुनाथ ने कहा—'देखो मैं अब इस मकान में जाता हूँ। इशारा पाते ही उसका उत्तर देना।'

उर्मिला ने कहा—'हाँ, दूँगी।'

दौड़ कर रघुनाथ गोविंद के मकान के खिड़की के निकट जाकर खड़ा हुआ और कान लगाकर सुनने लगा। पर वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। कोई शब्द न सुन पड़ा। तब निर्दिष्ट स्थान से रघुनाथ ने उर्मिला को इशारा किया। उसके इशारे का उत्तर दे, वह भी अड्डे की ओर चली। उर्मिला को यह गुमान भी न था कि उस स्थान में उसे कैसे-कैसे भयानक दृश्य देखने पड़ेंगे।

अष्टादश परिच्छेद

रघुनाथ, उर्मिला को साथ लेकर गोविंद के सूनसान घर के भीतर घुसा। जिस घर में रक्त से भरी साड़ी रघुनाथ ने देखी थी उसी के द्वार पर उर्मिला को ले जाकर रघुनाथ ने कहा—'इस कोठरी के भीतर जाओ इसमें धोतियाँ हैं, उनमें से कोई एक पहन लेना।'

उर्मिला तो भीतर गई; किन्तु रघुनाथ द्वार पर खड़ा रहा। क्षण भर में भीतर से चिल्लाहट सुन पड़ी। सुनने के साथ ही दौड़कर रघु-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाथ अन्दर गया। रघुनाथ का संदेह व्यर्थ न हुआ। जो कुछ उसने सोचा था, वही हुआ। भीतर जाकर रघुनाथ ने देखा कि लोहू भरी साड़ी को छाती पर धर उर्मिला मूर्छित पड़ी है। जाते ही रघुनाथ ने उसकी मूर्छा तोड़ी। जागते ही पुनः उस साड़ी को देख उर्मिला चिल्लाकर रो उठी। प्रबोध वाक्यों में रघुनाथ ने उससे कहा—'रोओ मत तुम्हारी बहन जीती है। यह साड़ी उसी का प्रमाण है।'

मारे डर से रोती-काँपती उर्मिला बोली—'देखो खून में तो यह साड़ी डूबी हुई है।'

र०—'हो, पर मैं दृढ़ता से कहता हूँ कि तुम्हारी बहन जीती है।' कुछ क्षण तक तो उर्मिला भी उसी साड़ी को निहारती रही। तब रघुनाथ ने कहा—'व्यर्थ समय नष्ट करने से काम न चलेगा। तुम्हारी बहन जीती है, अभी उसका प्रमाण दिखाये देता हूँ। तुम जल्दी कपड़ा बदलो।' यह कह वह बाहर आकर खड़ा हुआ। कुछ देर में एक साड़ी पहने हुई बाहर आकर उर्मिला ने कहा—'यह धोती ऐसी चुनी-चुनाई मेरे नाप की धरी थी, मानो मेरे ही लिए यहाँ कोई धर गया हो।'

यदि चाहता तो रघुनाथ उस समय उस रहस्य को प्रकाशित कर देता; परन्तु उसने उसे कहना मुनासिब न समझा और उर्मिला को साथ लेकर आगे चला। जाते-जाते रघुनाथ ने उर्मिला से पूछा—'कहो तुम डरोगी तो नहीं?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उ०—'नहीं मैं न डरूँगी।'

र०—'एक बड़ा ही डरावना दृश्य तुम देख सकोगी न ?'

उ०—'हाँ।'

र०—'एक मुर्दा दिखाऊँगा।'

उ०—'दीदी को ?'

र०—'देख कर तुम्हीं पहचानना कि वह तुम्हारी दीदी है, या और कोई !'

उ०—'उः कैसे देखूँगी !'

र०—'न देख सकोगी तो क्यों अब आगे चलें, लौटो कोई दूसरा उपाय करें।' यह कहकर रघुनाथ लौटाही चाहता था कि उर्मिला बोली—'ठहरो सुनो तो सही ! क्या तुम्हें निचश्य है कि वह मेरे दीदी की लाश नहीं है ? जो दीदी की नहीं है तो वह जीती है ?'

रघुनाथ ने कहा—'मुझे तो ऐसा ही विश्वास है।'

उ०—'कैसे ?'

र०—'कार्रवाइयों को देख-भाल कर।'

उ०—'तो चलो मैं चलूँगी।'

र०—'फिर अचेत तो न हो जाओगी ?'

उ०—'जो बहन की लाश न होगी तो क्यों अचेत होने लगी और जो उसकी होगी तो अब जीने की भी नहीं, उसी के बगल में मेरी भी मिट्टी पड़ेगी।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०——'नहीं-नहीं तुम्हें मरना न होगा। लो आओ चलो।'

रघुनाथ अपने साथ एक छोटी-सी नई लालटेन लेता आया था। उसीके उजेले से उर्मिला को नीचे वाले तहखाने में ले चला। जब ये दोनों तहखाने में उतर गये तब रघुनाथ ने उर्मिला से कहा——'देखो कोई डर की बात नहीं है, जरा ढाढ़स कर वह सामने वाली लाश को देखो तो।'

यह कहकर रघुनाथ ने लालटेन की रोशनी तेज कर दी और उसे ऐसे ढँग से रक्खी कि उसका उजेला चारपाई पर पड़े। उर्मिला आँखें पोंछती काँपती हुई खाट के पास गई। रघुनाथ ने आश्वासन वाक्य से कहा——'देखो डरो मत, यह तुम्हारी बहन की लाश नहीं है। यह केवल निश्चय कराने को तुम्हें दिखाते हैं।'

उर्मिला आगे बढती थी, साहस कर देखा चाहती थी; पर फिर हिचकिचाती थी। अन्त में उसने कहा——'मुझसे तो नहीं देखा जाता।'

र०——'भला यह कौन-सी बात है। इतनी दूर इस नर्क में इतना कष्ट उठा कर आईं और अब कहती हो मुझसे देखा नहीं जाता! जरा साहस करो।'

यह कह उर्मिला का हाथ पकड़ कर उस खाट के पास ले जा ज्योंही, उसने उस चादर को उठाया जो उस पर ढँकी थी, और भौंचक-सा हो बोला—'हैं, यह क्या, लाश इस पर से कहाँ गई?'

कुछ ठहर कर रघुनाथ ने सोचा जिस समय बदमाश लोग

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भागने लगे हैं, शायद उसी समय वे उस लाश को भी साथ लेते गये होंगे। और इससे यह भी जान पड़ता है कि उन दुष्टों ने कामिनी को मार डाला। अब वह जीती नहीं है। जो वह देह कामिनी की न होती तो बदमाश क्यों ले भागते !

उ०—'कहो वह कहाँ है ?'

र०—'नहीं है।'

उ०—'क्या नहीं है ?'

र०—'जिसे दिखाने लाये थे।'

उ०—'तो अब क्या करोगे ?'

र०—'जो करना है वह तो मन में विचार ही लिया है। इतने दिनों से तो केवल मैं प्रमाण ही ले रहा था। पर, अब उन दुष्टों को गिरफ्तार करने का उद्योग करूँगा।'

रोती-रोती उर्मिला बोली—'तो क्या सचमुच उन दुष्टों ने मेरी बहन को मार ही डाला ? क्या वह लाश उन्हीं की थी ?'

र०—'मुझे झूठ बोलने की तो आदत नहीं है। न मैं झूठ बोलूँगा। अब तक तो मुझे यही विश्वास था कि कामिनी जीती है। पर यह जो सब बातें देख रहा हूँ। इससे अब पहला विश्वास जाता रहा।'

सुन्दरी उर्मिला फूट-फूटकर रोने लगी। उसके बड़े-बड़े नेत्रों से अश्रु टपकने लगा। यह देख उसे ढाढ़स देने के लिये रघुनाथ ने कहा—'देखो घबराओ मत। अभी भी आशा बहुत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुछ है।' यह कह उर्मिला को साथ ले रघुनाथ तहखाने के ऊपर आया। घटना स्रोत में बहता वह फिर किनारे लगा। उसके हृदय में पुनः एक नवीन आशा का उदय हुआ।

एकोनविंशति परिच्छेद

रघुनाथ ने विचारा कि गोविंद के इस शून्य खड़हर सरीखे सारे मकान को एक बेर भली-भाँति खोज-खाज तो लें। कामिनी मर चुकी है, इस बात के अनेक प्रमाण पाने पर भी रघुनाथ के हृदय में न जाने क्यों यह पुनः कल्पना हो आई कि कामिनी मरी नहीं है, जीती है। बस, ऐसा सोच मकान के एक ओर से सम्पूर्ण स्थानों को खोजता हुआ चला। खोजते-खोजते रघुनाथ उस हवेली के अन्तिम हिस्से में पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही वह दीवार की भली प्रकार परीक्षा करने लगा। रघुनाथ को सन्देह हुआ कि यह केवल दीवार ही नहीं है। यहाँ कुछ और भी है। इस संदेह के होते ही इधर-उधर टोहटाह करते-करते उसे एक गुप्त द्वार का पता लगा। कारीगर ने ऐसी चतुराई से द्वार बनाया था कि दीवार से किसी प्रकार उसकी भिन्नता प्रतीत नहीं होती थी। रघुनाथ ही की ऐसी तीव्र दृष्टि थी जिसने चट उस भेद को समझ लिया। रघुनाथ ने सोचा कि जब इस भेद से द्वार बना है तब अवश्य ही इसके भीतर भी कोई बड़ाही विचित्र गुप्त स्थान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होगा, और क्या आश्चर्य कि उन बदमाशों ने यहाँ ही शरण ली हो, ऐसा सोच कर ज्योंही रघुनाथ ने धक्का दिया कि चट द्वार खुल गया। इससे विदित हुआ कि अभी कोई इसी द्वार से गया है और शीघ्रता के कारण द्वार बन्द करना भूल गया है। उसी द्वार से रघुनाथ एक कोठरी के अन्दर गया। वह कोठरी चोर-कोठरी जान पड़ी। सिवा उस द्वार के वहाँ और कोई द्वार भी नहीं जान पड़ता था। केवल उजेले और वायु सञ्चालन के लिये कई एक "रोशनदान" थे। रघुनाथ ने बटुये में से चकमक और लालटेन निकाली। चकमक को झाड़ कर लालटेन बालकर देखा तो वहाँ एक चारपाई बिछी हुई है और यह अनुमान होता था मानो अभी कोई यहाँ था जो चला गया है। लालटेन लेकर रघुनाथ खाट के पास गया और बड़े ध्यान से उसे देखते-देखते न जाने क्या उस पर से उठा बड़े यत्न से उसे कपड़े में बाँध कर वहाँ से चला। कामिनी जीती है, पुनः यह बात रघुनाथ के चित्त में दृढ़ होने लगी। अब उस मृतदेह के खोजने की उत्कण्ठा भी उसे न रही। जहाँ उर्मिला को छोड़ आया था, वहाँ जाकर रघुनाथ अपनी चादर से खोल कर एक बालों की लट उर्मिला के हाथ में देकर बोला—'पहचानो तो यह बाल किसके सिर के हैं?' कुछ क्षण उपरान्त उर्मिला ने बड़ी प्रसन्नता से उत्तर दिया—'यह तो मेरी प्यारी बहन के-से बाल हैं।'

र०—'खूब अच्छी तरह देख-भाल लो।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उ०—'हाँ, हाँ, मैं ठीक कहती हूँ, दीदी का बाल है।'

र०—'धन्य ईश्वर तेरी महिमा।'

उ०—'क्यों क्यों, क्या हुआ ?'

र०—'तुम्हारी बहन जीती-जागती है। उसके जीते रहने का मुझे कुछ प्रमाण मिला है।'

उ०—'ये बाल तुम्हें कहाँ मिले ?'

र०—'एक चोर कोठरी में।'

उ०—'खाट पर की उस लाश का पता लगा ?'

र०—'अब उसकी कोई आवश्यकता नहीं है।'

उ०—'खोल कर कहो, अब तुम्हें बहन का क्या पता लगा।'

र०—'जिसके सिर का यह बाल है, वह चौबीस घंटे पहले जीती थी और उस खाट पर की लाश बहुत दिन की सड़ी-पची थी।'

उ०—'तो बहन जीती है न ?'

र०—'कल रात को जब मैं इस हवेली में आया था, तब तक तो तुम्हारी बहन जीती थी। जरा यहाँ ठहरी रहो, मैं सब बातें तुम्हें आकर कहे देता हूँ।'

यह कह चट रघुनाथ वहाँ से चला गया और प्रायः पाव घण्टे के उपरांत पुनः लौटकर आया। उस समय उसके मुँह पर प्रसन्नता झलक रही थी। उसे प्रसन्न देख उर्मिला को प्रतीत हुआ कि उसकी बहन के जीती रहने का शायद पूरा और सच्चा पता लग गया है; तब ही वह हँसता हुआ आया है। ऐसा सोच

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुस्कुरा कर उर्मिला ने उससे पूछा—'कहो अबकी क्या खोज-खाज आये ? कुछ पता लगा ?'

बड़ी मीठी बोली से उसने कहा—'इसमें अब कोई धोखे की बात नहीं है कि तुम्हारी बहन जीती-जागती है।'

यों तो कुछ देर से उर्मिला रघुनाथ के साथ-ही-साथ थी और अब तक उसे निपट पुलिस ही का जासूस माने हुई थी; परन्तु इस समय उसका प्रसन्न वदन देख भली प्रकार उसकी ओर निहारने से उर्मिला को यह दृढ़ प्रतीत हो गया कि वह सामान्य मनुष्य नहीं है। वह जैसा ही गुणवान, बलवान और साहसी है; वैसे ही उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग सुन्दर और सुडौल हैं एवं उसीके अनुरूप उसकी बोलचाल में भी रस टपकता है। इससे प्रतीत होता है कि किसी सत्कुल में इसका जन्म हुआ है। तब तो बड़े उल्लास और मधुर एवं मन्दस्वर से उर्मिला ने पूछा—'भला कहो तो तुम्हें कैसे बहन के जीते रहने का प्रमाण मिला ? बिना सुने जी अकुलाता है।'

इसके उत्तर में बिना कुछ कहे रघुनाथ ने एक अधफटा कागज उर्मिला के हाथ में दिया, जिसे देखते ही चौंककर उसने कहा—'हैं ! यह तो बहन के हाथ की लिखी चीठी है ?'

र०—'हाँ, मुझे भी ऐसा ही प्रतीत होता है। लो अब छाती ठोककर कहता हूँ कि जीती-जागती तुम्हारी बहन को लाकर मिला देता हूँ। तुमने उसके लिए कोमल कलेजे पर बड़ी चोटें सही हैं।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उर्मिला नीचे लिखे पत्र को पढ़ने लगी—

'परम पूजनीय श्रीयुत पिताजी महाशय श्रीचरणेषु—सिर पर से एक भयानक बला तो टल गई, पर······

मेरी समझ में, अपने घर से बहुत दूर नहीं......

परमेश्वर ? क्या अब मुझे फिर अपना······

जन्म स्थान, पिता, बहन को देखूँ······

कुछ इन्द्रजाल का-सा खे······

भाग से विचारी······

आप उसे देख······

उर्मिला बड़ी नि······'

इस फटी हुई चिट्ठी को बड़े ध्यान से उर्मिला कई बार पढ़ कर बोली—'कुछ साफ समझ में नहीं आता। यह सब क्या लिखा है। इन्द्रजाल—भाग से एक विचारी—आप उसे देख—उर्मिला बड़ी नि—यह सब क्या है ? तुम कुछ समझे ?'

र०—'कुछ-कुछ।'

उ०—'भला कहो तो क्या समझे ?'

र०—'वख्त पड़े पर सब बता दूँगा। अब घर चलो बहुत काम करना है। ढील से काम न चलेगा।'

उ०—'मैं तो जन्म की दुखिया हूँ, दूसरे के टुकड़े से अपने दिन काटती हूँ। चिट्ठी में क्या लिखा है—'उर्मिला बड़ी प्रसन्न' मैं काहे से प्रसन्न हूँ !'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'किसी के एक ही-से दिन नहीं रहते। न कोई सदा दुखिया ही रहता है और न सुखिया ही रहता है। तुम्हारे भी अब दुख के दिनों का अन्त ही समझो।' जमींदार की हवेली में अभी बड़े-बड़े गुप्त रहस्य है, धीरे-धीरे तुम्हें सब बताऊँगा। अभी तो हमें उन्हीं लोगों का पल्ला धरना है, जो तुम्हारी बहन को चुरा ले गये हैं।'

उ०—'अभी भी तो वे दुष्ट बहन को मार सकते हैं ?'

र०—'नहीं अब वे ऐसा न करेंगें; क्योंकि मैं उनके पीछे लगा हूँ, इसे वह जान गये हैं। अब खून करने का साहस न होगा।'

ऐसा कह उर्मिला को साथ लेकर रघुनाथ जमींदार के मकान की ओर चला। आधे रास्ते पर पहुँचते ही एक आश्चर्य-जनक घटना हुई।

मनुष्य के भाग्य-चक्र के साथ-ही-साथ संसार का घटना-चक्र भी घूमा करता है। घड़ीभर के उपरान्त जो अपने को अतुल विभव का उत्तराधिकारी होना मान आनन्द के समुद्र में गोते लगा रहा है, आधी घड़ी के उपरान्त उसकी कल्पनाएँ ध्वंश हो जाती हैं और वह महा-विपद जाल में फँस जाता है। इसीसे कहते हैं मनुष्य के भाग्य में क्या है, कोई नहीं जानता। भविष्य में क्या होना है—यह सिवा परमात्मा के दूसरा कोई भी नहीं जानता।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विंश परिच्छेद

बड़ी सावधानी से रघुनाथ चला जा रहा था। जाते-जाते जब आधे रास्ते तक पहुँचा उसे किसी मनुष्य के कराहने का आर्तनाद सुन पड़ा। इस करुणा भरे शब्द को सुनते ही रघुनाथ चौंक पड़ा। घबड़ाकर उसने उर्मिला से कहा—'जरा तुम यहाँ ठहरो, पाव घण्टे तक यहाँ मेरी राह देखना। जो इससे देरी हो तो तुम अकेली ही अपने घर चली जाना। देखो, यहाँ पद-पद पर शत्रु हैं। जरा सावधानी से घर जाना।'

एक हाथ में पिस्तौल और दूसरे हाथ में छुरा लेकर रघुनाथ उसी सीध पर चला, जिधर से वह कराहने का शब्द आ रहा था। कुछ दूर जाने पर फिर वह शब्द न सुन पड़ा। रघुनाथ उस सघन झाड़ी में झपटा हुआ धँसा जा रहा था और यह अनुमान कर रहा था कि यह कण्ठ स्वर उमेश बाबू का-सा मालूम होता है। जिस जंगल में रघुनाथ जा रहा था, वह बड़ा ही सघन था। परन्तु रघुनाथ भी चारों ओर बड़े ध्यान से देखता-भालता चला जा रहा था। रघुनाथ का परिश्रम व्यर्थ न हुआ। कुछ दूर आगे जाकर धरती पर पड़ी हुई रक्त की बूँदें उसे दिखाई दीं। चट वह वहाँ लेट गया और अन्दाज बीस हाथ तक पेट के बल चल कर एक पेड़ के नीचे जाकर खड़ा हो गया। वृक्ष के चारों ओर बहुत से रक्त के छींटे पड़े दिखाई दिये। और वे छींटे तब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तक सूखे न थे। इससे यह जान पड़ता था कि अभी कुछ देर हुआ, यह रक्त गिरा है। फिर रघुनाथ पेट के बल चलने लगा; पर बड़ी चेतनता से चारों ओर देखता-भालता जाता था। रघुनाथ की ऐसी तेज नजर थी कि सामान्य-से-सामान्य चीजें भी उसकी दृष्टि से बच न सकती थीं। एक झाड़ी के अन्दर जाकर उसने देखा कि पेड़ों के सूखे पत्ते मनुष्य के पाँवों से कचरे हुए हैं और उनपर टपका हुआ रक्त बराबर पड़ा हुआ है। इन चिह्नों को देखकर रघुनाथ ने विचार किया कि अवश्य अताताइयों की संख्या कम नहीं है। वे कई आदमी हैं। और कुछ आगे बढ़ने पर पड़े हुए पत्तों से यह प्रमाणित हुआ कि कुछ लोगों ने मिलकर किसी को घसीटा है, और घसीट कर ले गये हैं। उसी ओर बड़े वेग से रघुनाथ दौड़ा। कुछ दूर जाकर उसने देखा कि एक साड़ी काँटों से चिथी और रक्त में सनी हुई पेड़ की डाली में उलझी पड़ी है। उसे देखतेही रघुनाथ का हृदय काँप उठा। उसे ऐसा निश्चय हुआ कि बदमाश लोग बलपूर्वक किसी अबला को घसीट ले गए हैं।

यह साड़ी सामान्य और मोटी थी। स्वतः रघुनाथ के हृदय में यह शंका हुई कि क्या बिपिन बाबू की लड़की ऐसी मोटी और साधारण साड़ी पहिनेगी? परन्तु फिर वह यह निश्चय करने लगा कि कामिनी जो साड़ी पहिने हुई थी, उसे बदमाश लोग इसलिए उतार और चीथ कर उसके घर में फेंक आये थे, जिससे निश्चय हो जाय कि कामिनी सचमुच मार डाली गई है, और अब उन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बदमाशों ने अवश्यही उसे कोई मोटी-सी धोती पहिना छोड़ी होगी—इत्यादि कल्पना वह करने लगा। पर यह उसे निश्चय होगया कि इस पथ से किसी स्त्री को अवश्य वे दुष्ट घसीट ले गये हैं। ऐसा सोचता हुआ व्यर्थ वहाँ समय नष्ट न कर रघुनाथ बड़ी शीघ्रता से उस स्थान से दौड़ा और उसी तेजी से दौड़ता हुआ बदमाशों के बहुत पास तक पहुँच गया, जहाँ से कुछ लोगों के बोल-चाल का शब्द सुन पड़ता था। मालूम होता था कि कुछ लोग आपस में तकरार कर रहे हैं।

बदमाशों का पीछा करता हुआ रघुनाथ एक बड़े सघन बीहड़ स्थान में जा पड़ा, जहाँ की धरती छोटे-बड़े नीचे-ऊँचे वृक्षों से ढँकी हुई थी। कहीं बड़े-बड़े वृक्षों की प्रकाण्ड डालें टूटी पड़ी थीं। कहीं बड़े-बड़े पुराने पेड़ अधउखड़े से लोट रहे थे। कहीं बनैली लताओं ने स्थान छेंक रक्खा था, जिनके बीच-बीच में कटे या टूटे वृक्षों के छोटे-छोटे ठूँठ खड़े थे। तात्पर्य यह कि वह स्थान सघन और बड़ाही बीहड़ जंगल था। ज्यों-ज्यों रघुनाथ आगे बढता जाता था, त्यों-त्यों लोगों के तकरार का शब्द अधिक स्पष्ट होता जाता था। जब उसने समझा कि मैं अब बहुत निकट आ गया हूँ, तब वह बैठ गया और बड़ी सावधानी से बैठा-बैठा आगे घिसकने लगा। अनुमान से कोई दो रस्सी दूर जब वह पहुँचा तो एक भयावह लोमहर्षण कार्य उसे दीख पड़ा; जिसे देख क्षणकाल के लिए रघुनाथ चमकित, विस्मित और किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जरा ठहर कर अपने को सम्हाल रघुनाथ क्या देखता है कि कई एक काले मुसण्ड सण्ड-मुसण्ड लोग खड़े आपस में तकरार कर रहे हैं। इसके पहले जब रघुनाथ राजापुर के आसपास के ग्रामों में छिप कर खोज ले रहा था, तब भी उसे इसका पता लग गया था कि बहुत से ठग-बदमाश बैरागियों के वेश में यहाँ आये हुए हैं और उन्होंने अपना अड्डा यहाँ जमाया है। रघुनाथ के चित्त में यह जँच गया कि ये लोग वास्तव में उन्हीं ठग-बदमाशों में से हैं।

जमींदार के मकान वाली हत्या के दो महीने पहले राजापुर के पास एक गाँव में एक खून हुआ था। रामदेव नामक किसी किसान का उसके मकान के सामने कोई हत्या कर गया था। पर पुलिस खूनियों का पता न लगा सकी थी। तब रघुनाथ को वह काम मिला था। रघुनाथ ने यही स्थिर किया था कि ठग बैरागीही उसे मार गये हैं। पर अब तक उन खूनियों को रघुनाथ गिरफ्तार न कर सका था।

सामने सात मोटे ताजे छद्मवेशी सन्यासी खड़े थे, जिनसबों ही के हाथ में लम्बे-लम्बे छुरे और बड़े-बड़े चिमटे थे। उनमें से पाँच मनुष्य दोजनों को घेर कर बड़ीही तकरार कर रहे थे; मार-पीट हुआही चाहती थी। सहसा रघुनाथ की दृष्टि एक हृदय-कम्पन दृश्य पर पड़ी, जिससे उसका हृदय काँप उठा, भय से सारा शरीर थर्रा गया। बदमाश खूनी जहाँ खड़े होकर लड़ रहे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थे, उससे कुछ दूरीपर, हाथ पाँव बँधे उमेश बाबू एक पेड़ के नीचे पड़े हुए थे। ललाट से रक्त बह रहा था। मुँह कुम्हलाया हुआ था, मुर्दनी सी छाई हुई थी।

बदमाशों ने उमेश को बाँधा है। वह कुचक्रियों के चक्र में आ फँसे हैं, अब किस ढँग से, किस उपाय से उन्हें शत्रुओं के कुचक्र से निकालें—रघुनाथ खड़ा यही विचारने लगा। सम्प्रति दो-जनों की जान रघुनाथ के कौशल पर निर्भर कर रही थी। रघु-नाथ अनेक प्रकार की बोली समझ और बोल सकता था। एक हाथ में तमञ्चा और दूसरे में छुरा लेकर धीरे-धीरे घिसकता-घिसकता उनलोगों के बहुत पास तक पहुँच गया। धीरे-धीरे वह उन-लोगों के इतने पास जा पहुँचा कि भली प्रकार उनलोगों की बातचीत सुनने समझने लगा। रघुनाथ समझा कि उमेश के प्राण लेने के लिए ये लोग झगड़ रहे हैं। पाँच जने तो कह रहे थे कि उसी क्षण उसी स्थान में उमेश को समाप्त कर डालो; परन्तु दो आदमी उसकी प्राणरक्षा किया चाहते थे। रघुनाथ ने मनही मन कल्पना की कि यदि पहुँच कर चुपके से उमेश के हाथ-पाँव खोल दें तो हम लोग दो आदमी हो जायँगे। तब अस्त्रधारी दो मनुष्यों से मुकाबिला करनेका वे दुष्ट सहसा साहस न करेंगे। उधर उमेश छूट जायगा; तब उसके प्राण का भी भय न रहेगा। ऐसा सोच रघुनाथ वहाँ से घूम कर उमेश के सन्मुख एक झाड़ी में जा खड़ा हुआ। उसी समय छद्मवेशी बैरागियों का विवाद

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भी बंद हो गया। उमेश को उसी समय मार डालने के लिए सब की राय हो गई थी।

एकविंश परिच्छेद।

उस झाड़ी के बीच में बैठा रघुनाथ देख रहा था कि वे बैरागी नरबलि देने के उद्योग में लग रहे हैं। सात आदमियों में से कौन घातक का कार्य करेगा, यह भी स्थिर हो गया; घातक चुना गया। चमचमाता खड्ग हाथ में ले पैंतरा बदलता उछलता हुआ वह घातक उमेश बाबू के पास आते ही उनकी गर्दन ताक कर ज्योंही खड्ग ताना कि जंगल के उस सन्नाटे को बेधता हुआ दुम से तमंचे का शब्द हुआ। घातक के दाहिने हाथ में गोली लगी। हत्याकारी के हाथ से खड्ग झन से गिर पड़ा और चिल्लाकर वह अपनी गोल में जा घुसा। कुछ देर तक तो भय और विस्मय से सबके सब चकित से रह गये। पर क्षणकाल ही के उपरान्त उन दुष्टों के पाषाण हृदय से भीति हवा-सी निकल गई। दलपति ने सोचा कि शत्रुओं की संख्या अवश्य थोड़ी-ही जान पड़ती है; क्योंकि यदि उनकी संख्या अधिक होती तो वे सामने आकर कैदी को छुड़ाने का उद्योग करते। दलपति ने न जाने चुपके से क्या कहा जिसके सुनते ही सबके सब साथही उस झाड़ी की ओर दौड़े

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिधर से गोली आई थी। झाड़ी के पास पहुँचते ही उन्हें मनुष्य के पद-संचालन की आहट सुन पड़ी। आहट के पाते ही वे और भी तेज दौड़े। उमेश को अकेला छोड़कर सबके सब झाड़ी की ओर दौड़े। उनमें से एक न जाने क्या सोचकर आगे न बढ़ झाड़ी के बाहर ही ठिठक रहा।

उसी क्षण रघाथ ने झाड़ी में से निकल पेट के बल चलकर उमेश के पास पहुँच बड़ी फुर्ती से उनके पाँवों के बन्धन को काट डाला; जिसके छूटते ही रघुनाथ ने कमर से एक दूसरा तमंचा निकालकर उनके हाथ में देकर कहा—'यह लीजिये और पीछे-पीछे मेरे-जैसे पेट के बल चले आइये।'

रघुनाथ के उपदेश के अनुसार उमेश भी चलने लगे और देखते-देखते फिर उसी झाड़ी में जा घुसे। जंगल के भीतर पहुँच कर रघुनाथ ने कहा—'जहाँ तक हो सके शीघ्र हमलोगों को झाड़ी से बाहर निकल चलना चाहिये।'

उत्तेजित कण्ठ से उमेश बाबू ने कहा—'उन दुष्टों को बिना सजा दिये ही?'

र०—'हाँ, अभी यों ही हम लोगों को निकल चलना चाहिये। अभी उन लोगों से कुछ छेड़छाड़ न करेंगे। क्योंकि इस सनय और बहुत से जरूरी काम करने हैं। मुझे पूरा प्रमाण मिला है कि कामिनी जीती है।'

उमेश ने आवेग से पूछा—'क्या कोई प्रमाण मिला है?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'हाँ, विशेष प्रमाण मिला है।'

उमे०—'तुम्हारे जैसा मनुष्य इस जिन्दगी में न देखा है और न देखने की आशा है। जो हो, जबतक जीऊँगा तुम्हारा ऋणी बना रहूँगा।'

र०—'यह बातें पीछे होंगी, अब जो कहता हूँ सो करो।'

उमे०—'कहो क्या करूँ।'

र०—'मेरे साथ चले आओ।'

उमे०—'और ये बैरागी ?'

र०—'वे सब तो सामान्य लोग हैं, सामान्य लोभ के लिए इस काम में हाथ डाले हैं। अब पहिले मुझे कामिनी को खोज कर निकालना है।'

उमे०—'ठीक है, जिन बदमाशों ने इन दुष्टों को हत्या के काम में नियुक्त किया है, उन्हें पकड़ना और सजा दिलवानाही हम लोगों का मुख्य कार्य है।'

र०—'हाँ, हम इसी फिक्र में तो लगे ही हैं। तुमसे मिलने के उपरान्त अब तक मैंने बहुत सी बातें खोज निकाली हैं। कामिनी के खून की खोज करते-करते बड़ी-बड़ी गुप्त बातों की खोज लगी है। भला यह तो कहो तुम क्योंकर इन बदमाशों के फन्दे में आ फँसे ?'

थोड़े में उमेश बाबू ने अपने ऊपर बीती हुई बातों को यों कह सुनाया—'आज सबेरे मेरे घर पर एक मनुष्य ने आकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा, आपके कोई मुलाकाती जो किसी आपद में आ फँसे हैं, मिला चाहते हैं।'

रघुनाथ ने पूछा—'उस मुलाकाती का नाम क्या है, चेहरा कैसा है, क्या यह सब तुमने उससे पूछा था ?'

उ०—'हाँ पूछा तो था, उसने तुम्हारा नाम और तुम्हारी ही सूरत-शक्ल बताई थी।

मुस्कराकर रघुनाथ ने पूछा—'तुम्हारे समझने में तो धोखा नहीं हुआ ? उसने अपने किसी संगी का हाल तो नहीं कहा ?'

उ०—'नहीं, नहीं ठीक उसने तुम्हाराही नाम कहा था।'

र०—'ठीक है मेरे आने की खबर उन दुष्टों को मिल गई है।'

उ०—'हाँ, यह तो ठीक है; मैंने स्वयं उन लोगों को बात करते सुना है। वे तुम्हें फँसाने का पूरा प्रयत्न कर रहे हैं।'

र०—'अच्छा करने दो। जब तक वे मुझे अपने जालमें फँसाने का उपाय खोजेंगे, तब तक मैं उन्हें बड़े घर तक पहुँचाये देता हूँ। अच्छा, फिर तुम उसके साथ कहाँ गये ?'

उ०—'वह मुझे अपने साथ उसी जंगल में लिवा लाया, वहाँ आकर मैंने तुम्हें तो नहीं देखा, परन्तु उन बदमाशों को देखा। तब मैं समझ गया कि मैं कुचक्रिओं के चक्र में आ फंसा। मैंने उन लोगों से पूछा कि मुझे क्यों बुलाया है ? उनलोगों ने इसका तो कोई उत्तर न दिया; पर चारों ओर से मुझे घेर लिया और पीछे से एक ने मेरे सिर पर ऐसा चिमटा मारा कि मैं धरती पर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गिर पड़ा और अचेत हो गया। फिर मुझे मालूम नहीं कि वहाँ कब तक मैं अचेत पड़ा रहा। जब मुझे होश आया तो देखा कि मैं जिस स्थान पर गिरा था, वहाँ नहीं हूँ और मेरा हाथ पाँव ऐसा कड़ा बँधा हुआ है कि मैं अपने किसी अंग को हिला नहीं सकता था, और वे लोग मुझे घेरे हुए थे।'

र०—'तुम यह समझ न गये थे कि यह लोग तुम्हें बलिदान देने को तैयार थे?'

उ०—'हाँ, यह तो मैं समझ गया था। आज आपही मेरे प्राणदाता हुए। जरा भी आप के आने में विलम्ब होता तो मेरे प्राण उन दुष्टों के हाथ से समाप्त हो ही चुके थे।'

ये बातें करते रघुनाथ और उमेश को दो-तीन मिनट से अधिक समय न लगा होगा। बात करते हुए दोनों जने झाड़ी में झपटे चले जाते थे कि किसी के चलने की आहट रघुनाथ को लगी। बदमाशों के हाथ से उमेश को क्यों कर बचावें; रघुनाथ को इसी की चिन्ता लग रही थी। अपने प्राण के लिए तो रघुनाथ कभी परवा नहीं करता था। सैकड़ों बेर सैकड़ों बदमाशों के जाल से निडर रघुनाथ निकल चुका है और सैकड़ों लोगों के प्राण की रक्षा कर चुका था। बड़ी शीघ्रता से रघुनाथ ने उमेश से कहा—'देखो इसी पथ से इस झाड़ी से जल्दी-जल्दी निकल जाओ, और इससे निकल उत्तर की ओर एक तालाब है, सीधे वहाँ चले जाना, वहाँ तुम्हें विपिन बाबू की भानजी मिलेगी, उसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साथ लिवा उसके मकान में पहुँचा; तब तुम अपने घर चले जाना।'

उ—'और तुम ?'

र०—'मेरी चिन्ता न करो, मैं तो किसी-न-किसी ढंग से अपने प्राण बचा ही लूँगा और इस जंगल से निकल जाऊँगा।'

उ०—'तो चलो न हम तुम साथ ही चलें ?'

र०—'नहीं ऐसा करने से तुम बच नहीं सकते, इसलिए जब तक तुम सड़क पर न निकल जावो तब तक हम यहाँ उन्हें रोक रक्खेंगे।'

उ०—'अकेले तुम इतने दुष्टों का क्योंकर सामना करोगे ?'

र०—'वक्त पर जो कुछ हो ?'

उ०—'नहीं नहीं ऐसा न होगा; तुम्हें अकेला छोड़कर मैं न जाऊँगा।'

हँसते-हँससे रघुनाथ ने कहा—'मेरे लिए तुम कोई चिन्ता न करो, मैं चाहूँ तो इनसे चौगुनी झुण्ड का मुकाबिला करूँ। ये तो कुछ हई नहीं है।'

उ०—'यह तो मुझे भी विश्वास है, परन्तु अकेले छोड़ने का जी नहीं चाहता।'

र०—'देखो देरी करने से हम दोनों फँस जायेंगे। जाओ मैं उन बैरागियों को इधर कुछ देर घुमाता हूँ; निधड़क तुम निकल जाओ।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उमेश बाबू रघुनाथ की बात को टाल न सके। चट वहाँ से निकल कर सीधे नदी की ओर चले। उमेश को वहाँ से हटाने में रघुनाथ का कुछ मतलब था। उमेश के चले जाने के कुछ देर बाद रघुनाथ पीछे फिर पुनः आगे की ओर चला। जाते-जाते पाँव पटक-पटक चलने लगा। और इसी प्रकार बहुत दूर तक चला गया। बहुत देर के उपरान्त पीछा करने वालों ने रघुनाथ के चलने की आहट पाई। इसके पहिले रघुनाथ ने घूम फिर कर कहाँ क्या है; देख लिया था। किसी विशेष लक्ष्य स्थान पर बद-माशों को ले जाने के लिए रघुनाथ अपने पाँव की आहट सुनाता जाता था।

उधर बदमाश रघुनाथ का पीछा कर रहे थे। वे प्राणपन से रघुनाथ का अनुसरण कर रहे थे; परन्तु वे किसी प्रकार से भी उसके पास तक नहीं पहुँच सकते थे। रघुनाथ इस घात में लग रहा था कि उन छलियों में से किसी एक को पकड़ लें। रघुनाथ का उद्देश्य, अभिप्राय, या कौशल कभी निष्फल नहीं होता था। रघुनाथ ने अपने कौशल से धीरे-धीरे उन्हें एक कटीली झाड़ी में ला छोड़ा। उस झाड़ी के अन्दर जाने का पथ ऐसा संकीर्ण था कि दो जने बराबर-बराबर उसमें नहीं जा सकते थे। इसके पहले रघुनाथ ने उमेश से उसका अंगरखा और दुपट्टा माँग लिया था। सहसा रघुनाथ उस झाड़ी से बाहर आया और उन बैरागियों के सामने से बिजली-सा चमककर चट से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फिर उस झाड़ी में जा दबका। आततांई उसे उमेश मान बड़े ही प्रसन्न हो आनन्द-ध्वनि करने लगे।

बैरागी बड़ी तेज़ी से रघुनाथ के पीछे दौड़े। रघुनाथ ने पीछे फिर कर देखा कि पीछे लगे वे लोग दौड़े चले आ रहे हैं। रघुनाथ ने विचारा कि अपने कौशल करने का अब अच्छा मौका है। उन लोगों में से एक सब से अधिक तेज दौड़ रहा था और वही रघुनाथ के बहुत पास आ गया था। रघुनाथ कुछ और तेज दौड़ने लगा। योंही प्रायः आधे घंटे तक दौड़ होती रही। जब रघुनाथ ने देखा कि उन छः जनों में से पाँच तो बहुत पीछे रह गए हैं और एक उसके पीछे चला जा रहा है। इसके पहिले रघुनाथ ने उन लोगों को एक संकीर्ण जंगल में ले जाना विचारा था। परन्तु अब केवल एकही को अपने पीछे आते देख रघुनाथ ने अपने पहले विचार को छोड़ दिया। वह विचारा कि अब इसे इसी जंगल में पकड़ना चाहिये। पीछा करने वालों में से पाँच जने तो इतने पीछे रह गये थे कि उनका पता भी न था। केवल एकही पीछे लगा आ रहा था। रघुनाथ ने अपने दौड़ने के वेग को ज्योंही कुछ घटाया कि चट वह पास आ गया। जब कोई पाँच हाथ की दूरी रह गई तो पीछा करने वाला मारे आनन्द के चिल्ला उठा। यह एक भयावनी शक्ल का लम्बा-चौड़ा और गाँठ-गठीला बलवान पुरुष था। रघुनाथ ने अपनी ऐसी भावभंगी दिखाई मानो बहुतही थका हुआ हाँप रहा है। रघुनाथ की ऐसी अवस्था

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देख वह प्रसन्न हो ठठाकर हँस पड़ा। हँसता-हँसता रघुनाथ के समीप आकर उसे पकड़ने के लिए उसने हाथ बढ़ाया। चट रघुनाथ ने घूमकर एक ऐसा धक्का मारा कि धम से वह मुँह के बल गिर पड़ा। उसके गिरतेही चट से रघुनाथ उसकी छाती पर चढ़ बैठा और उसके कनपटी पर ताक कर एक ऐसे जोर से घूँसा मारा कि वह मूर्छित हो गया। कुछ क्षण के उपरान्त जब उसे चेत हुआ तो उसने अपने हाथ-पाँवों को ऐसा जकड़बन्द पाया कि उसे हिलने तक की सामर्थ्य न थी। मुस्करा के रघुनाथ ने कहा-

'बड़ी तेजी से मुझे पकड़ने आये थे न? अब अच्छा हुआ। कहो पकड़ा न मैंने?'

रघुनाथ की ओर देख बैरागी चिल्लाकर बोला—'अरे! यह तो पुलिस का गोइन्दा ताजी है।'

र०—'हाँ बाबा जी! आपही ऐसे लोग अपना शिकारी समझ कर मुझे ताजी कहा करते हैं। अब यह कहिये, मेरे साथ चुपचाप चलना है या तुम्हें यहाँ ही रख चलें?'

बैरागी०—'बच्चा मुझे ले जाकर क्या करेगा?'

रघुनाथ ने तमञ्चे की नली उसके ललाट पर दबाकर कहा—'अच्छा तो यहाँही रख जाऊँ न?'

बै०—'बच्चा, मेरी जान न ले; मैं तेरे साथ चला चलता हूँ।'

र०—'तो यहाँ रहने की इच्छा नहीं है।'

बै०—'न बच्चा! मेरे गरीब की जान काहे को मारता है।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हँसते-हँसते रघुनाथ ने कहा—'पर इतना याद रखना कि भागने की जो जरा भी इच्छा हुई तो समझ रक्खो कि फिर मैं चट से गोली दाग ही दूँगा।'

बै०—'तो बच्चा मुझे ले जाकर क्या करोगे?'

र०—'तो बाबाजी मुझे पकड़ने को क्यों दौड़े थे?'

बै०—'कौन भागा जा रहा है, यही देखने को।'

र०—'हूँ? सच है, अच्छा अभी इतनी फुरसत नहीं है। समय पर सब कुछ होगा। अभी तो मेरे साथ चले चलो।'

इतना कह हाथ उसका तो बँधा रहने दिया और पाँवों के बंधन खोल उसे अपने साथ-ही-साथ रघुनाथ ले चला। शायद पथ में कहीं उसके किसी साथी से भेंट हो जाय; इसलिए रघुनाथ एक संकीर्ण कटीली झाड़ी में से उसे ले चला। कुछ देर में रघुनाथ उसे लेकर जमींदार के मकान पर पहुँचा।

द्वार पर आकर बिपिन बाबू ने रघुनाथ से भेंट की और उसको साथ लिवा के बैठक में आकर बैठे। बैठक में दो अपरिचित जन बैठे थे। उन्हें सम्बोधन करके बिपिन बाबू ने कहा—'यही वह आदमी है।'

इतना सुनते ही वे दोनों उठकर रघुनाथ के पास आये और उनमें से एक चट रघुनाथ की गर्दन में हाथ लगा कर बोला—'मैंने तुम्हें गिरफ्तार किया।'

यह सुनकर रघुनाथ के मुख पर किसी प्रकार के भय का

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चिह्न तो नहीं झलका; पर भौंहें कुछ चढ़ गई। एक बेर आँखें तरेर कर धीरे गम्भीर स्वर से रघुनाथ बोला—'किस मामले में ?'

उसने कहा—'इस हिसाब देने की मुझे गरज नहीं है।'

र०—'क्या आप लोग पुलिस के आदमी हैं ?'

वह—'हाँ, हम लोग पुलिस के आदमी हैं ?'

र०—'गिरफ़ारी परवाना कहाँ है ?

पुलिस के आदमी ने अपने वस्त्र में से हथकड़ी निकाल कर कहा—'यह देखो परवाना।'

चट पीछे हट फुर्ती से खड़ा हो एक पँचनली पिस्तौल हाथ में ले दपट कर रघुनाथ ने कहा—'मेरा भी यह परवाना है। खबरदार जहाँ खड़े हो खड़े रहो, नहीं तो खोपड़ी उड़ा दूँगा।'

यह ढंग देख घबरा के बिपिन बाबू उठकर बोले—'देखो, दंगा-फसाद मत करो। यहाँ यह सब काम नहीं है। बाबा ! खून हो जायगा।'

थोड़े दिनों से इन दोनों मनुष्यों ने पुलिस की नौकरी की थी। अभी उनमें पुलिस कार्य की दक्षता या बहुदर्शिता नहीं आई थी। बिपिन बाबू के निषेध करने की अपेक्षा बिना किये ही रघुनाथ की भाव-भंगी देखकर वे लोग मारे भय के हतबुद्धि-से हो गये थे।

रघुनाथ ने कहा—'बिपिन बाबू ! ऐसे समय में मुझे गिरफ्तार कराकर व्यर्थ काम में बाधा न डलवावें। समय पर मैं आपके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब सन्देह दूर कर दूँगा। आप अपने इस सन्देह का पूरा हाल मुझसे कहिये, मैं आप ही गिरफ्तार हो जाऊँगा। जिस हाकिम के पास कहिये, मैं स्वयं उसके पास चलने को तैयार हूँ।'

यह सुन कुछ सोच-विचारकर बिपिन बाबू रघुनाथ के प्रस्ताव से सम्मत हुए।

रघुनाथ ने कहा—'मैं आपकी बात मानता हूँ, पर इतना याद रहे कि यदि किसी ने मेरे शरीर में हाथ लगाया तो साथ ही उसकी लाश आपके सामने गिरेगी।'

बिपिन बाबू ने कहा—'नहीं, नहीं जो तुम अविश्वास का कार्य न करोगे तो कोई तुम्हारा बदन भी न छूएगा।'

कर्कश स्वर से रघुनाथ ने कहा–'हाँ, देखिये और कोई बात न हो।' इतना कह रघुनाथ ने पिस्तौल को कमर के फेंटे में खोंस ली।

एक मुहूर्त्त के लिए सन्नाटा छा गया। किसी के मुँह से कोई शब्द न निकला। सब चुपचाप बैठे थे। इतने ही में उर्मिला और उमेश बाबू उस मकान के अन्दर आये। उमेश को आते देखते ही मारे क्रोध के बिपिन बाबू का शरीर काँपने लगा। बड़े क्रोध में आ कर्कश स्वर से बिपिन बाबू ने उमेश बाबू से कहा—'अभी तुम मेरे मकान से निकल जाओ।'

बिपिन बाबू के मुँह से इस शब्द के निकलते ही सदर्प रघुनाथ बोल उठा—'नहीं! उमेश बाबू आप यहाँ से कहीं न जाइये।' फिर बिपिन बाबू से बोला–'महाशय बात बढ़ी जाती है।

११

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ा आश्चर्य है। आपके मन का भाव ऐसा एक साथ ही क्यों पलट गया। जरा समझाइये तो?'

बिपिन बाबू—'कारण बतलाने से तुम पुलिस वाले के साथ जाओगे न?'

र०—'हाँ जाऊँगा।'

बि०—'तो सुनो, उमेश ने मेरी कन्या को मारा है, इसका बहुत कुछ प्रमाण मिला है; और रिश्वत लेकर तुमने खून छिपाने की चेष्टा की है। इसके भी बहुत कुछ प्रमाण मिल चुके हैं।'

मनुष्य की बुद्धि भ्रमात्मक होती है। कोई चाहे कितना ही बड़ा बुद्धिमान क्यों न हो, कभी न कभी उसे भ्रम के अंधकार में पड़ना ही होता है। विशेष कर विपद् काल में अपनी बुद्धि को ठिकाने रखना तथा उचित कार्य को करना बड़ा ही कठिन होता है। कन्या के शोक में बिपिनबाबू ऐसे कातर हो रहे थे कि उन्हें अपने शत्रु-मित्र पर धोका होने लगा था। संशय-बुद्धि जो शोक-दुःख का मूल कारण है, बिपिन बाबू में समाविष्ट थी।

द्वाविंश परिच्छेद।

रघुनाथ स्वाभाविक धीर, शिष्ट और शान्त था; परन्तु बिपिन बाबू के अन्याय व्यवहार से उसके हृदय में बड़ी चोट लगी थी। बिपिन बाबू के उस रूखे एवं कठोर वाक्यों के प्रत्युत्तर देने के लिए

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उमेश के ओंठ फड़फड़ा रहे थे। पर साथ ही रघुनाथ भी उसके भाव को भाँप गया था। इससे रघुनाथ इशारे से उसे रोककर बिपिन बाबू से बोला—'कहिये आपको क्या प्रमाण मिले हैं?'

बि०—'ऐसा प्रमाण मिला है जैसे दिन को सूर्य का निकलना।'

र०—'भला कहिये तो सही जरा मैं भी तो सुनूँ।'

बि०—'वक्त पर सब सुना दूँगा।'

र०—'मैं समझ गया, आपकी बुद्धि सब जाती रही है।'

बि०—'याद है न, अभी तुम प्रतिज्ञा कर चुके हो कि तुम पुलिस के साथ बेउज्र चले जावोगे।'

र०—'हाँ, मुझे सब याद है, और मैं अभी आप तथा इन दोनों पुलिस वालों से बहुत कुछ रहस्य कहता; परन्तु यह मौका खेल-खिलवाड़ का नहीं है। इससे अब उधर चित्त नहीं जाता। अब मुझे आप से यह कहना है कि जरा ध्यान देकर इस फटी हुई चिट्ठी को पढ़िये। आपकी लड़की मारी गई है, इसे प्रमाणित करने के लिए पहले इसको साबित करना चाहिये कि वह मरी है या नहीं।

गोविन्द के अड्डे की उस ओर कोठरी में जो कटा हुआ पत्र मिला था, रघुनाथ ने उसे बिपिन बाबू के हाथ में दिया। उसे हाथ में ले देखते ही वह चिल्ला उठे—'यह तो मेरी कामिनी के अक्षर हैं। हाय बेटी! यह तो तेरे ही हाथ के लिखे हैं।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

'घबराइये नहीं ! यह न समझिये कि आपकी कन्या मर गई है। मैं पहले भी कह चुका हूँ और अब भी कहता हूँ कि आपकी कन्या जीती जागती है। और आज तक मैं इसी बात की खोज में लगा हुआ हूँ कि वह जीती है। आप जरा इस पत्र को ध्यान देकर पढ़िये तो सही।'

बिपिन बाबू ने तब बड़े ध्यान से एक-एक अक्षर को एक बार, दो बार, तीन बार पढ़ा। ज्यों-ज्यों वह उस चिट्ठी को पढ़ते जाते थे, त्यों-त्यों उनके मुँह पर प्रसन्नता झलकती आती थी। कुछ क्षण उपरान्त बड़े ही मधुर वचनों से उन्होंने रघुनाथ से पूछा—'यह तुम्हें कहाँ से मिला ?'

र०—'पहिले आप यह बतलाइये कि मुझ से आपने यह बर्ताव क्यों किया ?'

कातर कण्ठ से बिपिन बाबू ने कहा—'इस बिपद ने मेरी बुद्धि पर परदा-सा डाल दिया है। मुझे इस समय अपने-बिगाने का कुछ भी ध्यान नहीं है नीच स्वार्थियों के बहकाने में आकर मैंने यह नीचता की थी। रघुनाथ ! तुम सत्यवादी हो; तुम विश्वासी हो—मुझे इसका विश्वास है, पूरा विश्वास है।'

अपरिचित दो व्यक्तियों की ओर अँगुली दिखाकर रघुनाथ ने बिपिनबाबू से पूछा—'ये दो आदमी कौन हैं ?'

बि०—'यह मैंने तुम्हें पहिलेही कहा था कि मैं यहाँ का आनरेरी मजिष्ट्रेट हूँ। यह यहाँ के दारोगा और कर्मचारी हैं।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'इन व्यर्थ के सन्देहों को आपने इन लोगों से प्रकाश किया है ?'

वि०—'नहीं, नहीं, यह मैंने नहीं किया है।'

र०—'तो आपको जो भ्रम हुआ है, वह अनुमान बेबुनियाद है; यह आप उनलोगों को समझा कर बिदा कीजिए।'

दारोगा को साथ लेकर बिपिन बाबू दूसरे मकान में गए और वहाँ जाकर न जाने उनलोगों को क्या कहा या समझाया; और उस दिन की बात का जिक्र वह थाने में न करेंगे—ऐसा कह दारोगा जी चले गये और बिपिनबाबू लौट कर बैठक में आये। रनघुाथ से उन्होंने कहा—'उमेश बाबू के चाचा ने मरती समय जो 'वारिसनामा' लिखा था, न जाने कौन उसे चुरा ले गया।'

र०—'हैं! यह कब ?'

बि०—'उसी दिन जिस दिन मेरे मारने को खूनी मेरे यहाँ घुसे थे।'

र०—'उसी रात को ?'

बि०—'हाँ! मेरा तो सन्देह तुम्हीं पर हुआ था।'

र०—'अपराध ?'

बि०—'उसी समय, उसी रात को मेरे शयनगृह में तुम्हारा आना, मेरे चैतन्य होने के साथही वहाँ से तुम्हारा चले जाना। बस, मेरे संदेह की यही जड़ हुई।'

र०—'माना कि मेरे ऊपर आपका संदेह हुआ पर यह तो कहिये कि उमेश बाबू पर आपका क्यों संदेह हुआ ?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घर में जिस ओर उमेश बाबू खड़े थे, बिपिन बाबू उसी ओर दो डग आगे बढ़ बड़े आवेग से बोले—'उमेश ! मैंने तुम्हारे साथ बुरा बर्त्ताव किया है।'

रुँधे कण्ठ से उमेश ने कहा—'आपकी कन्या को मैं प्राण से अधिक चाहता था। मैंने ही उसके प्राण लिये; यदि आपके हृदय में यह बात जँच गई हो तो अवश्य आपने मेरे हृदय को दुखाया है।'

उमेश की बात को रोककर रघुनाथ बोला—'भाई, अभी इन बातों को रहने दीजिये। और बिपिन बाबू ! अब आप अपने सन्देह के कारण को साफ-साफ कह जाइये।'

जमींदार के हवेली के पासवाली फुलवारी के कुञ्ज में सन्यासिनी के साथ कामिनी की बातचीत, उर्मिला के साथ उमेश का प्रणय-सम्भाषण, उनके प्रेम-पथ में कण्टक स्वरूप कामिनी की हत्या-संघटन, आततायिओं के हाथ से बिपिन बाबू का प्राण संशय में पड़ना; इत्यादि बातें एक-एक करके सब बिपिन बाबू ने कह सुनाई।

हँसते-हसते रघुनाथ बोला—'यह सब सन्देह तो एक बात में मिट जाता है। कुचक्रियों ने आपकी कन्या को चुरा ले जाने के मतलब से जाल फैलाया था, उसी जाल में आपको भी फँसाने के तात्पर्य से, फुलवारी में आपकी कन्या से बातचीत करने का दृश्य आपको दिखाया था। एक आप ही नहीं, उमेश बाबू भी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आज उनके जाल में फँसकर अपने प्राण दे ही चुके थे। वे लोग आज भुलावा देकर इन्हें एक झाड़ी में ले जाकर हाथ-पाँव बाँध कर नर-बलि दिया ही चाहते थे कि मैं पहुँच गया। नहीं तो बेचारे अपने प्राण दे ही चुके थे। एक बड़े मतलब साधने के लिए वे बदमाश इतने जाल फैला रहे हैं। ये सब बड़े भयानक काम हैं।'

मुक्त कण्ठ से उमेश बाबू बोल उठे—'आप ही ने आज प्राण बचाये; नहीं तो मेरे प्राण तो वे ले ही चुके थे। आप-जैसा साहसी और परोपकारी मनुष्य मैंने तो नहीं देखा-सुना था।'

दुःख भरे स्वर से बिपिन बाबू ने कहा—'उः! कैसी मूर्खता मैंने की? हा! मैं कैसे भ्रम में पड़ गया।'

रघुनाथ ने उनकी बात सुनकर शीघ्रता से कहा—'अभी ये सब बातें रहने दीजिये। अब जो आपको कोई सन्देह बाकी रहा हो, तो कहिये। आपकी लड़की अभी तक कुचक्रियों एवं खूनियों के हाथ में है; बदमाशों के खोजमें अभी मुझे दौड़ना है।'

बिपिन बाबू ने कहा—'दो दिन पहले एक मनुष्य मेरे पास आया था। उसने मुझे जो चिट्ठी-पत्री दिखाई थी, उससे उस पर मेरा विश्वास हो आया था। उसीने मुझसे कहा था कि कुछ बदमाशों के द्वारा उमेश बाबू ने कामिनी का खून करवाया है। और तुम घूस लेकर उसके छिपाने की फिक्र में लग रहे हो। उसने कहा कि इन दोनों के उसे कई एक प्रमाण भी मिल चुके हैं।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'आप निश्चय रक्खें, जो आप के पास आया था, वह भी उसी मंडली का है।'

बि०—'वह बड़ा चतुर था। ऐसे ढँग से उसने मुझसे बात-चीत की थी कि उसके कहे का मुझे पूरा विश्वास हो गया था।'

र०—'भला मेरे बारे में उसने कुछ प्रमाण भी आपसे कहा?'

बि०—'नहीं, उसने कहा कि आप पहिले गोइन्दे को पुलिस में गिरफ्तार करवा दीजिये; तब मैं वहाँ बहुत-सा प्रमाण दे दूँगा।'

र०—'आदमी बड़ा पक्का था, इसमें कोई सन्देह नहीं। उसने जाल फैलाने में कोई बात बाकी नहीं छोड़ी थी। भला, उसका चेहरा-मोहरा कैसा था?'

बिपिन बाबू ने उसका पूरा-पूरा हुलिया कह सुनाया। सुनतेही रघुनाथ ने कहा—'बस, मैं समझ गया। वह बड़ाही धूर्त है। पक्का बदमाश है। वही बदमाशों का दलपति है।'

गोविन्द के अड्डे में रघुनाथ के साथ इसी ने ताला खोला और रघुनाथ को छुरा मारने आया था, तथा उस अड्डे में जो-जो आश्चर्य और विचित्र बातें देखीं थीं, उन सब को ज्यों की त्यों रघुनाथ ने बिपिन बाबू से कह सुनाई। रघुनाथ ने यह भी कहा कि आप के पास जो आया था, वह कौन है और इस उपद्रव का उद्देश्य क्या है। यह सब उसने समझ लिया है।'

धोखे में आकर उमेश बाबू से बिपिन बाबू ने जो खोटा वर्ताव किया था, उसके लिए वह बहुत पश्चात्ताप करने लगे। और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा कि यदि कामिनी का पता लग गया तो रघुनाथ को वह बड़ा आदमी कर देंगे।

उस दिन रघुनाथ के हृदय में नवीन भाव का उदय हुआ था, नवीन आशा की सृष्टि हुई थी। रघुनाथ ने सोचा—'गृहस्थी में धन की पहले आवश्यकता पड़ती है; बिपिन बाबू ने जो कहा है उस धन से मुझे बहुत मदद मिलेगी।'

रघुनाथ के साथ बिपिन बाबू की और भी बहुत बातचीत हुई, जिसके कहने की यहाँ आवश्यकता नहीं है। रघुनाथ जिस बैरागी को कैद करके लाया था उसे उसकी आज्ञा के अनुसार एक कोठरी में बन्द किया गया। रघुनाथ ने उसके पास जाकर अनेक प्रकार साम-दाम आदि भय से उससे पूछा; परन्तु सिवा उमेश बाबू के हाल के उसने कामिनी का कुछ भी हाल न बताया। इससे विदित हुआ कि बदमाशों ने बैरागिओं-ठगों से कामिनी की कोई बातही नहीं कही है। विवश रघुनाथ उसे बिपिन बाबू के हवाले कर और उस पर पहरा चौकी रख अपने काम पर जाने लगा; परन्तु बिपिन बाबू के अनेक कहने-सुनने पर रघुनाथ ने कुछ भोजन किया और क्षण काल विश्राम कर अपने काम पर चला। उमेश और बिपिन बाबू ने रघुनाथ के साथ जाने की बहुत जिद्द की; परन्तु रघुनाथ ने एक न मानी और अकेला ही वहाँ से चला। रघुनाथ जानता था कि उसे यमपुरी-सरीखे स्थान में जाना है। ऐसे भयानक स्थान में दो भलेमानुषों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को ले जाना उसने कदापि उचित न समझा। अपने प्राण के लिए रघुनाथ कभी परवा ही नहीं करता था। किन्तु दूसरों के जान की उसे अधिक चिंता रहा करती थी।

अस्त्र-शस्त्र तथा अन्य सरञ्जामों को लेकर रघुनाथ प्रस्तुत हुआ। उसी समय सूर्यदेव अस्ताचल तक पहुँचे थे। उनकी लाल-लाल किरणें विपिन बाबू के मकान पर झिलमिला रही थीं। पूर्व की ओर से अँधेरी कुछ ऐसे ढंग से आ रही थी मानो सन्ध्यादेवी काले कनात के अन्दर चली आ रही हैं। पक्षीगण भाँति-भाँति के कलरव को करते हुए रात विताने की चिन्ता में लग रहे थे। ग्वाले गौवों को चराकर घर लौटे आ रहे थे। गौवों के खुर से उड़ी हुई धूल मानो सूर्य को अस्त होते देख उनके प्रकाश को मन्द कर रही थीं। ऐसे शुद्ध गोधूली लग्न में अपने प्यारे 'वीर' को जंजीर से खोल अपने साथ लेकर रघुनाथ कामिनी की खोज में चला। ज्योंही घर से निकलकर कुछ आगे बढ़ा कि फुलवारी के द्वार पर सुन्दरी उर्मिला खड़ी दीख पड़ी; मानो वह उसी की बाट जोह रही थी। रघुनाथ ने चौंककर पूछा—'कहो इस समय तुम यहाँ खड़ी क्या कर रही हो?'

उ०—'तुम्हारी ही बाट देख रही थी।'

र०—'क्यों कुछ कहना है?'

उ०—'हाँ, तभी न।'

र०—'कहो क्या कहोगी?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोकिलकण्ठी उर्मिला ने बड़े मधुर स्वर से कहा—'तुमने जो उस लड़की का हाल कहा था।'

र०—'किस लड़की का?'

उ०—'वही जो ठीक मेरी सूरत की।'

र०—'हाँ, हाँ।'

उ०—'वह कौन है? क्या तुमने उसका कुछ पता लगाया? हमें बताओ, नहीं तो हम जाने न देंगे।'

स्त्रियों का, विशेषकर उर्मिला-जैसी सुन्दरी स्त्री का अनुरोध टालनेवाले जगत् में विरले ही होंगे। जो कोई होगा तो असभ्य, या पशु; ऐसों की मनुष्य में गणना नहीं हो सकती। रघुनाथ पढ़ा-लिखा सभ्य था; फिर भला वह क्योंकर उर्मिला की बात टाल सकता था। हँसते-हँसते रघुनाथ ने कहा—'वह लड़की कौन है, क्या तुम सुनना चाहती हो?'

उ०—'हाँ।'

र०—'क्यों? क्या तुम उसके सम्बन्ध में कुछ जानती हो? तुम्हारे चेहरे से यह भाव झलकता है कि तुम्हारे मन में कोई बात है। जो तुम्हारे जी में कुछ कहने की बात हो तो उसे खोलकर कहो; हिचको मत। यह निश्चय रक्खो कि मेरे ओर से तुम्हारी कोई बुराई कभी न होगी।

रघुनाथ के पास आ गरदन झुकाकर उर्मिला ने कहा—'माँ के पेट से हम दो बहिन एक साथ जन्मी थीं।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'यह तो मैं पहले ही समझ गया था कि बिना जोड़े के ज्यों की त्यों सूरत नहीं मिलती।'

उ०—'पर इतने दिनों से मुझे यही निश्चय था कि वह मर गई होगी।'

र०—'नहीं, नहीं तुम्हारी बहन जीती है।'

उ०—'तब तो जैसे हो सके, तुम्हें उसे मुझसे मिलाना पड़ेगा।'

र०—'डरो मत; जहाँ तक मेरे किये होगा, मैं अवश्य उसे मिला दूँगा। मैं समझ गया हूँ कि तुम्हारी बहन ठगों के हाथ में जा फँसी है और अब वह उनकी आज्ञा का प्रतिपालन करती है।'

उ०—'एक बात और है।'

र०—'वह क्या ?'

उ०—'मैं सच कहती हूँ, पहले मुझे विश्वास था कि मेरी बहन जीती नहीं है; पर अब मैंने जाना कि बहन जीती है। पहले जब मैंने तुमसे कहा था कि मेरी कोई बहन नहीं है, मेरा अपना अब कोई नहीं है, सच कहती हूँ उस समय और कोई नहीं था।'

र०—'हाँ, मुझे पूरा विश्वास है कि तुमने झूठ नहीं कहा था।'

उ०—'अब एक बात मुझे और कहनी है। आप सच्चे और साफ दिल के हैं, इससे मुझे कहने का साहस होता है। आपको मेरी यह बात माननी पड़ेगी।'

उर्मिला के मुँह से अपनी प्रशंसा सुनकर रघुनाथ के चित्त

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में बड़ा आनन्द हुआ। रघुनाथ ने पुलकित होकर कहा—'एक क्या तुम सौ बात कहो तो भी मैं मानूँ। तुम्हारी बात रखने के लिए यदि मुझे अपने प्राण भी देने पड़ें तो भी मुझे उज्र न होगा।'

उ०—'नहीं, नहीं ऐसी कोई बात नहीं है।'

र०—'तो कहो।'

उ०—'अनुसन्धान से मेरी बहन के बारे में जो कुछ तुम्हें खबर मालूम हुई है, उन बातों को जब तक मैं न कहूँ किसी से न कहना।'

र०—'यह तुम निश्चय रक्खो; बिना तुम्हारे कहे मैं किसी से कुछ न कहूँगा।'

उर्मिला ने सिर नीचा करके धीमे-स्वर से कहा—'जो परमेश्वर कभी मेरी सुध लेगा तो इस उपकार का पल्टा—'

इतना कहती हुई उर्मिला चलने को तैयार हुई, परन्तु रघुनाथ के हृदय में न जाने उस समय क्या सूझी कि चट रघुनाथ ने उस की कलाई पकड़ ली। उर्मिला ने भी उसे छुड़ाने का यत्न न किया। उस समय रघुनाथ के सर्वाङ्ग में रोमाँच हो आया और साथही उर्मिला का भी शरीर धीमा-सा काँप उठा। रघनाथ ने उर्मिला का दूसरा भी हाथ थाम लिया और दोनों चित्र लिखे-से कुछ क्षण तक निश्चल ज्यों-के-त्यों खड़े रहे। क्षणभर दोनों के लिए बड़ाही विचित्र समय था। किसी के मुँह से एक शब्द भी न निकला। परन्तु आँखों से आँखों ने और हिये से हिये ने जो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुछ कहना सुनना था कह सुन लिया। कुछ क्षण के उपरान्त रघुनाथ ने कहा—'जो कभी भगवान् हमलोगों का दिन फेरेंगे तो क्या ये बातें स्मरण रहेंगी ।'

लाज से सिर झुकाकर धीमे-धीमे स्वर से वह बोली—'सब स्मरण रहेगा; मरते तक इन उपकारों को मैं नहीं भूलने की, और भूलेगा कौन ? अब तो यह देह आपका है ।'

रघुनाथ ने कहा—'इतना ही यथेष्ट है, समय पड़े पर याद दिलाऊँगा ।'

इतना कहकर रघुनाथ ने उर्मिला का हाथ छोड़ दिया । सतृष्ण नयन से रघुनाथ की ओर देखकर उर्मिला बोली—'देखो उन निपट निर्दयी दुष्टों से जरा अपने को बचाकर काम करना; वे बड़े ही दुष्ट हैं। मैं जन्म की दुखिया हूँ, कभी सुख से भेंट ही न हुई। न जाने परमेश्वर ने अभी भाग में क्या लिखा है ?'

रघुनाथ ने कहा—'तुम मेरे लिए कुछ भी चिन्ता न करो देखोगी तुम्हारे ही पुण्य प्रताप से धर्म की दुहाई दे मैं उन सब दुष्टों को उनके कर्म का फल चखाऊँगा और उनके फन्दे से तुम्हारी बहन को छुड़ा लाऊँगा ।'

इसके उत्तर में कुछ न कह धीरे-धीरे उर्मिला अपने घर की ओर चली। कुछ आगे बढ़ पीछे मुड़कर उसने देखा तो रघुनाथ वहाँ से चला गया था ।

सीटी बजाकर रघुनाथ ने 'वीर' को बुलाया । पूँछ हिलाता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुआ वह अपने प्रभु के पास आया। दोनों बन्धु घोर अँधियारी में उस बीहड़ झाड़ी-जंगल के कुराह से निधड़क अपने अभीष्ट स्थान की ओर जा रहे थे। कुछ क्षण के उपरान्त शीघ्र ही रघुनाथ गोविन्द के अड्डे पर उपस्थित हो किसी एक पहले के जाने हुए पथ से भीतर गया। कुछ आगे बढ़कर द्वार मिला। रघुनाथ ने धीरे से उसमें धक्का दिया। द्वार खुल गया। आगे-आगे कुत्ता और पीछे-पीछे रघुनाथ दोनों उस घर में घुसे। उस घर की चीजों को देख-भालकर रघुनाथ ने अनुमान किया कि यह किसी के सोने का घर है। कुत्ता सब चीजों को सूँघता-सूँघता बाहर आया। साथ ही उसके रघुनाथ भी निकला। धीरे-धीरे घूमता-फिरता कुत्ता उस मकान के अन्दर महल के आँगन में पहुँचा। वहाँ खिड़की-द्वार से जनानी फुलवारी में गया। रघुनाथ भी उसके पीछे-पीछे घूम रहा था।

रात एक पहर बीत चुकी थी, ऐसी घोर अँधियारी छाई थी कि हाथ भर के दूरी की वस्तु पर दृष्टि काम नहीं करती थी। उसी भयानक अँधेरी में से, उसी बीहड़ जंगल में से लालटेन हाथ में लिए रघुनाथ दौड़ता हुआ आगे बढ़ा चला जाता था। गोविन्द के अड्डे से आध कोस की दूरी पर एक टूटी हुई रेशम की कोठी थी। तीस वर्ष से यह कोठी योंही पड़ी हुई थी। गर्मी, बरसात के अनेक झोंके सहते-सहते छत्तें गिर पड़ी थीं; धरने सड़ गई थीं; किवाड़ों के पल्ले गिर पड़े थे; इधर-उधर गिरे हुए मकानों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के ढेर पड़े थे। तात्पर्य वह मकान पूरा खण्डहर हो रहा था। चारों ओर जंगल झाड़ी से घिर रहा था। वह कोठी ऐसी भयानक हो रही थी जिसमें झाड़ी जंगल के सिवा बड़े-बड़े विषधर सर्प आदि ने उनमें अपना घर बना लिया था। जमींदार के मकान में खून होने के दस बर्ष पहले इसी स्थान में चोर बदमाशों का एक भयानक अड्डा था। डकैत डकैती करके और चोर चोरी करके यहाँ ही आकर शरण लिया करते थे। बदमाश डकैतों को गिरफ्तार करने के लिए यहाँ कई बार पुलिस कर्मचारी आ चुके थे; पर वे लोग उन्हें गिरफ्तार न कर सके थे। पुलिस वाले जो इस मकान के अन्दर घुसे थे, उनकी वहीं कब्र बन गई थी। उनमें से कोई भी बाहर न निकला था। अन्त में मजिष्ट्रेट ने एक दम गोरी पल्टन लेकर इस टूटे हुए मकान को घेर लिया और कई एक डकैतों को गिरफ्तार भी किया था। तभी से इस मकान में कोई भी नहीं रहता था। डकैतों का अड्डा उठ गया था। कुत्ते को उस टूटे मकान की ओर जाते देखकर रघुनाथ समझ गया कि बदमाशों ने इस भयानक खण्डहर में पुनः डेरा जमया है। धीरे-धीरे कुत्ता उस खण्डहर के पास जा घ्राण लेता हुआ इधर-उधर घूमता-घूमता एक झाड़ी के पास जाकर 'हुम्-हुम्' शब्द से भूँकने लगा। रघुनाथ ने न जाने उसके कान में क्या कह दिया कि चट उसने भूँकना बन्द कर दिया।

आधीरात बीत चुकी थी। अखण्ड अन्धेरी छा रही थी और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अकेला रघुनाथ उस सूनसान झाड़-झङ्खार-खण्डहर पर खड़ा न जाने क्या सोच रहा था। क्षणकाल के उपरान्त फिर रघुनाथ के मुँह पर प्रसन्नता का चिह्न झलकने लगा। रघुनाथ ने विचारा कि जब कुत्ता वहाँ खड़ा होकर भूँका है, तो अवश्य उस टूटे मकान के अन्दर जाने का कोई गुप्त पथ होगा। परन्तु गुप्त पथ से अन्दर जाने से उसे बदमाशों के फन्दे में फँसना होगा। उस समय अपने बचाव के लिए बहुत कुछ लड़ना-भिड़ना पड़ेगा। उन बदमाशों की संख्या बहुत अधिक है और मैं अकेला हूँ; जो युद्ध में उनसे जीत गया तो उन्हें मारही लूँगा और फिर कामिनी का भी पता लग जायगा और उसका इस सङ्कट से उद्धार भी हो जायगा। और यदि कहीं उन बदमाशों ने मुझे मार लिया तो व्यर्थ मेरे प्राण जायँगे और कामिनी भी जन्म भर उन्हीं के पाले पड़ेगी। जब उनकी संख्या अधिक है, तब जान-बूझकर उनके बीच में जाना अपना प्राण देना है।

जिस समय रघुनाथ इन बातों को विचार रहा था, उस समय उसके मुँह पर उदासी छा रही थी; पर रघुनाथ कभी भी अपने प्राण का भय नहीं करता था; कभी निराश होकर अपने उद्योग को नहीं छोड़ता था। कुछ क्षण के उपरान्त रघुनाथ के चेहरे पर प्रसन्नता के चिह्न दीख पड़े। रघुनाथ ने चित्त में ठान लिया कि चाहे जान रहे या जाय; परन्तु इस खँडहर में घुसकर उन बदमाशों को पकड़ना या उनके भेद खोलना ही सिद्धान्त है। ऐसा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विचार कर उस खँडहर में खोजते-खोजते रघुनाथ को एक टूटा द्वार दीख पड़ा; जिसमें प्रवेश करने का पथ अपनी युक्ति से रघुनाथ ने बनाया और अन्दर पैठ गया।

भीतर जाकर देखा तो ऊपर का खंड गिर पड़ा है। ईंटों का ढेर लगा हुआ है। धरनें गिरी पड़ी हैं; कोई लटक रही हैं, कोई झुक रही हैं। ऐसे भयानक स्थान में जाना कैसा भयप्रद है! परन्तु धन्य रघुनाथ तुम्हारा साहस! रघुनाथ ने कुत्ते को गोद में उठा लिया। उसने भी लड़कों-जैसे पिछले पाँवों से कमर और अगले से गले को लपेटकर पकड़ लिया। उठता-बैठता लेटता-लेटता जहाँ जैसा देखता रघुनाथ टूटे ढेर के अन्दर निःशंक चला जाता था। कुछ आगे जा उसे एक द्वार मिला। वहाँ जाकर रघुनाथ ने कुत्ते को गोद से उतार दिया। आगे-आगे घ्राण लेता हुआ कुत्ता और पीछे-पीछे रघुनाथ उस भयानक घर की कोठरी-कोठरी खोजने लगे। वह इतना बड़ा मकान था जिसकी सब कोठरी एवं दालानों को खोजना सहज न था। और उस घोर अँधकार में ऐसे स्थान में ढूँढ़कर बदमाशों का पता लगाना सहज-सी बात न थी; परंतु रघुनाथ के भाग्य से वह सहज ही हो गया। रघुनाथ को बहुत खोज-खाज न करनी पड़ी। चटपट कुत्ते ने खोजकर बदमाशों के अड्डे का पता लगा लिया। इस बीच में रघुनाथ ने उसको किसी इशारे से समझा दिया था कि वह किसी प्रकार का शब्द न करे। शिकारी बिल्ली के सदृश कुत्ता धीरे-धीरे आगे बढ़ा और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रघुनाथ उसी के पीछे-पीछे चला। कुछ दूर जाकर वह ठिठका और न जाने क्या इशारा किया कि रघुनाथ भी खड़ा हो गया। और कान लगाकर सुना तो पासवाली कोठरी में मनुष्यों के बोल-चाल की आहट लगी।

त्र्योविंश परिच्छेद

कुत्ता और रघुनाथ धीरे-धीरे आगे बढ़े। कुछ दूर जाकर एक प्रदीप की मन्द-सी ज्योति दीख पड़ी। बस, उसी के सीध पर ये दोनों चले। कुछ आगे जाकर रघुनाथ ने एक विचित्र छटा देखी। एक छोटी-सी कोठरी में एक टिटिमाता हुआ प्रदीप बल रहा था। और गोविन्द तथा उसके अड्डेवाला छद्म वेशी दोनों पास ही पास खड़े थे। गोविन्द के हाथ में एक तमञ्चा था। गोविन्द छद्मवेशी की ओर तमञ्चा साधे खड़ा था; और बड़ी कड़ाई और रूखेपन से दपट-दपटकर बोल रहा था। चट रघुनाथ लोटता और धीरे-धीरे घिसकता हुआ उस कोठरी के द्वार पर जा दबककर खड़ा हो उन लोगों की बातचीत सुनने लगा। उन लोगों की बातचीत से विदित हुआ कि छद्मवेशी का नाम श्यामापद है।

श्यामापद से कर्कश स्वर में गोविन्द ने कहा—'तुम्हारे ही लिए मेरी यह दुर्दशा हुई। आज मैं अपना सर्वस्व गँवाकर भिखारी हो गया। मेरा घर-द्वार रहते भी नहीं-सा है। पुलिस के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

डर से दिन-रात प्राण काँपा करता है। जिस धन को हमने बड़े कष्ट से दाँतों का पसीना निकाल उपार्जन किया था; आज वह धन रहते भी मेरा नहीं है। ये सब मेरी क्षति बिना चुकाये आज तुम्हारे प्राण नहीं बचते। मेरी जो कुछ क्षति हुई है इसी घड़ी चुका देना होगा। और नहीं तो मैं आज तुम्हें यमपुरी का रास्ता दिखाता हूँ।'

श्यामा०—'तो तुम क्या चाहते हो?'

गो०—'मैं अपनी नुकसानी चाहता हूँ। जो तुम अपना भला चाहते हो तो अभी इस कागज पर अपना नाम सही कर दो।'

श्यामा०—'भाई! लेन-देन की बात है, रास्ते से करो। यह पिस्तौल हाथ से रक्खो; मिजाज ठण्डा करो; जरा मुझे समझने भी दो, तुम्हारा मतबल क्या है।'

गोविं०—'यह सब फालतू बात रहने दो। अब काम की बातें करो। आज बिना अपना काम किये मैं तुम्हें नहीं छोड़ता और यह पिस्तौल तो तभी रक्खूँगा, जब अपना काम करवा लूँगा। नहीं तो पिस्तौल हाथ से न रक्खूँगा।'

श्यामा०—'क्या तुम्हें मेरे कहे का विश्वास नहीं होता? भले आदमी का जैसा कहना वैसा लिखना। क्या लिख देना बड़ा है?'

गो०—'मुझे तुम्हारे कहे का विश्वास नहीं है; खाली बातों से पेट नहीं भरता। जब तुमारे हाथ में सम्पत्ति आवेगी, तुम बड़े आदमी होगे; तब पहले तो मुझी को बदमाश कह पुलिस में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पकड़ा दोगे। सो यह सब आज मैं एक भी नहीं सुनता। मेरा हिसाब आज चुकता करो। और नहीं तो मेरा सब कुछ गया ही है तो आज तुम्हें भी यहीं समाप्त किये देता हूँ।'

श्यामा०—'अच्छा, तो पहिले उस लड़की को मार डालो। जिस समय उसे मारोगे उसी समय मैं सही कर दूँगा।'

गो०—'भला अब व्यर्थ क्यों उस लड़की की जान लेते हो। यह तो सभी लोग जान गये हैं कि वह मर गई है और इतनेही से तुम्हारा मतलब है।'

श्यामा०—'नहीं, नहीं, मतलब नहीं हुआ। बदमाश रघुनाथ जान गया है कि वह अभी जीती है। वह उस के खोज में लगा है। लड़की को मारनाही पड़ेगा। जब उसकी लाश सब लोग देख लेंगे और बिपिन बाबू उसकी शिनाख्त कर लेंगे तब मेरा मतलब सिद्ध होगा और बिना उसके मरे दिन-रात का खटका लगा रहेगा। खाते-सोते-बैठते धोखाही लगा रहेगा। छिन भर भी चैन न मिलेगा। कहीं कोई जान न जाय—इस खुटके में प्राण टँगा रहेगा।'

गो०—'हाँ, हाँ; मैं तुम्हारा मतलब समझ गया, तुम्हारा यह मतलब है कि जब तक यह जीती रहेगी, तबतक तुम्हें मेरे हाथ में रहना पड़ेगा। सदा मेरे डर से डरना पड़ेगा।'

श्यामा—'अच्छा योंही सही, तुम जो कहो सोई ठीक है। पर बिना उसे मारे मैं तुम्हारे कागज पर सही न करूँगा।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गो०—'पहले सही कर दो, तब तुम्हारा मतलब सिद्ध होगा।'

श्यामा—'कब करोगे।'

गो०—'एक घँटे में।'

श्यामा०—'लाश ?'

गो०—'बिपिन बाबू के घर के सामने फेंक आवेंगे।'

श्यामा—'अच्छा घण्टे भर बाद मैं भी सही कर दूँगा।'

गो०—'अच्छी बात है, पर मुझे दो-चार बातें तुमसे पूछनी हैं। यह तो कहो कि लड़की और उमेश बाबू के मरने से तुम क्योंकर धन-सम्पत्ति के उत्तराधिकारी होगे ? यह अभी भली तरह मेरी समझ में नहीं आया।'

श्यामा०—'बात यह है कि यह सम्पत्ति जिनकी थी, वह मेरे दादा लगते थे; उन्होंने इसके दो भाग किये। आधे का मालिक उमेश को किया और आधा बिपिन बाबू की लड़की को लिख मरे।'

गो०—'तो क्या उमेश तुम्हारा चचेरा भाई है ?'

श्यामा०—'हाँ, उमेश के बाप के चचा (इस धन के मालिक) ने दो-व्याह किये थे। प्रथम विवाहिता के गर्भ से मेरे पिता का जन्म हुआ था।'

गो०—'अच्छा तो तुम्हारे दादा ने तुम्हारे रहते अपने धन का मालिक उमेश और बिपिन बाबू की लड़की को क्यों किया ?'

श्यामा०—'मेरे दादा मेरे पिता की खोटी चाल-चलन से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसे चिढ़ गये थे कि उन्हें अपने घर से निकाल दिया था और अपना उत्तराधिकारी बनाने से भी खारिज किया था।'

गो०—'तो उमेश तुम्हारे चचेरे भाई हैं ?'

श्यामा०—'हाँ, मेरे पिता और उमेश के पिता भाई थे।'

गो०—'अच्छा जो तुम्हारी बात मान ली जावे तो क्या उमेश या बिपिन बाबू यह नहीं जानते कि उमेश के दादा के भाई ने दूसरा व्याह किया था और उसके लड़के-बाले हुए थे ?'

श्यामा०—'जानने की कोई सम्भावना नहीं हैं; क्योंकि मेरे पिता की बदचलनी के कारण उमेश के पिता किसीसे अपना भाई कहकर उनका परिचय नहीं देते थे। विशेष कर उमेश और बिपिन बाबू का यही अनुमान है। थोड़ी ही उम्र में मेरे पिता अविवाहित ही मर गये थे।'

श्यामा०—'भला इतने दिनों के उपरान्त यह तुम क्योंकर प्रमाणित करोगे कि तुम उमेश के ताया के लड़के हो ?'

श्यामा०—'यह तो चुटकी बजाते होता है। यह कितनी बड़ी बात है ? सोचो, उमेश अब तक मर चुका होगा। बैरागियों ने अब तक उसका काम समाप्त कर दिया होगा ! बस, अब उस लड़की को मारना बाकी रह गया है। जहाँ वह कंटक टला कि फिर इतनी बड़ी सम्पत्ति के मालिक हमीं हम तो हैं।'

गोविन्द भी समझता था। उसने पूछा—'लड़की के मरने पर तो बिपिन बाबू ही अपनी कन्या के उत्तराधिकारी होंगे ?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्यामा०—'नहीं नहीं, मैं पहले ही उस 'विल' को चुरा लाया हूँ। जिस रात को बिपिन बाबू को मारने हमलोग उनके मकान पर गये थे, उसी समय तुमलोग उधर रहे और मैंने खोज-खाजकर उस विल को चुरा लिया। अब बिना उसको दिखाये बिपिन बाबू अपनी लड़की के धन के मालिक नहीं हो सकते। बस, फिर मैं ही मालिक हूँ।'

गो०—'क्या बिपिन बाबू को यह मालूम है कि उस धन के एक अधिकारी तुम भी हो ?'

श्यामा०—'मैं जहाँ तक समझता हूँ, वह नहीं जानते। मेरे पिता का व्याह और मेरे जन्म की उन्हें कुछ भी खबर नहीं है।'

गो०—'वह विल तो तुम्हारे ही पास न है ?'

श्यामा०—'हाँ है।'

गो०—'कहाँ है देखें।'

श्यामा०—'पहले उस लड़की को मार आओ। तब विल भी दिखाएँगे और तुम्हारे कागज पर सही भी कर देंगे।'

गो०—'हाँ, एक बात और पूछनी है। जो बिपिन बाबू तुम पर इस बात का दावा करें कि तुमने उनकी लड़की को मार डाला है तो तुम फिर वारिस न हो सकोगे ?'

श्यामा०—'नहीं वह ऐसा नहीं करेंगे।'

गो०—'करेंगे या न करेंगे—यह अभी तुम कैसे कह सकते हो ? तुम पर उनका सन्देह तो हो सकता है।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्यामा०—'नहीं, मुझ पर उनका सन्देह इस लिए न होगा कि पहले तो वह यही नहीं जानते कि मैं भी एक वारिस जीता हूँ; दूसरे इस खून के उपरान्त एक वर्ष तक मैं दिखाई न दूँगा, और न इस दावे की कुछ छेड़-छाड़ ही करूँगा; तो मुझ पर कोई सन्देह कैसे करेगा ?'

गो०—'उः बड़ी बाँधनू बाँधी है !'

श्यामा०—'भाई, एक इतने बड़े धनाढ्य की सम्पत्ति को ले लेना क्या कोई मुँह का ग्रास है ? बड़े-बड़े खेल खेलने पड़ते हैं।'

इस गुप्त रहस्य का पूरा भेद अब रघुनाथ समझा। बदमाशों ने कामिनी को उसी खण्डहर-से मकान के किसी गुप्त स्थान में छिपा रक्खा है। यदि चटपट वह खोज कर न निकाली जायगी तो अवश्य उसके प्राण जायेंगे और इतना किया हुआ श्रम विफल होगा। यह भी रघुनाथ ने सोचा। जिस तरह हो, उसका प्राण तो बचानाही है; पर किस प्रकार बचावें—रघुनाथ यह सोचने लगा। कुछ देर सोच कर रघुनाथ ने यह स्थिर किया कि पहले इन्हीं दोनों पर हमला करना चाहिये; क्योंकि यही दोनों इसमें मुखिया हैं। जो इन्हें मार लेंगे तो फिर औरों को गिरफ़ार करने में विशेष श्रम न होगा। ऐसा सोच दोनों हाथों में दो पिस्तौल ले उस अँधेरे घर में जहाँ टिमटिमाती रोशनी में दोनों खड़े बातें कर रहे थे, रघुनाथ निधड़क यमदूत-सा घुस गया। सहसा वहाँ रघुनाथ को आते देख वे दोनों भौंचक-से इसे देखने लगे। गम्भीर स्वर से रघुनाथ ने कहा—

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

'मैं पुलिस का आदमी हूँ, तुम दोनों को खूनी मान कर मैंने गिरफ़तार किया।'

रघुनाथ की बात सुन गोविंद ने सोचा कि गिरफ़ार होने से लड़ जाना अच्छा होगा; क्योंकि जो रघुनाथ को युद्ध में मार लिया तो सब बातें बन जाएँगी और सदा का खटका मिट जायगा और जो मर भी गये तो कैद के दुःखों से छूट जाएँगे। श्यामापद ने भी उस समय प्राण की आशा छोड़कर युद्ध करना विचारा। दोनों ने एक साथ रघुनाथ को ताक कर गोली चलाई; परन्तु गोली चलने के पूर्वही रघुनाथ चट जमीन पर लेट गया था। गोलियाँ सिर पर से निकल गईं। रघुनाथ की सदा यह प्रतिज्ञा रहा करती थी कि जब तक कोई उसके मारने का उद्योग न करे, तब तक स्वयं उसे न मारे। इस समय आतताई रघुनाथ के मारने के उद्योग में हैं; इसलिए उन शत्रुओं के मारने में रघुनाथ ने भी देरी नहीं की। रघुनाथ ने एकही साथ दोनों को ताक कर गोली चलाई; पर अँधकार के कारण निशाना खाली गया। ज्योंही रघुनाथ दूसरी गोली दागने को हुआ कि दोनों ओर से हाथों में छूरा लेकर दोनों रघुनाथ पर साथही झपटे। तब तो रघुनाथ भी छूरा लेकर उन पर टूटा। इधर गोली का शब्द सुन दूसरे बदमाश जो कहीं छिपे थे, उसी ओर दौड़े। उनके पाँव की आहट रघुनाथ को सुन पड़ी। उस समय धर्म-बल से रघुनाथ के शरीर में न जाने कहाँ का बल आ गया था कि आश्चर्यमय युद्ध करने लगा। धर्म की जय, अधर्म की पराजय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होती है। रघुनाथ के ऊँचे हुए हाथ की उन दोनों पर ऐसी गहरी चोटें बैठी कि दोनों क्षत-विक्षत हो धरती पर गिर पड़े। और उधर अलक्षित भाव से तीसरा आततायी पीछे से रघुनाथ की गर्दन ताक कर ज्योंही तलवार चलायाही चाहता था कि भों-भों शब्द करते हुए कुत्ते ने उसकी नली पकड़ ऐसा झकझोरा कि वह उधर गिरा और इधर रघुनाथ भी चैतन्य हो गया।

चतुर्विंश परिच्छेद

उधर तो कुत्ते ने तीसरे आततायी को गिराया और इधर रघुनाथ ने गोविंद के पेट में छूरा घुसेड़ दिया। गोविंद अपने बड़े परिश्रम की करी हुई कमाई को जहाँ का तहाँ छोड़ दूसरे जन्म के लिए यमपुरी को सिधारा। उधर रघुनाथ ने श्यामापद को भी एकही हाथ में गोविंद का साथी बनाया। आततायियों के साथ युद्ध में जय लाभ करने की कुछ भी सम्भावना न थी। रघुनाथ ने धर्म का पथ लिया था; बस इसी से गोविंद और श्यामापद-जैसे उद्दण्ड बदमाशों को उसने बात की बात में मार गिराया। पीछे फिर कर जो रघुनाथ ने देखा तो तीसरे आततायी के गले में कुत्ते ने ऐसा काटा कि छेद हो गया था और साथही वह भी यमलोक को सिधारा। रघुनाथ चट पट श्यामापद के वस्त्रों को खोजने लगा। शीघ्रही चुराई हुई 'विल' रघुनाथ को एक जेब में से मिली।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसे बड़े यत्न से रघुनाथ ने अपने कपड़ों में रख लिया और फिर खोजने लगा तो एक टुकड़ा किसी साड़ी के आँचल का मिला। उसने उसे कुत्ता के आगे फेंक दिया। कुत्ता ने पहिले तो उसे सूँघा और फिर रघुनाथ का संकेत पाकर वहाँ से बाहर निकल सूँघता-सूँघता आगे बढ़ा और रघुनाथ उसके पीछे-पीछे हो लिया।

रघुनाथ को बहुत दूर न जाना पड़ा। एक-दो रस्सी की दूरी पर जाते ही उसे टिमटिमाता हुआ उजेला दीख पड़ा। चट रघुनाथ बैठ गया और कुत्ता को भी संकेत किया कि वह भी बैठ जाय। अब दोनों पेट के बल चलने लगे। जब रघुनाथ द्वार पर पहुँचा तो देखा कि द्वार में पर्दा पड़ा हुआ है और एक प्रदीप बल रहा है। धीरे से रघुनाथ ने पर्दे में से झाँक कर देखा। एक खटिये पर सामान्य-सा बिछावन बिछा हुआ है; उस पर दो-एक तकिया धरी थीं, उन्हीं के सहारे हाथ पर सिर धरे एक सुकुमारी बालिका अधलेटी-सी बैठी थी, और ठीक उसके सामने एक हाथ में तमंचा और दूसरे में छुरा लिए वही लड़की खड़ी है, जिस पर उर्मिला का धोका हुआ था। बहुत देर तक स्थिर दृष्टि करने से रघुनाथ समझ गया कि जो लेटी हुई है, वही कामिनी है और यह अस्त्र-धारिणी गोविन्द की नृशंस आज्ञा का प्रतिपालन कर रही है। वह गोविन्द की आज्ञा की बाट देख रही थी कि उधर से संकेत हो और इधर कामिनी के प्राण लें। रघुनाथ ने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वह ठीक समय में वहाँ आ पहुँचा और यह उन्हीं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की इच्छा है कि ऐसे मौके पर ला पहुँचाया। पर्दा उठा कर रघुनाथ सहसा वहाँ घुस गया। रघुनाथ को देखते ही वह चिल्ला उठी—'खबरदार, जो अब जरा भी आगे बढ़े कि मैंने गोली मारी'। रघुनाथ ने सोचा क्या आश्चर्य कि वह गोली मार दे। परन्तु रघुनाथ इस बात से डरा नहीं; उसने मुस्कुरा कर कहा—'डरो मत, मैं इनका शत्रु नहीं हूँ, तुम लोगों की रक्षा करने मैं यहाँ आया हूँ'। इतना सुनते ही वह कामिनी के गले से जा लपटी। कामिनी ने चौंककर पूछा—'क्या है बहन ?' उसने कहा अब कोई डर नहीं है। पुलिस का जासूस आ गया।

रघुनाथ ने उस शस्त्रधारिनी से पूछा—'यहाँ कितने बदमाश हैं ?'

उसने कहा—'चार जने।' प्रत्युत्तर सुनकर रघुनाथ को बड़ा ही आनन्द हुआ कि चार जने में से तीन को तो मैं समाप्त कर ही चुका हूँ; रहा एक; सो उसका पता नहीं है।

उन दोनों लड़कियों ने घबरा कर कहा—'तो अब हमलोगों को यहाँ से ले क्यों नहीं चलते ?'

रघु नाथ ने कामिनी की ओर संकेत करके कहा—'क्या तुम पैदल चल सकोगी ?'

इसके उत्तर में उसकी सखी ने कहा—'हाँ, चल सकेंगी ?'

इसके उपरान्त रघुनाथ ने कामिनी से और दो चार बातें की; जिससे उसे मालूम हुआ कि उस शस्त्रधारिणी का नाम निर्मला है। आताइयों के हाथ से निर्मला ने कामिनी के प्राण कई बार बचाये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थे। उस दिन भी उसने इसी लिए अस्त्र धारण किया था कि यदि कोई घातक कामिनी का प्राण लिया चाहे तो यथा सामर्थ्य उसकी रक्षा करेगी।

गोविन्द के अड्डे पर जब निर्मला की कामिनी से प्रथम भेंट हुई थी, उस समय उर्मिला निर्मला की एक-सी सूरत देखकर कामिनी को बड़ा ही विस्मय हुआ था। जब निर्मला ने कामिनी से उर्मिला की बात सुनी तो चट उसे अपना जन्म वृतान्त याद आया और उसे निश्चय हुआ कि उर्मिला उसकी बहन है। उसी क्षण से निर्मला कामिनी से अधिक स्नेह करने लगी। कामिनी ने जो अपने पिता को चिट्ठी लिखी थी, उसमें निर्मला का भी हाल लिखा था; परन्तु बिपिन बाबू को वह चिट्ठी पहुँचने न पाई; बीच में ठगों ने उसे फाड़ डाला था, जिसकी आधी रघनाथ ने लाकर बिपिन बाबू को दिया था।

निर्मला की जीवन कहानी बड़ी ही विचित्र है। जब वह तीन वर्ष की थी, उसी समय एक ठग वैरागी उसे चुरा ले गया था। ठगों ही ने निर्मला को पाला-पोसा था। उन्हीं की संगत में रहकर इसने अनेक प्रकार की धूर्तता सीखी थी। जब श्यामापद ने अपने खोटे मतलब को सिद्ध करना विचारा और ठगों से जा कर मिला और कामिनी को चुराया; उसी समय उन ठगों को बहुत कुछ रुपये देकर वह निर्मला को उनसे ले आया था और उसे कामिनी के पहरे पर रख दिया था। जब कामिनी से निर्मला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने सुना कि वह उर्मिला के मामा की पुत्री है और उर्मिला पर अपनी बहन का धोका-सा हुआ, उसी समय से निर्मला का कामिनी पर बड़ा ही स्नेह हो गया और कई बार उसने उसके प्राण ठगों के हाथ से बचाये थे।

अब रघुनाथ उस यमपुरी सरीखे स्थान में विलम्ब करना उचित न समझा। उन दोनों को लेकर उस खँडहर से निकला और पूर्व कथित जंगल के पथ से उन दोनों को लेकर बिपिन बाबू के मकान पर पहुँचा और बाहर वाली फुलवारी के एक लता-कुञ्ज में उन दोनों को बैठाकर आप बिपिन बाबू के बैठक की ओर गया। बिपिन बाबू, उर्मिला और उमेश बैठे परस्पर कुछ बातचीत कर रहे थे। रघुनाथ को आते देख तीनों आदमी उठकर उसके पास पहुँचे। पर साहस कर किसी ने कुछ भी न पूछा। कुछ क्षण तक सब ही निस्तब्ध रहे। उधर मारे आनन्द के रघुनाथ के भी होठ हिले। अन्त में घबराकर उर्मिला ने पूछा--'कहो क्या खबर लाये ? क्या बहन को उन दुष्टों ने मार डाला ? हाय तुम्हारा इतना परिश्रम व्यर्थ हुआ ?'

इतना सुन रघुनाथ, जो एक दृष्टि से उर्मिला की ओर देख रहा था, बोल उठा—'आज तक तो जितने कामों में मैंने हाथ डाला है, ईश्वरेच्छा से खाली नहीं गया है।'

रघुनाथ से ऐसा सुनते ही बड़े आग्रह से उर्मिला बोली--'तो बताओ क्या समाचार है ? मेरी बहन कहाँ है ? बताते क्यों नहीं ?'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रघुनाथ ने कहा—'चलो दिखा दें, दोनों को फुलवारी में बैठा आया हूँ।'

इतना सुनते ही तीनों के तीनों बेसुध उस ओर दौड़े और वहाँ पहुँचे, जहाँ रघुनाथ कामिनी और निर्मला को बैठा आया था। उस लता-वितान में उस समय मानो आनन्द का समुद्र उमड़ आया। कामिनी दौड़कर बिपिन बाबू के गोद में जा लिपटी। निर्मला ने उर्मिला को छाती से लगा लिया। मारे आनन्द के सभी के कण्ठ रुँध गये। सिवा अश्रुपात के किसी ने किसी से कुछ न कहा। जो कुछ कहा सो हृदय ने हृदय से ही कहा। कहा भी सो ऐसा कहा कि रसना में वह रस कहाँ कि बयान कर सके। जो जिससे लिपटा था, वह उसे छोड़ता न था। मानो रोम-रोम आनंदित हो रहे थे। थोड़ी देर उपरान्त जब हृदय का आवेग कुछ ठहरा, मुँह में बोलने की सामर्थ हुई तो हँसते-हँसते सब लोग घर की ओर चले। कामिनी, उर्मिला, निर्मला, बिपिन बाबू और उमेश मारे आनंद के ऐसी बातों में लगे कि रघुनाथ की किसी को सुध ही न रही। बातों ही में भोर हो गया।

उर्मिला की नाईं निर्मला का हृदय भी निष्कलंक था। उसी के सदृश निर्मला का हृदय भी अनेक गुणों से भूषित था। ठगों के दल में रहने पर भी उसका चरित्र किसी प्रकार के पाप की छाया से छूआ नहीं गया था। इस आश्चर्य को देख लोग बड़े ही चकित हुए। ठगों ने निर्मला से कहा था कि बिपिन बाबू ने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एक जाली विल बनाई है, उस सम्पत्ति के सच्चे उत्तराधिकारियों को वञ्चित कर आपही उस धन के मालिक हुआ चाहते हैं। और अपनी लड़की एवं दामाद को दिया चाहते हैं। इसलिए ठग लोग उद्योग कर रहे हैं कि जिसमें बिपिन बाबू की जालसाजी न चलने पावे। परन्तु जब निर्मला ने कामिनी से सच्ची बातें सुनी, तब उसके नेत्र खुल गये और चित्त से संपूर्ण सन्देह टल गया। और वह अपने मामा की लड़की कामिनी के प्राण बचाने का प्रयत्न प्राणपन से करने लगी। बातें करते-करते जब भोर हो गया, तब सुध आई रघुनाथ की। लगे सब लोग बाहर-भीतर खोजने। बैठक, मकान, एवं फुलवारी सब खोज हारे; कहीं भी रघुनाथ का पता न लगा। न जाने कब रघुनाथ अन्तर्ध्यान हो गया था। किसी को भी उसकी सुध तक न थी। एक सप्ताह बीत गया; पर रघुनाथ की खोज खबर न मिली। बिपिन बाबू ने कमिश्नर साहब को धन्यवाद की चिट्ठी लिखी और उसमें रघुनाथ के कार्यवाही की बड़े धूम-धाम से प्रशंसा की और लिखा कि मैंने जो पाँच हजार रुपया पुरष्कार देने कहा था, वह रघुनाथ को दिया चाहते हैं; कृपा करके रघुनाथ को एकबार मेरे पास भेज दीजिये। वर्द्वान के ठगी-कमिश्नर साहब ने उसके उत्तर में लिखा कि रघुनाथ वर्द्वान में नहीं है, तीन महीने की छुट्टी लेकर चला गया है।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पञ्चविंश परिच्छेद

देखते-देखते और गिनते-गिनते तीन महीने बीत गये; पर रघुनाथ न लौटा। न उसकी कुछ खबर ही मिली। इसी बीच में कामिनी का शुभ परिणय उमेश बाबू से हो गया। नव दम्पति परस्पर अभिमत पति-पत्नी प्राप्तकर नित्य-नित्य नये-नये सुख सम्भोग करने लगे। निर्मला को भी अपनी सहोदरा बहन के मिलने से बड़ाही आनन्द हुआ। हिल-मिल कर दोनों परस्पर में आनन्द से दिन बिताने लगीं। परन्तु बीच-बीच में हँसती-खेलती प्रसन्नवदना उर्मिला के हँसते हुए मुख पर दुःख की झाँई-सी आ जाया करती थी और साथ ही सुख को दुःख ग्रस लेता था। पर क्यों ऐसा होता था; यह वही जानती थी या इस ग्रन्थ के प्रेमी पाठकही जानते होंगे। योंही बीतते-बीतते छः महीने बीत गये। रघुनाथ की कोई खोज खबर न मिली।

एक दिन सन्ध्या के समय उर्मिला अकेली फुलवारी में घूम रही थी और न जाने क्या-क्या मन-ही-मन सोच रही थी। उस समय प्रकृति की विचित्र कमनीय शोभा बन रही थी। मन्द-मन्द शीतल सुगन्ध वायु का सञ्चार, वृक्षों की शाखा और पत्तों से झरती हुई चाँदनी की बहार, पूर्ण चन्द्र का प्रकाश, और सरोवर में कुमुदिनी का सहास विकास; विरही की कौन कहे संयोगी के चित्त को भी उत्कण्ठित किये डालती थी। ऐसे समय में एक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लता-वितान के सन्मुख ज्योंही उर्मिला पहुँची कि उसके अन्दर से चट एक मनुष्य निकल आया। साधारण स्त्रियाँ जैसी स्वभावतः भीरु हुआ करती हैं, उर्मिला वैसी न थी। न तो वह चिल्लाही उठी और न वहाँ से जी छुड़ाकर भागी। उस खिलती हुई चाँदनी में उसने देखा कि सिपाहियाना पोशाक पहने एक पुरुष खड़ा है। टकटकी बाँध कर उर्मिला उसकी ओर देखने लगी। देखते ही वह पहचान गई कि यह तो वही रघुनाथ है। उस समय रघुनाथ पुलिस की पिशाची मूर्त्ति में न था; अच्छी सुन्दर सुहावनी पोशाक पहने हुआ था। उसे देख उर्मिला के रोमाञ्च हो आये; आँखें डबडबा आईं। पहिले तो वह दृष्टि गड़ा कर रघुनाथ की ओर निहारती रही; परन्तु ज्योंही वह उसके निकट आया और उसने पहचाना; साथही लज्जा और सङ्कोच से वह सहम-सी गई। और अपने वस्त्र को सँभाल नीची दृष्टि कर पुतली-सी खड़ी रह गई।

रघुनाथ ने मधुर गम्भीर स्वर से कहा—'तुम्हे स्मरण होगा कि किसी दिन मेरे ऋण चुकाने की तुमने प्रतिज्ञा की थी, सो आज तुमसे वह प्रतिज्ञा पूरी करवाने आया हूँ; कहो अब क्या कहती हो?'

उ०—'वाह, भले तुम उसदिन छिपकर चले गए? मामा ढूँढ़ते-ढूँढ़ते हार गये। उस दिन से नित्य तुम्हें याद किया करते हैं। हमने तो समझा था कि अपने घर जाकर हम लोगों को भूल-भाल गये होंगे, पर बड़े भाग्य! देखती हूँ, पिछली बातें याद हैं! मामा तुम्हारा पता लगाने वाले को पुरष्कार घोषित किये हैं।'

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र०—'मुझे तुम्हारे मामा के पुरष्कार की चाह नहीं है। मैं तो केवल तुम्हारी प्रतिज्ञा पालन को ही जानता हूँ। तुम्हारे मामा बड़े धनीपात्र हैं; तुम उनकी भानजी हो; मैं एक गरीब सिपाही। भला, फिर क्योंकर मुझे स्वीकार करोगी? मैं तो तुम्हारे प्रेम का भिखारी हूँ, तुम्हारे प्रेम का प्यासा हूँ। तुम्हारे प्रेम के सिवा मुझे इस जगत में और किसी से चाह नहीं है।'

रघुनाथ के कहने का उर्मिला बार-बार उत्तर देने का प्रयास करती थी; परन्तु शील-सङ्कोच से उसका कण्ठ रुँध गया। बोला चाहती थी; परन्तु नीचा सिर कर आँचर का एक कोना उमेठ कर रह जाती थी। न मुँह से शब्द निकलता था और न नेत्र सामने होते थे। रघुनाथ, वीर रघुनाथ जो काल से भी निडर रहता था, उस समय चाहता था कि आगे बढ़कर उर्मिला को हृदय से लगा लें; परन्तु न जाने वह कौन-सी बात थी जिसके आतङ्क से उसका सारा शरीर थरथराता था और एक डग आगे पाँव बढ़ाने का साहस नहीं होता था। बड़े-बड़े वीर विकराल आताताइयों के झुण्ड में निशंक रघुनाथ पैठकर अकेले खड़ा रहा करता था; परन्तु कुसुम विनिन्दित कोमल कमनीय रमणी के आगे आज ऐसी अवस्था को प्राप्त है। यह प्रेम का प्रताप और अनुराग का आतंक है। दोनों की ऐसी अवस्था देख दोनों के नेत्रों ने परस्पर में ऐसे कटाक्ष के घात-प्रतिघात किये कि दोनों के हृद्गत-भाव दोनों के हृदय में प्रवेश कर गये।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रघुनाथ बोला—'तुमने अपनी प्रतिज्ञा का पूरा प्रतिपालन किया, अब मुझे दृढ़ निश्चय हो गया कि तुम हमारी हो चुकी हो। अब यदि परमेश्वर की इच्छा हुई और मैं लौटकर आया तो अवश्य पाणिग्रहण करूँगा; यों तो कभी न आऊँगा। जैसा मैंने तुम्हें निज हृदय-सिंहासन पर बैठाया है, वैसे ही यदि राज-सिंहसान पर बैठा राजरानी बना सकूँगा तो लौटूँगा, नहीं तो न लौटूँगा। इतना कहते-कहते रघुनाथ का कण्ठ रुँध आया और वह कुछ कहता-कहता चुप हो रहा। कुछ क्षण ठहर रघुनाथ ने कहा—'लो अब जाता हूँ, याद रखना भूलना मत।'

नेत्र पोछती-पोछती उर्मिला ने कहा—'किसे भूलूँगी, अपने को ? आप को क्योंकर भूलूँगी ? मुझे तुम्हारे धन दौलत की चाह नहीं है, केवल मैं.........'

इसके आगे उर्मिला कुछ कहा ही चाहती थी कि रघुनाथ वहाँ से चल दिया। बहुत देर तक उर्मिला देखती रही कि कदाचित् रघुनाथ पीछे मुड़कर देखे, पर सीधा वह चला ही गया। तब विवश उर्मिला भी आँचल से नेत्र पोंछती हुई अपने घर की ओर चली। कुछ आगे जाकर पीछे फिर कर निहारने लगी कि कदाचित् रघुनाथ ठहरे हैं या देख तो नहीं रहे हैं। जब रघुनाथ की मूर्ति उसके नेत्रों से न देख पड़ी, तब सीधी वह अपने घर को चली गई। घर जाकर उसने किसी से भी यह समाचार न कहा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उपसंहार

इसी समय अवध की राजधानी को ईस्ट इण्डिया कंपनी के शासनाधीन में लाने की आवश्यकता हुई। इसके पहले जिस सेनापति के आधीन रघुनाथ ने पल्टन में काम किया था, उसका नाम जेनरल आउटराम था। उसी को इस कार्य-साधन का भार अर्पण हुआ था। वह जानता था कि रघुनाथ हिन्दी, फारसी, अरबी, बङ्गला आदि अनेक भाषाओं को भली प्रकार जानता है। अवध के शासन-भार-ग्रहण-सम्बन्ध में रघुनाथ-जैसे न्यायी एवं सुचतुर सहकारी के द्वारा विशेष सहायता की सम्भावना कर आउटराम बहादुर ने निज आधीन सेना दल का उसे 'हवलदार मेजर' बना दिया। साहब के आदेश से रघुनाथ अवध की राजधानी लखनऊ में पहुँचा। रघुनाथ की सलाह के अनुसार कार्य करने पर जेनरल बहादुर थोड़े ही दिनों में अवध देश को इस्ट इण्डियन कम्पनी के शासनाधीन में ले आये। इस दुरूह कार्य साधन में रघुनाथ ने विशेष दक्षता दर्शायी थी। इसके पहले पञ्जाब के युद्ध में भी बड़ी बहादुरी दिखलाई थी। अपने प्राण को तिनका समान समझ अंगरेज वीरों के प्राण बचाये थे। इत्यादि बातों का उल्लेख कर जेनरल आउटराम ने बड़े लाट साहब को एक लम्बी-चौड़ी शिफारसी चिट्ठी लिखी। जिसका प्रतिफल यह हुआ कि लाट साहब ने रघुनाथ को खैरख्वाही में रायबहादुर की उपाधि और खिलअत भेजी।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लखनऊ के लूट में रघुनाथ के हाथ लाखों का धन लगा। कहते हैं कि रघुनाथ ने एक करोड़ रुपया उपार्जन किया था। जब रघुनाथ लखनऊ से लौटकर कलकत्ते गया, तब बड़े लाट साहब बहादुर ने उसे अपने शरीर-रक्षा सेना दल (बॉड़ी गार्ड) का सूबेदार मेजर नियत किया। कुछ दिन के उपरांत उसे अन्यतम एडीकांग के पद पर नियुक्त किया। पूर्व परिचित राबर्ट रघुनाथ अब पुलिस जासूस नहीं रह गया। अब वह 'सुविख्यात सूबेदार मेजर राय रघुनाथ बहादुर, ए० डी० सी०' हो गया। रघुनाथ का भाग्य उत्कर्ष पर था। दिनों-दिन रघुनाथ को नये-नये सम्मान और पद मिलने लगे।

लाट साहब डलहौजी ने विलायत में इस्ट इण्डिया कम्पनी को रघुनाथ के खैरख्त्राही के बारे में बहुत कुछ शिफारिश लिख भेजा था। जिसके उत्तर में वहाँ से 'राजा बहादुर' का खिताब और हुगली में बारह हजार रुपये साल के आमदनी की जागीर दी गई। राजा रघुनाथ बहादुर ने हुगली में महल, धर्मशाला, बाग, बावली आदि बहुत कुछ बनवाया। धीरे-धीरे दो तीन वर्ष में रघुनाथ बङ्गाल का एक विख्यात जमींदार हो गया।

रघुनाथ जिस दिन उर्मिला से बिदा होकर आए थे, उसके चार बर्ष के उपरान्त आज विपिन बाबू के मकान पर बड़ी धूम-धाम मची है। चारों ओर से बाहर-भीतर मकान मांगलिक साजों से खूब सज रहा है। द्वार पर नौबत झड़ रही है, गंधर्विनें गा रही हैं,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्त्री-पुरुषों की भीड़भाड़ हो रही है, तोरन बंदनवार, कदली-खम्भ, पूर्ण घट आदि द्वार पर सजे हैं। आँगन में चँदवा तना हुआ है। अनेक प्रकार के काँच के झाड़-फानूस जगमगा रहे हैं। रंग-बिरंगे वस्त्र पहने आनन्द मग्न दास-दासी इधर-उधर दौड़ रही हैं। प्रसन्नता पूर्ण सब ही निज-निज कार्य में व्यस्त हो रहे हैं। उधर बाग में खेमे और डेरों की कतार खड़ी है जिसमें अनेक साहब, मेम लोगों की चहल-पहल हो रही है। धर्मशाला और ठाकुरद्वारे में भक्तों का कोलाहल हो रहा है। अन्दर महल में स्त्रियों के गान का मधुर शब्द हो रहा है। अर्थात् आज बिपिन बाबू के यहाँ मानो आनन्द का समुद्र उमड़ रहा है। बड़े उमङ्ग और उत्साह से बिपिन बाबू अपनी भानजी का विवाह राजा रघुनाथ प्रसाद के साथ करने वाले हैं। सन्ध्या के पहले ही ठीक गोधूली के समय बड़े समारोह से बारात द्वार पर लगी। कुल-रीति के अनुसार द्वार-पूजन आदि होकर शुभ लग्न में विवाह राजा रघुनाथ बहादुर के साथ हुआ। इस शुभ मिलन को देख कामिनी आदि सब लोगों का चित्त आनन्द-सागर में निमग्न होने लगा। चारों ओर आनन्द ही की ध्वनि सुन पड़ती थी। ब्राह्मण, भाट, और मङ्गलामुखीगण उच्च स्वर से जय-जयकार रहे थे।

॥ इति ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Y-3

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents from the Chambal Archives Collection in Etawah, UP

The Archive was collected over a lifetime through the efforts of Shri Krishna Porwal ji (b. 27 July 1951) s/o Shri Jamuna Prasad, Hindi Poet. Archivist and Knowledge Aficianado

The Archives contains around 80,000 books including old newspapers and pre-Independence Journals predominantly in Hindi and Urdu.

Several Books are from the 17th Century. Atleast two manuscripts are also in the Archives - 1786 Copy of Rama Charit Manas and another Bengali Manuscript.Also included are antique painitings, antique maps, coins, and stamps from all over the World.

Chambal Archives also has old cameras, typewriters, TVs, VCR/VCPs, Video Cassettes, Lanterns and several other Cultural and Technological Paraphernelia

Collectors and Art/Literature Lovers can contact him if they wish through his facebook page

Scanning and uploading by eGangotri Digital
Preservation Trust and Sarayu Trust Foundation.